# प्रकाशितवाक्य
## (Revelation)

**१**,१ **यीशु** मसीह का अलौकिक ज्ञान, जिसे स्वर्गिक पिता ने उन्हें (यीशु को) इसलिए दिया कि, अपने सहकर्मियों
(शिष्यों) को वे बातें दिखाएँ जो जल्द ही अचानक होनेवाली हैं। उन्होंने अपना स्वर्गदूत भेजकर इन्हें अपने सहकर्मी
२ यूहन्ना को बताया, **जिसने** स्वर्गिक पिता के जिस वचन को सुना और यीशु मसीह के बारे में जो कुछ देखा उसके
३ बारे में गवाही दी। **आशीषित** वह इन्सान है जो इन भविष्यद्वाणी की बातों को पढ़ता, सुनता और मानता है,
४ क्योंकि ये बातें जल्द ही पूरी होनेवाली हैं। **यूहन्ना** की ओर से तुम्हें एशिया की सात मण्डलियों को, स्वर्गिक
पिता जो थे, जो हैं, और जो आनेवाले हैं तथा उन सात आत्माओं की तरफ से जो उनके सिंहासन के सामने
५ हैं, तुम पर कृपा और शान्ति हो। **साथ** ही ये बातें तुम्हें यीशु मसीह से मिलें जो उन भविष्यद्वाणी की बातों के

---

१:१ **''अलौकिक ज्ञान'**- यह किताब इन्सान के दिमाग की उपज नहीं है । यह स्वर्ग से एक ईनाम है। इसको देनेवाले खुद परमेश्वर हैं। यूहन्ना ने प्रतीकों, तस्वीरों और शब्दों को किसी और किताब से नहीं लिया था। यीशु मसीह ही ने उन सब बातों को उसे दिखाया था।

**''दिखाएँ''** - परमेश्वर ने भविष्य को छिपाने के लिए नहीं, लेकिन दिखाने के लिए यह किताब दी थी। यह हमें उलझन में डालने के लिए नहीं दी गयी, लेकिन इसलिए कि हम समझदार बनें।

**''सहकर्मी''**- रोमि ६:१७-२२ में, पौलुस कहता है कि यीशु में सभी सच्चे विश्वासी परमेश्वर के सहकर्मी हैं। यूनानी भाषा में इस शब्द का मतलब गुलाम भी है।

**''जल्द ही''** - इसका मतलब यह नहीं कि इसमें लिखी बातें यूहन्ना के समय या उसके बाद होनेवाली थीं, या उनका पूरा होना शुरू हो गया था। तुलना करें २२:७,१२,२०, यीशु ने तीन बार कहा था कि वह जल्दी आनेवाले हैं। लोगों के तीन मत हैं:

परमेश्वर के विचार से इस शब्द का मतलब है ''जल्दी'' (२ पत ३:८; भजन ९०:४ के नोट्स देखें)। या यूनानी शब्द ''जल्दी'' का मतलब ''अचानक'' हो सकता है। एक बार जब उनकी शुरूआत हो जाती है वे जल्दी-जल्दी घटने लगती हैं -१ थिस्सु ५:२) या दर्शन में यूहन्ना दुनिया के अन्त को देख रहा था - उस नज़रिए से घटनाएँ जल्दी घट रही थीं या ''जल्दी'' यह शब्द उन बातों को दिखाता है, जो बातें इस किताब में लिखी हैं और जल्दी होनेवाली हैं। वे बातें कभी भी शुरू हो सकती हैं, इसलिए हर युग के लोगों को यीशु के आने के लिए तैयार रहना चाहिए। (मत्ती २४:३६,४२-४४)

**''बताया''**-तमाम तरीकों से दिखाना।

**''स्वर्गदूत''**-इस किताब में स्वर्गदूत या स्वर्गदूतों शब्द अस्सी बार आया है। यह शब्द बाईबल में ३०० बार आया है। ये आत्मिक प्राणी हैं । इन्सान उन्हें देख नहीं सकता है । लेकिन वे देह में प्रगट हो सकते हैं । इनकी संख्या अनगिनित है ५:११।

१:२ ''वचन'' और ''यीशु मसीह के बारे....में गवाही'' - इसी किताब की तरफ इशारा है । प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के आखिरी बड़े नबी थे - व्यवस्था १८:१८,१९; मत्ती १:१; यूहन्ना ७:१६; इब्रा १:२ । इस किताब में वह अपनी सेवकाई को जारी रखते हैं, जिसे उन्होंने शुरू किया था ।

१:३ **''आशीषित''** -आशीर्वाद वे लोग पाते हैं, जो पढ़ते और मानते हैं । सिर्फ इसलिए पढ़ना कि हमें कुछ अजीब सच्चाइयाँ मालूम हो जाएँ, इसका कोई फायदा नहीं है, उन्हें अपने जीवन में लागू करना ज़रूरी है । ''आशीष'' पर उत्पत्ति १२:१-३, गिनती ६:२२-२७; भजन १:१-३; मत्ती ५:३:१०; के नोट्स देखें ।

**''भविष्यद्वाणी''**-१९:१०;२२:७,१०,१८,१९ न्यू टेस्टामैन्ट में सिर्फ इसी किताब को भविष्यद्वाणी की किताब कहा गया है, हालाँकि हर एक किताब पवित्रात्मा से प्रेरित है ।

**''जल्द ही पूरी होनेवाली''** - तुलना करें २२:१०; रोमि १३:१२; मत्ती २४:२३; १पत ४:७; योएल १:१५ ।

१:४ **''यूहन्ना''**-परिचय देखें ।

**''सात मण्डलियाँ''**-पद ११ । एशिया प्रान्त में सात मण्डलियों से ज़्यादा मण्डलियाँ थीं । लेकिन एशिया की और दुनिया की सभी मण्डलियों की हालत इन्हीं में से किसी न किसी की है - पद २० पर नोट्स ।

**''एशिया''** -प्रेरित १६:६ के नोट्स देखें ।

**''कृपा और शान्ति''**- रोमि १:७ आदि । यहाँ यूहन्ना बताता है कि त्रिएक परमेश्वर से कृपा और शान्ति मिलती है मत्ती ३:१६,१७ आदि।

**''जो हैं और जो आनेवाले हैं''** -का मतलब है पिता परमेश्वर ।

**''सात आत्माएँ''** - ३:१; ४:५; ५:६। ये सात आत्माएँ ईश्वरीय आशीष वचन में पिता और पुत्र से जुड़ी हैं और कृपा एवं

सच्चे गवाह, मरे हुओं से जी उठनेवालों में पहिलौठे, तथा पृथ्वी के सभी शासकों के प्रधान हैं। वह हम से प्रेम करते
६ हैं और उन्होंने अपने खून से हमें गुनाहों से आज़ाद किया, **हमें** राजा और अपने स्वर्गिक पिता के लिए याजक
७ बनाया, उनकी शान हमेशा बनी रहे। उनका शासन सदा काल का है आमेन । **देखो!** वह बादलों के साथ आ
रहे हैं। हर एक आँख उन्हें देखेगी, यहाँ तक कि वे लोग भी जिन्होंने उन्हें मार डाला था। दुनिया के सभी लोग
८ बिलख-बिलख कर रोएँगे। हाँ, ऐसा ही होगा। **स्वामी** परमेश्वर, जो हैं, जो थे, जो आनेवाले हैं और जो सर्वशक्तिमान
९ हैं, यह कहते हैं, "मैं पहला और आखिरी हूँ"। **मैं** यूहन्ना तुम्हारा भाई यीशु मसीह की वजह से दुख, और धीरज
में तुम्हारे साथ भागीदार हूँ। मैं पतमुस नामक टापू में परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही देने की वजह
१० से कैदी था। **मैं** सप्ताह के पहले दिन आत्मा में आ गया और मैंने तुरही की आवाज़ के समान एक बड़ा शब्द

---

शान्ति का स्त्रोत हैं (तुलना करें २ कुरि. १३:१४; मत्ती २८:१९) । इसलिए वे पवित्र आत्मा की तरफ इशारा हैं । (यूहन्ना १४:१६,१७)। इस किताब में सात, पूर्णता, भरपूरी आदि को दिखाता है (११,१२,१६,२०; ४:५;५:१,६; ८:२; १०:३; १२:३; १३:१; १५:१७ से तुलना करें ।

१:५ **"तुम्हें यीशु मसीह से"**-यीशु परमेश्वर के सदाकाल का बेटा । यहाँ उन्हें तीन नाम दिए गए हैं ।

**"सच्चे गवाह"**- एक गवाह वह है जो सच्चाई जानता है और दिखाता है । विश्वसनीय जन सच्चाई को तोड़ता मरोड़ता नहीं है । जो बताने लायक है, उसे छिपाता नहीं है । हमें जो कुछ जानना ज़रूरी है, प्रभु बताते हैं ।

"मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठे" यह आदर का नाम है जो हमेशा के जीवन और शक्तिमान होने को दिखाता है। (कुलु १:१८; भजन ८९:२७)। मसीह मरे हुओं में से जी उठे हैं (मत्ती २८:६; १कुरू १५:१-८) । जितने भी जिलाए जाएँगे, उन सब में वे सब से ऊँचे पद पर हैं ।(फिलि २:९-११) ।

**"पृथ्वी के सभी शासकों के प्रधान"**-१९:१६ नीति २१:१; दानिय्येल ४:३४,३५; ५:२१ । इस किताब की घटनाओं के बारे में पृथ्वी के राजा सोचेंगे कि वे सभी उनके वश में हैं । लेकिन सच पूछा जाए तो वे सभी न दिखनेवाले शासक यीशु मसीह के वश में होंगी । देखें यूहन्ना १७:२; मत्ती २८:१८ ।

**"प्रेम करते हैं"** - रोमि ५:८; ८:३७; गल २:२०; इफि ३:१८,१९; ५:२। कुछ यूनानी पाण्डुलिपियों में क्रिया का वर्तमान रूप है ।

**"आज़ाद किया"** - १कुरि. ६:११; १ यूहन्ना१:७।

**"खून"** - मत्ती २६:२८; रोमि ३:२५, इब्रा. ९:१२;१०:१९ ।

१:६ **"राजा"** - २:२६,२७; ३:२१;२०:४; २ तिमो २:१२; मत्ती १९:२८:३० ।

**"याजक"** - ५:१०; ७:१५; १ पत २:५,९ ।

**"उनकी शान बनी रहे"** -देखें यूहन्ना १२:२८; रोमि ११:३६; १६:२७; यहूदा २५ ।

**"आमेन"** -यह इब्रानी में शब्द 'सच' के लिए है और इसका मतलब है "ऐसा ही हो " ।

१:७ यूहन्ना इस किताब के मुख्य विषय की घोषणा करता है -२:२५;३:३,११;११:१५;१४:१४-१६;१६:१५,१७:१४;१९:११;२२:७,१२,२० ।

**"वह आ रहे हैं"** - मत्ती १६:२७; यूहन्ना १४:३; प्रेरित १:११ आदि ।

**"बादल"** - दानि. ७:१३; मत्ती २४:३०; २६:६४; १ थिस्सु ४:१६,१७ ।

**"मार डाला था"** - यूहन्ना १९:३४,३७; भजन २२:१६; ज़कर्याह १२:१० ।

१:८ **"पहला और आखिरी"** - यह प्रभु परमेश्वर बोलते हैं । २२:१३ में यीशु मसीह इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करते हैं । दूसरे शब्दों में यह कि वे जानते थे कि वह परमेश्वर हैं । परमेश्वर शुरूआत हैं, वही आखिरी हैं । रोमि ११:३६ और यशा. ४४:६ से तुलना करें ।

१:९ इस दुनिया में यीशु मसीह के राज्य के आने के साथ क्या-क्या होगा ।

**"दु:ख"** - २:९,१०; ७:१४; मत्ती ५:१०, यूहन्ना १६:३३; प्रेरित १४:२२; रोमि ८:१७; १ पत. ४:१,१२ ।

**"धीरज"** - २:२,३,१९,३:१०,१३:१०,१४:१२; रोमि ५:३,४; कुरि. १:६; इफि २:१२; इब्रा ६:१२; १०:२६; याकूब १:३ ।

**"पतमुस"**- आज के तुर्किस्तान के समुद्री तट के पास एक टापू है । यह इफिसुस के दक्षिण पश्चिम में ८० कि.मी की दूरी पर है । साफ ज़ाहिर है कि रोमी अधिकारियों ने यीशु का संदेश दिए जाने के आरोप में यूहन्ना को वहाँ 'काले पानी' की सज़ा दी थी ।

१:१० **"आत्मा में"** - ४:२; १७:३; २१:१० । परमेश्वर के आत्मा ने एक बहुत अद्वितीय दर्शन का आत्मिक अनुभव दिया जो भविष्य की अनदेखी बातों का था । यहेज १:१; दानि. ८:१; प्रेरित १०:१०,११ ।

११ सुना। **वह** यह कि जो कुछ तुम देखते हो, उसे किताब में लिखकर सातों मण्डलियों -इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन,
१२ थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदीकिया को भेज दो। **तब** मैंने पलट कर बोलने वाले को देखना चाहा।
१३ जैसे ही मैं मुड़ा, मैंने सोने के सात दीपदानों को देखा। **उन** दीपदानों के बीच मैंने 'मनुष्य के पुत्र' को देखा,
१४ जो पैरों तक चोगा पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बाँधे हुए थे। **उनका** सिर और बाल सफेद बर्फ और
१५ ऊन की तरह थे। उनकी आँखे आग की लपटों की तरह थीं। **उनके** पैर भट्टी में तपाकर चमकाए हुए पीतल
१६ की तरह थे। उनकी आवाज़ महासागर की लहरों की तरह थी। वह **अपने** दाहिने हाथ में सात तारों को लिए
हुए थे और उनके मुँह से दोधारी तेज़ तलवार निकल रही थी। उनका चेहरा दोपहर के सूरज की तरह चमक
१७ रहा था। **जब** मैंने उन्हें देखा तो मुर्दे की तरह उनके पैरों पर गिर पड़ा। तब उन्होंने अपना दाहिना हाथ मेरे
१८ ऊपर रखा और कहा, ''डरो मत, मैं ही पहला और आखिरी और ज़िन्दा हूँ। **मैं** मर गया था, लेकिन अब हमेशा
१९ हमेशा तक ज़िन्दा हूँ। मौत और अधोलोक की चाभियाँ मेरे पास हैं। **इसलिए** जो बातें तुमने देखी हैं, जो बातें
हो रही हैं और जो इसके बाद होनेवाली हैं, उन सभी को लिख लो। अर्थात उन सात तारों का मतलब जो
२० तुमने मेरे दाहिने हाथ में देखे थे और **उन** सात दीपदानों का मतलबः वे सात तारे सातों मण्डलियों के दूत हैं,

---

**''सप्ताह के पहले दिन''** - रविवार सप्ताह का पहला दिन जब यीशु जी उठे थे - मत्ती २८:१-६ ।

१:११ **''सात''** - पद ४ के नोट्स को देखें ।

१:१२ **''सोने के दीपदान''** - सात मण्डलियों के लिए सही शब्द (पद २०, मत्ती ५:१४) । तुलना करें निर्गम.२५:३१-४० ।

१:१३ **''मनुष्य का पुत्र''** - दानि. ७:१३; मत्ती ८:३० ।

**''आग की लपट''** - २:१८; १९:१२, दानि १०:७ - एक व्यक्ति की आँखों से बहुत कुछ जाना जा सकता है । यहाँ यीशु की आँखें उनके पवित्र चरित्र और दूसरों को परखने की शक्ति को दिखाती हैं ।

१:१५ **''पीतल''**- दानि. १०:६ । जो पैर मण्डलियों के बीच चलते फिरते दिखते हैं, वे शुद्धता से भरे हैं ।

**''आवाज़ महासागर की लहरों''**- यहेज ४३:२ । मसीह की आवाज़ इस्राएल के परमेश्वर की आवाज़ है, जिसका मुकाबला नहीं किया जा सकता है (भजन २९:३-१० से तुलना करें)

१:१६ **''सात तारे''** - पद २० के नोट्स ।

**''तलवार''** -२:१२,१६; १९:१५,२१ - यह परमेश्वर के वचन को दिखाता है (इब्रा ४:१२; इफि. ६:१७)। यह आक्रमण करने को दिखाता है । यीशु मसीह के बोलते ही इन्साफ होता है ।

**''सूरज''**-मत्ती १७:२ । यह मसीह की शान को दिखाता है । वह परमेश्वर की शान की चमक है (इब्रा १:३; २कुरि.४:६)। इसी रोशनी ने पौलुस को अन्धा कर दिया था (प्रेरित ९:३,८,९; २२:११) ।

१:१७ **''पैरों पर''** -तुलना करें यहेज १:२८ ।

**''डरो मत''** मत्ती १७:७,१४:२७ ।

**''पहला और आखरी''** केवल परमेश्वर ही यह कह सकते हैं । पद ८, यश ४४:६; ४८:१२,१३ ।

१:१८ **''मैं ज़िन्दा हूँ''** - परमेश्वर की तरफ इशारा (भजन ४२:२, यिर्म.१०:१०; मत्ती १६:१६, २कुरि.६:१६; १थिस्स.१:९; तुलना करें यूहन्ना ८:२४,५८) । यीशु यहाँ कहते हैं, मैं ही वह हूँ ।

**''मर गया था''** - मत्ती २७:५०, मरकुस १५:४४,४५, १ कुरि १५:३ ।

**''हमेशा तक ज़िन्दा हूँ''** - ४:१९; मत्ती २८:७; प्रेरित १:३; रोमि ७:९,१० ।

**''मौत और अधोलोक की चाभियाँ''**- मरे हुओं के इलाके पर मसीह को पूरा अधिकार है और किसी को नहीं । लूका १७:२३ में यूनानी शब्द अधोलोक के बारे में देखें ।

१:१९ यूहन्ना का लेख तीन हिस्सों में है ।

**''जो बातें तुमने देखी हैं''** - इस अध्याय में मसीह का दर्शन ।

**''जो बाते हो रहीं हैं''**- जो सात मण्डलियों की हालत थी (२ और ३ अध्याय) ।

**''जो इसके बाद होने वाली हैं''**- - ४:१-२२:५ ।

१:२० **''मतलब''**- परमेश्वर द्वारा प्रगट किया गया सच जिसे इन्सान अपने आप नहीं समझ सकता ।

**''दूत''** - इस यूनानी शब्द का मतलब ''खबर देनेवाला'' (मरकुस १:२; लूका ७:२४; ९:५२) । यहाँ (और २:१,८,१२,१८;३:१,७,१४)

**२**,१ और वे सात दीपदान सात मण्डलियाँ हैं । **इफिसुस** की मण्डली के संदेशवाहक को यह लिखोः वह जो अपने
२ दाहिने हाथ में सात तारे लिए है और वह जो सात सोने के दीपदानों के बीच चलते-फिरते हैं, यह कहते हैं: **'मैं**
तुम्हारे कामों, मेहनत और धीरज को जानता हूँ। यह भी कि तुम दुष्टों को सहन नहीं करते। तुमने उन लोगों को
३ परखा और झूठा पाया है जो प्रेरित होने का दावा करते हैं, लेकिन हैं नहीं। **तुम** में धीरज रखने की ताकत
४ है और तुम मेरे नाम के लिए दुख सहते-सहते निराश नहीं हो गए। **लेकिन** मुझे तुम्हारे खिलाफ यह शिकायत
५ है कि तुमने अपना पहला प्यार छोड़ दिया है। **इसलिए** याद करो कि तुम अपने पहले प्यार से कितनी दूर चले
गए हो। और मन बदलो और पहले की तरह काम करो - नहीं तो मैं तुम्हारे पास आऊँगा। अगर तुम मन न बदलो

---

में मतलब शायद यह है, हे संदेश देनेवाले, जिनसे यीशु बोलते हैं । वे मण्डलियों के लिए ज़िम्मेदार लोग हैं ।

**"सात मण्डलियाँ"**-पद ४,११ । यूहन्ना के दिनों में ये ऐतिहासिक मण्डलियाँ थीं । इन्हें अध्याय २ और ३ के संदेश कीज़रूरत थी । लेकिन यह संदेश सभी युगों की मण्डलियों के लिए था । सात नम्बर पर ध्यान दें । जिस तरह से सात आत्माएँ परमेश्वर के एक आत्मा की तरफ इशारा हैं (पद ४), इसी तरह सात मण्डलियाँ दुनिया में एक मण्डली को दिखाती हैं । दीपदानों के बीच में यीशु के हाथ में सात तारे भी यही दिखाते हैं । क्या मसीह के हाथों में वे सात मण्डलियाँ ही थीं ? क्या अब एक भी नहीं है? क्या यह साफ नहीं दिखता कि ये सात दीपदान सारी मण्डलियों को दिखाते हैं ? इसलिए इन सात तरह की मण्डलियों देख सकते हैं ।

कुछ जानकारों के हिसाब से इसका मतलब कुछ और भी हो सकता है । उनके हिसाब से इफिसुस से, लेकिन लौदीकिया की मण्डलियाँ उस समय से आगे (पिछले २००० वर्ष की) के सात कलीसियाई युगों की तरफ इशारा है । लेकिन इसका कोई पुख्ता सबूत नहीं है । खास बात यह है कि हम जानें कि व्यक्तिगत रूप से और मण्डली के रूप में हम क्या सीख सकते हैं ।

२:१ **"सन्देशवाहक"** -१:२०

**"इफिसुस"** - प्रेरित १८:१६,१४; १६:१-२० ।

**"लिखो"** - हर मण्डली को यूहन्ना क्या लिखे, यह यीशु उसे बताते हैं - पद ८,१२,१८; ३:१,७,१४ । यूहन्ना ने अपने मन से यह सब नहीं लिखा । उसने मण्डली के संदेशवाहक को लिखा लेकिन यह पूरी मण्डली के लिए था ।

**"सात सोने के दीपदानों"** - १:१२,१६,२० ।

२:२ **"जानता हूँ"**- हर एक मण्डली से यीशु यह कहते हैं । भजन ३३:१३-१५; १३६:१-४, नीति ५:२१; यिर्म. १६:१७, २३:२४, इब्रा ४:१३ । वह हम में से हर एक को और हर मण्डली को जानते हैं; और हमारी भलाई करने या डाँटने के लिए तैयार हैं ।

**"दुष्टों को सहन नहीं करते"**-भजन १०१:३-५, १कुरि.५:१३ । इफि ५:५-७ में पौलुस की सलाह को उन्होंने माना था । बुराई और बुरे लोगों से कोई साठ-गाँठ नहीं की ।

**"परखा"**- १ यूहन्ना ४:१; १ थिस्स. ५:२१; १कुरि १४:२६ से तुलना करें । आज भी यह ज़रूरी है ।

**"झूठा"** - मत्ती ७:१५-२०; २ कुरि. ११:१३-१५; २पत. २:१ । प्रेरित २०:२८-३१ में पौलुस ने ऐसे लोगों के खिलाफ इफिसुस के अगुवों को चेतावनी दी थी ।

**"मेहनत"** -पद २ दूसरी बार इस शब्द का इस्तेमाल दिखाता है कि वे यीशु के काम में लगे हुए थे । अपने जीवनकाल में पौलुस इस बात का नमूना था - प्रेरित २:१४,२०,३१,३४ । समय की कीमत जानने के लिए भी उसने उनसे कहा था (इफि ५:१६)। ऐसा इन्होंने किया भी और थके नहीं ।

२:४ **"तुम्हारे खिलाफ"** - देखा जाए तो वे लोग आदर्श थे, मेहनत करने, और झूठे लोगों और झूठी शिक्षा के बारे में सावधानी बरतने में । लेकिन एक बात में पीछे थे - वह था प्यार ।१कुरि. १३:१-३,१३; मत्ती २२:३१-४० । यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि उनमें प्यार नहीं था, लेकिन यह कि शुरूआत में जितना था, उतना नहीं रहा । इफि ३:१६-१६ में दिए गए प्रोत्साहन से वे दूर हट गए थे।

२:५ **"दूर चले गए"** - अपना पहला प्यार खोना अच्छी बात नहीं थी । यह सबसे बड़ी बात में असफल होना था । अगर गलती नहीं है, तो मन बदलने की बात ही नहीं ।

**"मन बदलो"** - पद १६,२२; ३:३,१६ । यीशु ने अपनी सेवकाई इसी शब्द से शुरू की थी (मत्ती ४:१७) । आज भी उनके लोगों के लिए वही सेवकाई है । यहाँ ज़ाहिर है कि खोया प्यार फिर से हासिल किया जा सकता है । मन बदलाव पर मत्ती

६ तो तुम्हारे दीपदान को उसकी जगह से हटा दूँगा। **लेकिन** यह अच्छी बात है कि तुम नीकुलइयों के कामों से
७ नफरत करते हो, जिनसे मैं भी नफरत करता हूँ। **जो** सुनना चाहे, वह सुने कि (पवित्र) आत्मा मण्डलियों से क्या
कहता है। जो जीत हासिल करे उसे मैं ज़िन्दगी के पेड़ में से, जो स्वर्गिक पिता के स्वर्गलोक में है खाने को दूँगा।
८ **स्मुरना** की मण्डली के संदेशवाहक को लिखोः जो पहले और आखिरी हैं, जो मर गए थे और अब जी उठे हैं,
६ यह कहते हैं, "**मैं** तुम्हारे दुख और गरीबी को जानता हूँ -लेकिन तुम अमीर हो। जो अपने आपको यहूदी कहते
१० हैं, लेकिन हैं नहीं, लेकिन शैतान की सभा हैं, उनकी निन्दा को भी जानता हूँ। **जो** दुख तुम सहने वाले हो,

---

३:२ में नोट्स देखें ।

**"नहीं तो"**- विश्वासी अगर मन न बदले तो वह इन्साफ (न्याय) की तरफ रहा है । याद रखें जब प्यार खत्म होता है तो परमेश्वर जिन बातों को मण्डली में चाहते हैं वे सब उसके साथ गायब हो जाती हैं ।

**"दीपदान को हटा दूँगा"**- यह कि वे एक मण्डली की शक्ल में नहीं रहेंगे या एक मण्डली के रूप में उन्हें कुछ लेना देना नहीं ।

२:६ **"नीकुलइयों"** -पद १५ में क्या मानते थे, सिखाते थे, इसके बारे में बाईबल में कुछ नहीं है । शायद इसके दो मतलब हो सकते हैं । कुछ लोग निकोलस के बारे में बताते हैं, मसीही होने के बाद वह गलत शिक्षा देनेवाला और गंदा जीवन जीनेवाला बन गया । इसके माननेवाले शायद झुण्ड पर अपना अधिकार जताना चाहते थे । शायद एक ऐसे याजक वर्ग की तरफ इशारा है, जो तमाम मण्डलियों पर हक जमाना चाहता था । वे कोई भी क्यों नहीं थे, उनके काम और शिक्षा परमेश्वर की बातों के खिलाफ और यीशु से नफरत करने वाली थी ।

२:७ **"जो सुनना चाहे"** - मत्ती ११:१५; १३:६,४३ । यह बात सातों मण्डलियों को कही गयी थी, इसलिए आज हर एक विश्वासी और मण्डली के लिए है ।

**"पवित्र आत्मा"** - यीशु ने पवित्र आत्मा द्वारा यूहन्ना से बातचीत की, यूहन्ना ने परमेश्वर के आत्मा से ही लिखा ।

**"जीत हासिल करें"**-इन सभी चिट्ठियों में जीत पानेवालों के लिए वायदा है । जीत पर पद देखें - मत्ती १६:१८; लूका १०:१६; यूहन्ना १६:३३; प्रका.२१:७। इसका मतलब यह नहीं कि ये लोग कभी हारते नहीं, बुरा नहीं करते (भजन ३७:२४; नीति २४:१६; मत्ती ६:१२)। जीत हासिल करने का मतलब है सारी कठिनाइयों, परख, परीक्षाओं, दुनिया, शारीरिक इच्छाओं और शैतान के बावजूद ज़िन्दगी के आखिर तक विश्वास में बने रहना । ऐसा वे अपनी ज़िन्दगी में दिखाते भी हैं लूका २२:३२; इब्रा १०:३६; याकूब २:१४-१७; १ पत. १:५) ये जीत उन्हें इसलिए मिलती है क्योंकि जो भीतर हैं वे बाहरवाले से बडे हैं (१ यूहन्ना ४:४) । परमेश्वर ने उनके भीतर जीतनेवाला विश्वास रखा (इब्रा १०:३६-११:१) ।

**"ज़िन्दगी का पेड़"**- उत्पत्ति २:६; :२२-२४ से तुलना करें । परमेश्वर ने आदम हव्वा को उससे अलग कर दिया था । जो इन्सान ने बात न मानने की वजह से खो दिया था, मसीह से वापस मिलता है । यीशु को क्रूस (पेड़) पर ठोक दिया गया था (प्रेरित ५:३०; गल. ३:१३,१ पत २:२४) ताकि हम जिन्दगी के पेड़ से खाएँ । यह पेड़ उनके लिए है जो मसीह पर विश्वास करते हैं और विश्वास में बने रहते हैं देखें कुलु. १:२३, इब्रा ३:६,१४; ६:१२; १०:३८,३६ ।

२:८ **"संदेशवाहक"** - १:२० ।

**"स्मुरना"** - इफिसुस के उत्तर में ६० कि.मी. दूर एक शहर । उस समय अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर था । आज के समय में तुर्किस्तान में यह इज़मिर कहलाता है ।

**"पहला और आखिरी"** -१:१७ ।

**"अब जी उठे हैं"** - १:१८, मत्ती २८:१-१० ।

२:६ **"दुःख"** -स्मुरना के लोगों और यहूदियों ने मसीहियों को सताया था । शहर सुन्दर था, लेकिन नागरिक परमेश्वर के लोगों के प्रति बुरे थे ।

**"गरीबी"** - ऐसा लगता है ज़्यादातर गरीब लोग यीशु को अपना रहे थे (कुछ लोग मसीह की शिक्षा के अनुसार चलने के लिए गरीब बन गए होंगे) । याकूब २:५; लूका ६:२०-२२; १४:३३ से तुलना करें ।

**"लेकिन तुम अमीर हो"**-१ कुरि २१-२३; २ कुरि. ८:६; इफि १:३ - दुनियावी चीज़ो की कमी, आत्मिक बातों में धनी।

**"अपने आपको यहूदी कहते हैं, लेकिन हैं नहीं"** - रोमि २:२८,२६; फिलि.३:२,३ ।

**"शैतान की सभा"** - ३:६ । वे अपनी सभा को परमेश्वर की सभा ही समझते थे । यह एक कारण है कि लोग इतना ज़्यादा धोखा खा सकते हैं । यिर्म. १७:६; १२:६; १इफि २१:१ और मत्ती ४:१-१० और यूहन्ना ८:४४ में शैतान पर नोट्स देखें ।

उनसे मत डरना। देखो, शैतान तुममें से कुछ लोगों को कैदखाने में डाल देगा, ताकि तुम परखे जाओ। और तुम्हें
'दस दिन' तक क्लेश उठाना पड़ेगा। जान देने तक अपने विश्वास में बने रहना, - तब मैं तुम्हें ज़िन्दगी का ताज दूँगा।
११ "**जो** सुनना चाहे वह सुन ले कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है। जो जीत हासिल करे, उसे दूसरी
१२ मौत से कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा। **पिरगमुन** की मण्डली के संदेशवाहक को यह लिखोः यह संदेश उनकी तरफ
१३ से है जिनके पास तेज दोधारी तलवार है। **मुझे** यह मालूम है कि तुम वहाँ रहते हो जहाँ शैतान का सिंहासन है।
तुम मेरे नाम को पकड़े हुए हो। जब मेरा विश्वसनीय गवाह अन्तिपास तुम्हारे बीच में मारा गया, जहाँ शैतान का
१४ निवास है, तब भी तुमने मेरा इन्कार नहीं किया। **फिर** भी मेरे पास तुम्हारे खिलाफ़ कुछ शिकायतें हैं। तुम अपने यहाँ
कुछ ऐसे लोगों को सहन करते हो जो बालाम की तरह हैं। क्योंकि बालाम ने बालाक को यह सिखाया था कि
१५ इस्राइली लोग मूरतों का प्रसाद खाने और व्यभिचार करने से ठोकर खाएँ। **इसी** तरह तुम्हारे बीच कुछ लोग
१६ नीकुलइयों की शिक्षा माननेवाले हैं। **इसलिए** अपना मन बदलो, नहीं तो मैं अचानक आकर अपने मुँह की तलवार

---

२:१० **"मत डरना"** - मत्ती १०:२६-२८, ३१; लूका १२:३२; यूहन्ना १४:२७; १६:३३; इब्रा १३:५,६ रोमि, ८:२८ ।

**"परखे जाओ"** - शैतान ने चाहा कि उन्हें सताए और नाश कर डाले । परमेश्वर ने उसे परीक्षा का रूप दिया । तुलना कर भजन ६६:१०-१२, १ थिस्सु २:४;१ पत १:६,७; २पत. २:६, याकूब १:२,३ ।

**"दस दिन"**- परमेश्वर को मालूम है कि कितने समय तक किसी परीक्षा को अनुमति दे । वह हमारी क्षमता से ज़्यादा हमें परीक्षा में नहीं पड़ने देंगे ।

**"विश्वास में बने रहना"** - हर सताव के बीच और परखे जाने के समय भरोसा रखे रहना और इन्कार नहीं करना ।

**"ज़िन्दगी का ताज"** - याकूब १:१२ । २तिमो. ४:८ में ताज पर टिप्पणी देखें ।

२:११ **"सुनना चाहे"** - पद ७ ।

**"जो जीत हासिल करे"** -पद ७

**"दूसरी मौत"** - २०:६,१४; २१:८ इसका मतलब परमेश्वर से हमेशा का अलगाव । २ थिसस १:८,६ से मिलाएँ ।

२:१२ **"संदेश वाहक"** - १:२० ।

**"परगमुस"** या **"परगमुन"** - उन दिनों में एक मशहूर शहर । इफिसुस से उत्तर १६० कि.मी. दूर ।

**"तलवार"**-१:१६ अपने आप को इस मण्डली में इस तरह से परिचय कराने का मतलब था, वहाँ बहुत सी बातें ठीक नहीं थीं ।

२:१३ **"मुझे यह मालूम है"** - पद २

"जहाँ शैतान का सिंहासन है"-शैतान का सिंहासन नरक में नहीं, पृथ्वी पर है । यूहन्ना १२:१३; १४:३०; २कुरि. ४:४; इफि ६:१२, १पत ५:८; १ यूहन्ना ५:१६ । उस समय शैतान ने अपने कामों को जारी रखने के लिए केन्द्र बना रखा था। निःसंदेह अभी यह कहीं और है । अभी इस जगह का वह महत्व नहीं है । उस समय राजा की पूजा का यह केन्द्र था ।

"मेरा इन्कार नहीं किया" जिस जगह उन का विरोध था वहीं उन्होंने यीशु का अंगीकार किया । इसके लिए काफी आत्मिक ताकत की ज़रूरत थी - इफि ६:१० ।

**"अन्तिपास"** - एशिया में सबसे पहला शहीद । सताव के द्वारा शैतान ने मण्डली को बर्बाद करने की कोशिश की ।

"विश्वासयोग्य शहीद" या "विश्वसनीय गवाह" - ११५ से तुलना करें ।

**"जहाँ शैतान का निवास है"** -जहाँ शैतान भी आराम से है, वहाँ की हालत क्या होगी ? परगमुम के लोगों ने दिल से उसका स्वागत किया होगा ।

२:१४ **"तुम्हारे खिलाफ"**- पद ४ । मसीह पहले अपने लोगों की अच्छी बातों को कहते हैं, बाद में बुराइयों की बात करते हैं ।

**"बालाम"** - गिनती २५:१-३; ३१:१६; २ पत २:१५, यहूदा ११ ।

**"बालाक"** - गिनती २२:१-६ । दो बातें, जिनके बारे में यहाँ यीशु मसीह का इशारा है, उन्हीं से कुरिन्थ की मण्डली में समस्या हुई । देखें १ कुरि ५:१,२; ६:६; ८:१-१३ । प्रेरित १५:२०,२६ भी देखें ।

शैतान जो सताव के ज़रिए बाहर से मण्डली को बर्बाद न कर पाया, भीतरी गंदगी से उसने ऐसा करना चाहा । यह बड़ा खतरा था ।

२:१५ **"नीकुलइयों"** - पद ६ से मिलान करें । कई बातें शिक्षा बन जाती हैं ।

२:१६ **"मन बदलो"** - पद ५

**"लड़ूँगा"** - यिर्म २१:५ से तुलना करें । हमें शिक्षा और सिद्धांत में सावधान होना है, नहीं तो हम यीशु से लड़नेवाले ठहरेंगे।

१७ से उनके खिलाफ लड़ूँगा। **जो** सुनना चाहे वह आत्मा की आवाज़ सुने कि आत्मा मण्डली से क्या कहना चाहता है।
जो जीत हासिल करे उसे मैं छुपे हुए मन्ने में से दूँगा। एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम होगा।
१८ इस नाम को पानेवाले के अलावा उसे और कोई नहीं जानेगा। **थुआतीरा** की मण्डली के संदेशवाहक को लिखोः
१९ परमेश्वर के बेटे जिन की आँख आग की लपट और पैर चमकते पीतल के समान हैं, यह कहते हैं: **मैं** तुम्हारे
काम, प्यार, विश्वास, सेवा और धीरज को जानता हूँ। यह भी कि तुम्हारे अभी के काम पुराने कामों से बढ़कर
२० हैं। **लेकिन** तुम्हारे खिलाफ़ मुझे यह शिकायत है कि तुम उस स्त्री इज़ेबेल को अपने बीच में रहने देते हो। वह
अपने आपको भविष्यद्वक्तिन कह कर मेरे लोगों को व्यभिचार करने और मूरतों का प्रसाद खाने के लिए सिखाते
२१ हुए भटकाती है। **मैंने** उसे मन बदलने का मौका दिया, लेकिन वह अनैतिक चाल-चलन छोड़ना नहीं चाहती।
२२ **देखो**, अगर वे अपने सारे बुरे कामों को नहीं छोड़ेंगे तो मैं उसे बीमारी के बिस्तर पर डालूँगा और वह और
२३ जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं, उन सबको भारी पीड़ा में डालूँगा। **मैं** उसके सभी बच्चों को महामारी से मारूँगा
और सारी मण्डलियाँ जान जाएँगी, कि मनों और दिलों को जाँचने वाला मैं ही हूँ। मैं तुममें से हर एक को उसके
२४ कामों के मुताबिक बदला दूँगा। **लेकिन** मैं थुआतीरा के बाकी लोगों से कहता हूँ, जो इस शिक्षा को नहीं मानते

---

२:१७ **"छुपा हुआ मन्ना"** - यीशु स्वयं । निर्गमन १६:१४-१६, ३१; यूहन्ना ६:३५,४८-५१ । यह संसार से छिपा हुआ है ।
**"सफेद पत्थर"**- उन दिनों त्यौहारों में सफेद पत्थर टिकट की तरह इस्तेमाल होते थे । यहाँ यही मतलब हो सकता है मेम्ने के विवाह भोज में दाखिला (१९:९)
**"नया नाम"** - जो नाम मसीह एक व्यक्ति को देंगे, उससे मालूम होगा कि वह है क्या । तुलना करें उत्पत्ति १७:५,३२:२४।

२:१८ **"संदेश वाहक"** - १:२०।
**"थुआतीरा"** - परगमुम से ७ कि.मी. दूर एक शहर ।
**"परमेश्वर का बेटा"** - मत्ती १:१८; ३:१६; यूहन्ना १:१४; ३:१६; ५:१८,१६ आदि ।
**"आग...... चमकते पीतल"** - १:१४,१५ ।

२:१९ **"जानता हूँ"** - पद २ ।
**"प्यार.... विश्वास"** - गल ५:६ में नोट्स ।
**"अभी के काम ... बढ़कर हैं"** - वे ऐसी मण्डलियों की तरह नहीं थे जहाँ .. मसीह के लिए जोश और सेवा कम हो जाती है ।

२:२० **"तुम्हारे खिलाफ"** - पद ४,१४ ।
**"रहने देते हो"**- पद २ से तुलना करें । दुष्टता या दुष्ट लोगों को सहन करना गम्भीर बात है । इससे मण्डली मसीह के खिलाफ़ खड़ी होती है ।
**"इज़ेबेल"** - बाईबल इतिहास में एक दुष्ट औरत हुई है । देखें १ राजा १६:३०-३३; १८:४; १९:१,२; २१:१-२३; २ राजा ९:७,१०,२२,३०-३७। थुआतीरा की मण्डली में ऐसी ही एक दुष्ट महिला थी । वह अपने को मसीह की और परमेश्वर की भविष्यद्वक्तिन कहती थी । वह दिखाती थी कि उसके पास संदेश था । जो कुछ उसने सिखाया वह परगमुम मण्डली में "बालाम की शिक्षा" से मिलता जुलता था । पद १४ ।

२:२१ **"मन बदलने"** -रोमि २:४; २ पत ३:९ ।
**"छोड़ना नहीं चाहती"** - ९:२०; १६:९,११; मत्ती २३:३७ ।

२:२२ मन बदलाव से इन्कार करने पर हमेशा (कभी जल्दी, कभी देर में) दण्ड (बुरा परिणाम) आता है ।
"व्यभिचार" वह शारीरिक भी हो सकता है और आत्मिक (परमेश्वर के साथ ईमानदार न होना भी) भी-तुलना करें । यिर्म २:२; ३:६-९; यहेज २३:३७; होशे १:२; ४:१५) या दोनों भी ।

२:२३ **"उसके सभी बच्चों"** - जिन्होंने उसकी शिक्षा को अपनाया ।
**"महामारी"** - मूसा की किताब के हिसाब से दोनों तरह के व्यभिचार के लिए सज़ा थी । लैव्य २०:१०; व्यव २२:२२-२४; यहेज १६:२८-४०; २३:४६-४९) । एक मण्डली में दण्ड भेजने से दूसरी मण्डलियों को कुछ सीखना चाहिए ।
**"मनों और दिलों को जाँचनेवाला"**-१ शमू १६:७; १ राजा ८:३९; भजन १३९:१,२; नीति २४:१२; यिर्म १७:१०; इब्रा ४:१३।
**"हर एक को उसके कामों"** -१८:६; २०:१२,१५; २२:१२; मत्ती १६:२७; रोमि २:६।

२:२४ **"शैतान की गहरी बातें"** - इसलिए कि इज़ेबेल अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती थी, उसने अपनी शिक्षा को परमेश्वर के गहरे सच कह कर सामने रखा, लेकिन वह शैतान की दासी थी (२ कुरि. ११:१४,१५ से तुलना करें) । पहली शताब्दी

२५ और उन बातों को जिन्हें शैतान की गहरी बातें कहते हैं, नहीं समझते। **मैं** तुम पर और अधिक भार नहीं डालता,
२६ फिर भी जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रहो। **जो** जीत हासिल करे और जो
२७ मेरे कामों को आखिर तक करता रहे, उसे मैं तमाम देशों पर हक दूँगा। **वह** उन पर लोहे के राजदण्ड से शासन
करेगा जिस पर कुम्हार के मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते हैं : जैसे कि मैंने भी ऐसा ही अधिकार अपने
२८,२६ पिता से पाया। **उसे** मैं सुबह का तारा दूँगा। **जो** सुनना चाहे वह आत्मा की सुन ले और समझ ले कि आत्मा मण्डलियों
**३,**१ से क्या कहता है। **सरदीस** की मण्डली के संदेशवाहक को लिखोः जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ और
सात तारे हैं, वह यह कहते हैं : मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ, कि तुम ज़िन्दा तो कहलाते हो, लेकिन हो मरे
२ हुए। **जाग** जाओ, और जो चीज़ें बाकी रह गई हैं, और मिटने पर हैं उन्हें मज़बूत करो, क्योकि मैंने तुम्हारे किसी
३ काम को अपने परमेश्वर की निगाह में पूरा नहीं पाया। **इसलिए** याद करो कि तुमने किस रीति से शिक्षा प्राप्त की और
सुनी थी, उसी में बने रहो और मन बदलो। इसलिए अगर तुम न जागो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुम

---

में एक शिक्षा यह थी कि एक व्यक्ति शैतान की गुप्त बातों को बुरा करने से सीख सकता है । ऐसा करके वह शैतान को हरा सकता है । इस वजह से सच्चाई उलटःपुलट हो रही थी । हम कभी भी अपने आप को शैतान को सुपुर्द करके उसे हरा नहीं सकते । न ही दुष्टता करके बुराई पर जीत हासिल कर सकते हैं । दुनियादारी में खो जाने से दुनिया पर जीत हासिल नहीं कर सकते । अगर ऐसा होता है, तो हम जीते हुए नहीं लेकिन गुलाम कहलांएगे । लेकिन क्या ऐसा है कि लोग शैतान की शिक्षा को मानें और सोचें कि ये बातें परमेश्वर की तरफ से हैं ? हाँ सचमुच । यह हम सब जगह देखते हैं ।

२:२५ मसीह ने मण्डली से बहुत अपेक्षा नहीं की है, न ही एक बोझ डाला है (तुलना करें मत्ती ११:२६,३०) । उनके लिए यह काफी था, कि उस सच्चाई को पकड़े रहें, जिसे परमेश्वर के ईमानदार सेवकों से सुना था और झूठे भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा का इन्कार करें । यूहन्ना ८:३१:३२; १ कुरि १५:२; २ थिस्स २:१५; १ तिमोथी ३:६, तीतुस १:६; इब्रा ४:१४ ।

**"मेरे आने तक"**- थुआतीरा की स्थानीय मण्डली यीशु के दोबारा आने तक नहीं रहेगी, लेकिन १:२० के नोट्स देखें । लेकिन थुआतीरा के गुणोंवाली मण्डली ज़रूर दिखेगी ।

२:२६,२७ **"जीत हासिल करे"** - पद ७ के नोट्स ।

**"आख़िर तक"**- मत्ती २४:१३; इब्रा ३:६,१४; ६:११; २ तिमो २:१२ से तुलना करें । विश्वास और सेवा में बने रहना सबसे ज़रूरी बात है ।

**"वह उन पर ....शासन करेगा"** - यह वही वायदा है जो परमेश्वर पिता ने भजन २:८,६ में मसीह को दिया था । जीत हासिल करने वाले मसीह से जुड़े हैं । वे अभी यीशु के दुःखों में शामिल हैं । उसके आने के बाद शासन करेंगे । ३:२१; २०:४,६; २ तिमो. २:१२ ।

**"मैंने पिता से पाया है"** - मत्ती २८:१८; यूहन्ना ३:३५; १७:२ ।

२:२८ **"सुबह का तारा"** -मसीह की तरफ इशारा है । देखें २२:१६ ।

२:२६ पद ७ ।

३:१ **"संदेशवाहक"** - १:२० ।

**"सरदीस"** - थुआतीरा के दक्षिण में ५० कि.मी. दूर स्थित एक धनी शहर ।

**"सात आत्माएँ"** - १:४ ।

**"सात तारें"** : १:१६,२० ।

**"मैं जानता हूँ"** :२:२२ ।

**"लेकिन .. मरे हुए"**- आत्मिक मौत । एक जीवित मण्डली के रूप में मशहूर होने का कारण शुरू के लोग थे । या तमाम धार्मिक कामों की तरफ एक इशारा है । बहुत बार मण्डली के कामों को देखकर उसे जीवित समझा जाता है ।

३:२ **"जाग जाओ"** - इफि ५:१४ से तुलना करें । वे आत्मिक रीति से सोए थे । अपनी सच्ची हालत नहीं जानते थे ।

**"मज़बूत करो"** - मण्डली पूरी तरफ से आशाहीन हालत में नहीं थी । लेकिन जो कुछ सच्चाई या रोशनी उनके पास थी वह खत्म होने वाली थी ।

३:३ **"याद"** २:५ ।

**"प्राप्त की और सुनीं"** - परमेश्वर की बातें ।

**"बने रहो"** - ऐसा लगता है, यह उसके हाथ से निकलनेवाला था, या वे इससे दूर होनेवाले थे । इब्रा २:१ से तुलना करें। सच्चाई की कीमत जानना उसे पकड़े रहना, मानना ज़रूरी था । नहीं तो मण्डली की हालत और बुरी हो जाएगी । सच्चाई

४ जान भी न पाओगे, कि मैं किस समय तुम्हारे पास आ जाऊँगा। **लेकिन** सरदीस में तुम्हारे पास कुछ लोग ऐसे
हैं जिन्होंने अपने कपड़े गंदे नहीं किए हैं। वे सफेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चला करेंगे, क्योंकि वे इसी लायक
५ हैं। **जो** जीत हासिल करे, उसे इसी तरह के कपड़े पहिनाए जाएँगे। मैं उसका नाम ज़िन्दगी की किताब में से न
६ मिटाऊँगा, लेकिन अपने पिता और उनके स्वर्गदूतों के सामने उसका नाम मान लूँगा। **जो** सुनना चाहे वह
७ सुन ले कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है। **फिलादेलफिया** की मण्डली के संदेशवाहक को लिखोः जो पवित्र
और सच्चा है और जिसके पास दाऊद की चाभी है - वह खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता - वह यह
८ कहता हैः **मैं** तुम्हारे कामों को जानता हूँ। देखो, मैंने तुम्हारे लिए एक दरवाज़ा खोला हुआ है जिसे कोई बन्द
नहीं कर सकता। हालाँकि तुम्हारी ताकत कम है फिर भी तुमने मेरे वचन को माना है और मेरे नाम का इन्कार
९ नहीं किया। **देखो!** जो शैतान की सभा हैं और अपने आपको यहूदी कहते हैं जबकि हैं नहीं, वे झूठ बोलते हैं

---

खत्म होना सब कुछ खत्म होना है ।

**"मन बदलो"** - २:५; १६,२१ ।

**"चोर की तरह"** -मत्ती २४:४३,४४; १ थिस्स ५:२-४ से तुलना करें ।

३:४ **"कुछ"**- अक्सर बेजान मण्डलियों को कुछ लोग शुद्ध जीवन जीते और सक्रिय होते देखते हैं ।(इब्रा. १२:१४; १ यूहन्ना ३:३)।

**"सफेद"** - पद १८; ४:४; ६:११; ७:९,१३; १९:१४ ।

**"लायक"** - २ थिस्स१:५ ।

३:५ **"जो जीत हासिल करे"**- २:७ पर नोट्स देखें ।

**"ज़िन्दगी की किताब"**- १३:८,१७:८; २०:१२,१५; २१:२७; फिलि ४:३ । तुलना करें निर्गमन ३२:३२,३५। भजन ६९:२८; दानि १२:१ । यहाँ यीशु इस बात का धमकी नहीं दे रहे हैं कि वह अपनी किताब में से किसी का नाम निकाल देंगे, लेकिन वायदा करते हैं । कि सच्चे विश्वासियों का नाम नहीं मिटाएंगे ।

**"मान लूँगा"** - मत्ती १०:३२ ।

३:६ २:७ ।

३:७ **"संदेशवाहक"** - १:२० ।

**"फिलादेलफिया"** - सरदीस के दक्षिण पूर्व में ५० कि.मी. दूर एक शहर है । इसका मतलब है आपस का प्रेम (भाई बहनों का प्यार) ।

**"जो पवित्र और सच्चा है"** -६:१०, १५:४; यशा १:४; भजन ३१:५; यूहन्ना १४:६ ।

**"दाऊद की चाभी"** -यशा २२:२२ । मसीह परमेश्वर के घर (राज्य) के प्रबन्धक हैं । वह खजांची हैं, जिनके पास बुद्धि, कृपा और आत्मिक वरदान और शक्ति है ।

**"वह खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता"** - मण्डली और देशों के सम्बन्ध में यीशु के पास पूरा अधिकार है । तुलना करें मत्ती २८:१८; यूहन्ना १७:२ वह दुनिया में कही भी दरवाज़े को खोल सकते और बन्द कर सकते हैं ।

३:८ **"मैं जानता हूँ"** -२:२ ।

**"एक दरवाज़ा खोला हुआ है"** - प्रेरित १४:२७; १ कुरि. १६:९ ।

**"ताकत कम है"** - इफि १:१८,१९; ६:१०; कुलु १:११ । साफ ज़ाहिर है कि जो ताकत उनके पास थी उससे ज़्यादा पा सकते थे।

**"वचन (संदेश) को माना है"** - सरदीस में उनसे यही करने को कहा गया था - पद ३ ।

**"मेरे नाम का इन्कार नहीं किया"** - २:१३ यहाँ से हमें यह सीख मिलती है कि यीशु का इन्कार न करने और उनकी बात मानने के लिए 'थोड़ी' सी ताकत लगती है । अगर किसी भी तरह का आत्मिक जीवन है, यह थोड़ी सी शक्ति ज़रूर मिलेगी। सोचिए, अगर सारी ताकत से उन्हें मज़बूती मिले तो, वे क्या-क्या कर सकेंगे (कुलु १:११; इफि ३:१६) ।

३:९ **"शैतान की सभा"** - २:९ ।

**"झूठ"** - शारीरिक रीति से वे यहूदी थे । लेकिन जैसा परमेश्वर चाहते थे कि यहूदियों का जीवन हो, उसका बिल्कुल उल्टा ही था । इसी को झूठ कहते हैं । (रोमि २:२८,२९ से तुलना करें)।

**"तुम्हारे पैरों पर"**- यशा ४५:१४,४९:२३; ६०:१४ से तुलना करें ।

**"मैंने तुमसे प्यार किया है"** - एक मण्डली के लिए खास प्यार, जो मण्डली यीशु को प्यारी थी । यूहन्ना १४:२१,२३ से तुलना करें ।

१० - मैं उन्हें मजबूर करूँगा कि वे आकर तुम्हारे पैरों पर झुकें और जानें कि मैंने तुमसे प्यार किया है। **इसलिए**
कि तुमने मेरे धीरज के वचन को माना है, मैं भी परखे जाने के समय में तुम्हें बचा रखूँगा, अर्थात वह समय जो
११ सारी दुनिया पर आनेवाला है, ताकि इसमें सभी रहने वाले परखे जाएँ। **मैं** अचानक आनेवाला हूँ जो कुछ तुम्हारे पास है
१२ उसमें बने रहो कि कोई तुम्हारा ताज तुमसे छीन न ले। **जो** जीत जाए उसे मैं अपने परमेश्वर के भवन में एक खम्भा
बनाऊँगा, वहाँ से वह कभी बाहर नहीं निकलेगा। मैं अपने परमेश्वर का नाम और अपने परमेश्वर के शहर अर्थात
नए यरूशलेम का नाम, जो परमेश्वर की तरफ से स्वर्ग से उतरनेवाला है, और अपना नया नाम भी इस पर
१३,१४ लिखूँगा। **जो** सुनना चाहे, वह सुन ले कि आत्मा मण्डलियों से क्या कहता है। **लौदीकिया** की मण्डली के
१५ संदेशवाहक को यह लिखोः **जो** आमेन, विश्वासयोग्य, सच्चे गवाह और परमेश्वर की सृष्टि की शुरूवात का कारण हैं,
वह यह कहते हैंः मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ कि तुम न ठण्डे हो, न गर्म। अच्छा होता कि तुम ठण्डे या गर्म होते।

---

३:१० **"धीरज"** - रोमि १२:१२ । २ थिस्सु ३:५; १पत २:२०,२१ ।

**"बचा रखूँगा"** - यूनानी में मतलब हो सकता है - पूरी तरह आनेवाले काले कठिन समय से बचाना या कठिन समय होने के बावजूद सुरक्षा देना ।

**"परखे जाने के समय"**- इसके दो मतलब हो सकते हैं - एक वह उसी समय की मण्डली में आने वाला था । दूसरा वह जो इस युग के आखिर में (शायद महाक्लेश ७:१४, मत्ती २४:२१ । दानिय्येल १२:१ भी देखें) । इस हालत में विश्वासियों को उस समय से बचाने का मतलब दोनों समयों में बचाने से है । सताव के समय शुरू की कलीसियाओं (मण्डलियों) में से फिलाडेल्फिया की मण्डली का खतना नहीं हुआ था । इसके उल्टा, वह बचायी गयी थी । क्या हम यह सोचें कि मसीह का वायदा एक तरह से पूरा तब हुआ और दूसरी तरह से भविष्य में पूरा होगा ?

३:११ **"अचानक"** -१:१,३; २२:७, १२,२० ।

**"जो कुछ तुम्हारे पास है, उसमें बने रहो"** - २:२५ ।

**"तुम्हारा ताज"** - शायद यह ईमानदारी की सेवा का प्रतिफल है । तुलना करें २:१०; १कुरि. ६:२४-२७; फिली ४:१; २ तिमो. २:५; ४:८; याकूब १:१२, १ पत ५:४; २ यूहन्ना ८ ।

३:१२ **"जो जीत जाए"** - २:७ ।

**"खंभा"** -हर एक विश्वासी परमेश्वर द्वारा बनाए, आत्मिक घर का एक हिस्सा है (इफि. २:१६-२२; १कुरि. ३:१७; ६:१६)। खंभा होने का मतलब है इस आत्मिक घर में ज़रूरी और स्थायी स्थान रखना ।

**"नाम"** - २:१७ जीत हासिल करनेवालों के ऊपर तीन नाम लिखे होंगे ।

**"परमेश्वर"** - परमेश्वर के पवित्र चरित्र की छाप उन पर होना यह दिखाता है कि हम उन्हीं के हैं । परमेश्वर के स्वभाव की तरह उनका स्वभाव होगा ।

**"शहर"** - २१:२-२७, जीत हासिल करनेवाले उस रोशनीमय जगमगाती जगह में रहने के लिए बिल्कुल सही लोग होंगे ।

**"अपना नया नाम"** - १६:१२ से तुलना करें । हमें नहीं मालूम कि यह नया नाम क्या हो सकता है । बाद में हम यीशु के बारे में कौन सी अद्‌भुत बातों को देखेंगे ।

३:१३ २:७ देखें ।

३:१४ **"संदेशवाहक"** - १:२० ।

लौदीकिया फिलाडेल्फिया के दक्षिण पूर्व में ८० कि.मी. दूर एक शहर था । यह इफिसुस के पूर्व में १५० कि.मी दूर था ।

**"आमेन"**- १:७ इसका मतलब है सच्चाई, ईमानदारी, विश्वसनीयता । यशा ६५:१६ में इसे परमेश्वर के लिए इस्तेमाल किया गया है । (इब्रानी में कहते हैं- "आमेन का परमेश्वर" । इस का मतलब है परमेश्वर वही करेंगे जो कहते हैं ।

**"गवाह"** - १:५ ।

**"शुरूवात"** - इसका मतलब यह नहीं कि सबसे पहले उन्हें बनाया गया । वे तो त्रिएकत्व में से एक हैं और कभी बनाए नहीं गए । यहाँ यूनानी शब्द का मतलब है वे जिनसे सृष्टि बनी । वे ही सब की शुरुआत हैं । यूहन्ना १:३; कुलु. १:१६,१७ से तुलना करें ।

३:१५,१६ **"मैं... जानता हूँ"**-२:२ ।

**"ठण्डे" -** आत्मिक रीति से मृतक । शायद यहाँ मसीह के संदेश को पूरी तरह से इन्कार करना है या खिलाफत करना।

**"गर्म"**-का मतलब है खुशखबरी से प्यार और मसीह के लिए जोश ।

**"गुनगुना"** - यह मसीह की खुशी की खबर के पक्ष में होना या न होना नहीं है । इसका मतलब है एक धार्मिक

१६,१७ **इसलिए** कि तुम गुनगुने (न ठण्डे, न गर्म) हो, मैं तुम्हें अपने मुँह से उगलने पर हूँ। **तुम** कहते हो कि मै अमीर
हूँ, मेरे पास सब कुछ है और मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। लेकिन तुम नहीं जानते कि तुम अभागे,
१८ तुच्छ, कंगाल, अंधे और नंगे हो। **इसलिए** मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि मुझ से चोखा सोना मोल लो, ताकि तुम
अमीर हो जाओ और सफेद कपड़े ले लो, जिसे पहन कर तुम्हारे नंगेपन की शर्म ढँक जाए और अपनी आँखों
१९ में लगाने के लिए सुरमा ले लो, ताकि तुम साफ-साफ देख सको। **मै** जिनसे प्यार करता हूँ, उन्हें सुधारता
२० और अनुशासित करता हूँ - इसलिए जोशीले हो और मन बदलो। **देखो**, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटाता हूँ। अगर
कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोले तो मैं उसके पास अन्दर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वह
२१ मेरे साथ। **जो** जीत हासिल करे उसे मैं अपने साथ मेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा, जिस तरह से मैं भी जीत हासिल

---

पहरावा/दिखावा जिसमें कोई दम नहीं होता है (२ तिमो ३:५)। मसीह के लिए कुछ भी गर्मजोशी न होना, लेकिन मसीहत या मसीही धर्म का चोंगा पहने रहना।

यह रोमि १२:११ के बिल्कुल विरुद्ध है। १ कुरि. १५:५८।

यह ऐसी आत्मिक हालत है जिससे मसीह को नफ़रत है क्योंकि वह स्वयं जोश से भरे हैं (यूहन्ना २:१७)।

**"मुँह से उगलने पर हूँ"** -अगर वे मन नहीं बदलेंगे, तो यीशु को उन लोगों से कुछ लेना देना नहीं है। सच में वे एक मण्डली के रूप में बनें नहीं रहेंगे। (चाहे वे सभाएँ करते रहें, रीति विधि मानते रहें)। यह भी संभव है कि जिन्हें मुँह से मसीह ने निकाल भी दिया हो वे ऐसे बने रहें, जैसा कि कभी कुछ न हुआ हो।

३:१७ यीशु मसीह का मसीहियों के बारे में विचार और उनके अपने बारे में ख्याल में कितना फर्क है। उनकी हालत से मसीह परेशान हो गए। लेकिन उन्हें अपने ऊपर घमण्ड था। तुलना करें लूका १६:१५।

**"चीज़ की ज़रूरत नहीं"**- होशे १२:८; लूका १८:११,१२; १ कुरि. ४:८ से तुलना करें।

**"नहीं जानते"** - खुद को धोखा देना और अपने को न जानना कितना खतरनाक है। यह आम बात भी है इस दुनिया में भी और मण्डली में। क्या कारण है इसका ? तुलना करें यिर्म १७:६; २ कुरि ४:४, २ थिस्सु. २:१०, इब्रा ३:१३।

३:१८ **"मोल लो"** - पैसे या अच्छे कामों से नहीं। तुलना करें यशा ५५:१, मत्ती १३:४४-४६।

**"मुझसे"** -एक सच्चे आत्मिक जीवन और खुशी का हमेशा की ज़िन्दगी के लिए यीशु मसीह ही एक तरीका है। और कहीं पैसों से यह खरीदना नामुमकिन है।

**"सोना"** - यह कीमती आत्मिक और सच्चे ईश्वरीय धन की ओर इशारा है।

**"सफेद कपड़े"** - धार्मिकता (यशा ६१:१० से तुलना करें)।

**"सुरमा"** - आत्मिक अन्धेपन के लिए मसीह का इलाज। यीशु मसीह की ताकत जो आत्मिक समझ देती है।

३:१९ **"मैं प्यार करता हूँ"**- उनके गुनगुनेपन से वे दुःखी हुए। लेकिन इसकी वजह से यीशु बदले नहीं।

**"सुधारता"** - इब्रा १२:५-११; १ कुरि. ११:३२; नीति ३:११,१२।

**"मन बदलो"**- यीशु मसीह इन सात मण्डलियों में से पाँच को बदलाव के लिए कहते हैं (२:५, १६,२१,२२; ३:३) क्या यह सच्चाई नहीं कि आज तमाम मण्डलियों को बदलने की ज़रूरत है।

३:२० मण्डली ने वहाँ यीशु को बाहर रख दिया था। इसका मतलब था कि सभी लोग अपने विश्वास को खो बैठे थे।(२ कुरि १३:५ से मिलान करें।)

**"खड़ा"** - यह "मैं" कौन है। पद १४ में देखें कि इस मण्डली के सामने वह अपने आप को कैसे रखते हैं - सारी सृष्टि के रचयिता जिनकी बातों पर भरोसा किया जा सकता है। यीशु सर्वशक्तिमान मुक्तिदाता हैं। एक कमज़ोर व्यक्ति का दरवाज़े पर खड़ा रहना तस्वीर नहीं है। (प्रेरितों के काम २२:१० के नोट्स देखें)।

**"अंदर आकर"** - यह शान से भरे यीशु का वायदा है जो झूठ नहीं बोल सकते। आइए हम सब इसे कबूल करें, अपनाएँ और सच्चाई में परमेश्वर के बेटे-बेटी बनें। (यूहन्ना १:१२,१३)।

३:२१ **"जो जीत हासिल करे"** - २:७।

**"अपने साथ"** - मतलब उनके अधिकार और शासन को कबूल करें - २:२६,२७।

**"मेरा सिंहासन"** - ५:१०; २०:४,६; २ तिमो २:१२।

**"जीत हासिल करके"** - ५:५; इब्रा २:१७; ४:१५; १२:२,३; मत्ती ४:१-१०।

**"पिता के साथ सिंहासन"**- परमेश्वर का हमेशा का सिंहासन। यीशु का सिंहासन फर्क है (लूका १:३२,३३)। अभी तक वह उस सिंहासन पर बैठे नहीं। २:७; मत्ती १६:२८; २५:३१।

२२ करके अपने पिता के साथ सिंहासन पर बैठा हुआ हूँ। **जो** कोई सुनना चाहे, वह सुन ले कि आत्मा मण्डलियों
**४**,१ से क्या कहता है। **इन** बातों के बाद मैंने नज़र डाली और देखो, स्वर्ग में एक खुला दरवाज़ा था। तुरही की सी
आवाज़ जो मैने पहले सुनी थी, उसने मुझसे कहा, यहाँ ऊपर आओ, और मैं तुम्हें वे बातें दिखाऊँगा जो आगे
२ होने वाली हैं। **मैं** एकदम पवित्र आत्मा में आ गया, और देखो, स्वर्ग में एक सिंहासन रखा था और उस पर कोई
३ बैठा हुआ था। **वह** बैठा हुआ व्यक्ति यशब और माणिक्य के समान दिखता था, और सिंहासन के चारों तरफ
४ पन्ना की तरह एक मेघ-धनुष दिखाई देता था। **इस** सिंहासन के चारों तरफ चौबीस सिंहासन थे। उन सिंहासनों
पर मैंने चौबीस बुज़ुर्गों को सफेद कपड़े पहने बैठे हुए देखा, जो सफेद कपड़े और सिरों पर सोने के ताज पहने
५ हुए थे। **उस** सिंहासन से बिजली की रोशनी, गर्जन और बादलों की गड़गड़ाहट निकलती है, और सिंहासन के सामने
६ आग के सात दीप जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। **सिंहासन** के सामने चमकते काँच सा सफेद
समुद्र था, और सिंहासन के बीच और चारों तरफ जीवित प्राणी थे, जिनके आगे पीछे आँखे ही आँखे थीं।

---

४:१ **"खुला दरवाज़ा"** -इसका मतलब है स्वर्ग के रहस्य को यूहन्ना पर प्रगट किया जानेवाला है ।

**"नज़र डाली"** - यूनानी भाषा का मतलब है "देखना", उत्पत्ति १:३१ और मत्ती १:२३ के नोट्स देखें ।

**"तुरही"** - १:१० । ऊँची, भेदनेवाली साफ आवाज़ ।

**"यहाँ ऊपर आओ"** - कुछ शिक्षक सिखाते हैं कि स्वर्ग में ऊपर जाने का मतलब मण्डली का उठाया जाना (१ थिस्सु ४:१६,१७ दिखाता है) । लेकिन इसका कोई सबूत नहीं है । इसलिए जिसका सबूत नहीं है, उसे ज़बरदस्ती थोपना ठीक नहीं है । १० और ११ अध्याय में यूहन्ना फिर से पृथ्वी पर है । (१०:१,४,७, ६:१०, ११:१-३) फिर भी कौन यह कहता है कि वह स्वर्ग से वापस लौटी मण्डली को दिखाता है ? कुछ ज्ञानी बताते हैं कि बाद के दर्शनों में मण्डली के पृथ्वी पर होने के बारे में नहीं कहा गया है इसलिए इसे स्वर्ग पर होना ही चाहिए । लेकिन यह भी सच है कि बाद के दर्शनों में मण्डली के स्वर्ग में होने को नहीं बताया गया है । क्या हम यह तर्क रख सकते हैं, कि ज़रूर वह पृथ्वी पर होगी ? दोनों ही तर्क सही हो सकते हैं ।

**"वे बातें दिखाऊँगा जो आगे होनेवाली हैं"** - १:१६ का मतलब शायद उन बातों से है जो अध्याय २ और ३ में है । या इस युग के अन्त में पूरी विकसित होंगी ।

४:२ **"पवित्र आत्मा में"** - १:१० ।

**"स्वर्ग में सिंहासन"** - १ राजा २२:१६, भजन ६:४,४७:२; १२३:१। परमेश्वर इस दुनिया के ऊपर शासक हैं । इस किताब की सभी घटनाएँ उनके वश में हैं । उन्हीं के ज़रिए वह अपने उद्देश्य को पूरा करेंगे । देखें १६:६ । इस किताब में ४० बार परमेश्वर के सिंहासन के बारे में है ।

४:३ **"समान"**-किसी ने भी परमेश्वर के आत्मिक तत्व को नहीं देखा है । यूहन्ना ने उनकी इस शान को देखा जो कीमती हीरे की सी है । यहाँ यूनानी में येशब शब्द मानिक पत्थर की तरफ इशारा है (२:११) ।

**"मेघधनुष"** - परमेश्वर के ज्ञान और विश्वासयोग्यता को दिखाता है (उत्पत्ति ६:१३-१६, यहेज १:२४) ।

४:४ **"बुज़ुर्ग"**- पद ६-११; ५:५; ८-१०;७:११-१४; ११:१६; १४:३; १६:४ । ऐसा लगता है कि वे साधारण स्वर्गदूतों से फरक हैं ७-११ और स्वर्ग में परमेश्वर के लोगों से भी १५:८-११; ७:६-११,१३,१४; १६:४-७) । स्वर्ग में वे एक ऊँचा दर्जा पाए हुए स्वर्गदूत हो सकते हैं । इफि १:२१; ३:१०; कुलु १:१६;२:१०) । ७:६ के मुक्ति पाए हुए लोग सिंहासन पर नहीं लेकिन "सिंहासन के सामने" खड़े हैं । क्या हम यह कल्पना भी कर सकते हैं कि मसीह की देह (मण्डली) मेम्ने के विवाह से पहले स्वर्ग में सिंहासन पर हो सकती है (१६:७,८), या यीशु के आने से पहले वह अपने सिहांसन पर बैठ सकते हैं ?

४:५ **"बिजली की रोशनी, गर्जन और बादलों की गड़गड़ाहट"** - ८:५; ११:१६; १६:१८ निर्गमन १६:१२,१३; २६:३; ७७:१८ से तुलना करें ।

४:६ **"काँच का सा समुद्र"**- १५:२, २ इति. ४:२,६,१० से तुलना करें । सुलैमान के प्रार्थना भवन में "समुद्र" याजकों/पुरोहितों के धोने के लिए था । स्वर्ग में एक प्रार्थना भवन है - ७:१५; ११:१६; १४:१५,१७ । लेकिन किसी की ज़रूरत नहीं कि उस समुद्र में शुद्ध हो क्योंकि वहाँ के सभी लोग पहले ही से गंदगी और अशुद्धता से साफ किए जाते हैं । ( १:५; १यूहन्ना १:६; इब्रा १०:१६-२०) इसलिए स्वर्ग का समुद्र ठोस है ।

**"चार जीवित प्राणी"**- यहेज १:५-१४; १०:२० यशा ६:२,३ । उत्पत्ति ३:२४ भी देखें । ये प्राणी करूबों और सराफीमों की तरह हैं । ऐसा सिर्फ समझते हैं । इसका कोई ठोस आधार नहीं है, कि वे स्वर्ग में मण्डली का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

**"आँखें ही आँखें"** - यहेज १:१८; १०:१२। शायद ऊँचे स्तर के ज्ञान और सतर्कता को दिखाता है ।

७ **पहला** प्राणी सिंह की तरह, दूसरा प्राणी बछड़े की तरह, तीसरे प्राणी का चेहरा मनुष्य की तरह और चौथा प्राणी
८ उकाब की तरह था। **इन** चारों जीवित प्राणियों में से हर एक के छः-छः पंख थे। उनके चारों तरफ और बीच
में आँखे हीं आँखे थीं । वे दिन-रात यह कहते नहीं थकते थे, ''पवित्र, पवित्र, पवित्र! यहोवा परमेश्वर सर्वशक्तिमान
९ हैं, जो थे, जो हैं और जो आने वाले हैं। **जब** ये जीवित प्राणी उनको जो सिंहासन पर बैठे हैं और हमेशा तक
१० जीवित हैं, महिमा, इज़्ज़त और धन्यवाद देते हैं, **तब** ये चौबीसौ बुज़ुर्ग जो सिंहासन पर बैठे हैं, और हमेशा
११ तक जीवित हैं, उनके सामने गिरते हुए इबादत करते हैं और अपने ताज रखते हुए कहते हैं: '**हे** हमारे यहोवा
और परमेश्वर, आप ही महिमा, इज़्जत और अधिकार के लायक हैं, क्योकि आप ही ने सब चीज़ों को बनाया
**५**,१ और आप ही की मर्ज़ी से उनकी रचना हुयी और वे अभी तक बनी हुयी हैं। **जो** सिंहासन पर बैठे हुए थे,
उनके दाहिने हाथ में मैंने एक किताब देखी। यह किताब अन्दर-बाहर दोनों ओर से लिखी हुयी थी। इसे सात मुहरें
२ लगाकर बन्द कर दिया गया था। **फिर** मैंने एक ताकतवर स्वर्गदूत को देखा, जो बुलन्द आवाज़ में यह कहता
३ था, कि इस किताब को खोलने और उसकी मुहरें (सील) तोड़ने के लायक कौन है? **न** स्वर्ग में, न पृथ्वी पर,
४ न पृथ्वी के नीचे कोई उस किताब को **खोलने** या उस पर निगाह डालने के लायक निकला। इसलिए कि कोई
व्यक्ति उस पुस्तक को खोलने या उस पर निगाह डालने के योग्य नहीं था, मै बिलख-बिलख कर रोने लगा।
५ **तब** उन बुज़ुर्गो में से एक मुझसे बोला, ''मत रो। देखो, यहूदा के कबीले का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है,
६ उस किताब को खोलने और उसकी सातों मुहरें (सील) खोलने के लिए जीत चुका है।'' **मैने** उस सिंहासन और

---

४:७ **''सिंह .... उकाब की तरह''** - यहेज १:१० देखें ।

४:८ **''छः पंख..... पवित्र, पवित्र, पवित्र''** - यशा ६:२,३ ।

**''जो आनेवाले हैं''** १:४ ।

४:९ **''महिमा, इज्ज़त और धन्यवाद''** -५:१२,१३ विश्वासी यही पृथ्वी पर कर सकते हैं, करना चाहिए और करेंगे, यदि वे स्वर्ग से तालमेल बनाए हुए हैं (१:६, यूहन्ना ५:२३; रोमि ११:३६; १६:२७; १कुरि. ६:२०; १०:३१; इफि १:१२; ५:२०; १थिस्सु ५:१८; १ तिमो. १:७; ६:१६; इब्रा १३:१५) ।

**''हमेशा तक जीवित हैं''** - १:१८ ।

४:१० **''ताज रखते हुए''** - वे दीनता से मान लेते हैं कि उनका अधिकार और ताकत जो सिंहासन से जुड़ी है, सर्वोच्च परमेश्वर से है ।

४:११ दुनिया के बनानेवाले के रूप में वे परमेश्वर की बड़ाई करते हैं (१०:६; उत्प १:१; अय्यूब ३८:४-७; भजन १६:१; यशा ४०:२५,२६; प्रेरित १४:१५; १७:२४:२८; रोमि ११:३६) ।

**''आप ही की मर्ज़ी''** -इस यूनानी शब्द का मतलब प्रायः ''इच्छा'' या कामना'' होता है ।

५:१ **''जो सिंहासन पर बैठे हुये थे''** - परमेश्वर पिता ।

''स्क्रौल'' लिखने की चीज जिसे मोड़कर रखा जा सकता है । यहूदी लोग अपने आराधनालय में ऐसे स्क्रौल्स रखा करते थे। लूका ४:१७; इब्रा १०:७ ।

**''सात मुहरें''** - इसका मतलब है - पूरी तरह से सुरक्षित ।

५:२ **''लायक कौन है''** - इन मुहरों को तोडने और खोलने का सम्बन्ध ताकत से नहीं, लेकिन योग्यता से था ।

५:३ **''न कोई...लायक निकला''**-परमेश्वर का दोस्त अब्राहम इस योग्य नहीं, नियमशास्त्र का देनेवाला मूसा नहीं, इस्राएल का राजा दाऊद नहीं, कोई भविष्यद्वक्ता नहीं कोई बुज़ुर्ग या जीवित प्राणी या स्वर्ग का स्वर्गदूत नहीं । स्वर्ग, पृथ्वी या हर जगह सब को यह मानना पड़ा कि वे इस मुहर को तोड़ने के योग्य नहीं थे । किसी की हिम्मत नहीं थी कि सिंहासन के पास आकर स्क्रौल ले ।

५:४ यूहन्ना यह पहचान गया कि स्क्रौल का महत्व क्या है और उसकी उत्सुकता भी बढ़ गयी ।

५:५ **''यहूदा के कबीले का वह सिंह''**- यह यीशु मसीह के लिए एक उपनाम है । उत्पत्ति ४९:८-१० से तुलना करें । यह यीशु मसीह के शाहीपन और दाऊद के सिंहासन पर अधिकार की तरफ इशारा है (लूका १:३२,३३) ।

**''दाऊद का मूल''**- देखें ११:१०; ५३:२; रोमि १५:१२ ।

**''किताब को खोलने और उसकी सातों मुहरें खोलने''**- क्योंकि उन्होंने अपने योग्यपन को दिखाया है पद ६ ।

५:६ **''सिंहासन.... के बीच में''** - यीशु के पास सारा अधिकार है । (१:५; मत्ती २८:१८; यूहन्ना १७:२)

**''मेम्ना''** - पद ५ का शाही शेर एक मेम्ना भी है ।

चारों प्राणियों और उन बुजुर्गो के बीच में मानो एक घात किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा! उसके सात सींग और
७ सात आँखे थीं- ये परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं, जो सारी धरती पर भेजी गयी हैं। **जो** सिंहासन पर बैठे हुए
८ थे, उसने पास आकर उनके दाहिने हाथ से वह पुस्तक ले ली। **ऐसा** होते ही वे चारों प्राणी और चौबीस बुजुर्ग
उस मेम्ने के सामने गिर पड़े। हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे। ये पवित्र
९ लोगों की बिनतियाँ हैं। **वे** यह नया गीत गाने लगे कि आप इस किताब को लेने और उस की मुहरें खोलने के लायक
हैं, क्योंकि आपने वध होकर अपने रक्त से हर एक कुल, भाषा, लोग और राष्ट्र में से यहोवा परमेश्वर के लिए
१० लोगों को खरीद लिया है। **और** उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर
११ राज्य करते हैं। **जब** मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन बुजुर्गों के चारों तरफ बहुत से
१२ स्वर्गदूतों की आवाज सुनी, जिन की गिनती लाखों, करोड़ों में थी। **वे** ऊँची आवाज़ से कहते थे, कि वध किया हुआ

---

**''घात किया हुआ''** - यशा ५३:७,८; मत्ती २७:३५,५०; यूहन्ना २०:२५-२७; प्रेरित २:२३; ३:१५ ।

**''मानो''** - दिखनेवाले ज़ख्मों की तरफ इशारा है । यूहन्ना २०:२५-२७ से तुलना करें ।

**''सात सींग''**- ओल्ड टेस्टामेन्ट सींग अक्सर शक्ति, ताकत (व्यवस्था ३३:१७) की तरफ इशारा है । सात सींग दिखाते हैं कि पूरी ताकत और पूरा अधिकार यीशु का है । सचमुच के मेम्ने कमज़ोर होते हैं और उनमें ताकत की कमी होती है । लेकिन ऐसा इस मेम्ने के साथ नहीं है, जो कि एक शेर भी है ।

**''सात आँखे''** - ज़कर्याह ४:७ ।

**''सात आत्माएँ''** - १:४ पर नोट्स देखें । सात आत्माएँ परमेश्वर के सिंहासन के सामने (४:५) और पृथ्वी पर भी हैं । मसीह के पास ''सात आत्माएँ'' का मतलब है कि यीशु के पास पूरी माप से परमेश्वर का आत्मा है (यूहन्ना ३:३४ से तुलना करें)। सच पूछें तो परमेश्वर का आत्मा मसीह का आत्मा है । रोमि. ८:९ देखें ।

५:७ यह बाईबल में सबसे बड़ा क्षण है । यूहन्ना रो रहा है । स्वर्ग में सन्नाटा छा जाता है क्योंकि वहाँ स्क्रौल खोलने लायक कोई व्यक्ति नहीं है । सारी दुनिया इन्तज़ार करती है । तब नम्र और दीन मेम्ना पूरे भरोसे के साथ बैठे सर्वशक्तिमान के पास पहुँचता है सिंहासन पर और स्क्रौल लेता है, तुरन्त स्वर्ग प्रशंसा से भर जाता है ।

५:८ **''मेम्ने के सामने गिर पड़े''** - यह आराधना का रवैया है। स्वर्ग में पिता के सामने यीशु की प्रशंसा की जाती है (इब्रा १:६) । अगर यीशु परमेश्वर से नहीं होते, तो ऐसा संभव नहीं था । पूरी बाईबल में सभी जगह परमेश्वर को छोड़ किसी की आराधना के लिए नहीं कहा गया है । देखें निर्गमन २०:३-५; व्यव. ६:१३; मत्ती ४:१० । जो पृथ्वी पर बहुतों ने नहीं सीखा है वह लोग स्वर्ग में जानते हैं - यूहन्ना ५:२३ की सच्चाई (फिलि २:६ में यीशु के परमेश्वर होने के पद को देखें) ।

**''वीणा''** - १४:२; १५:२ ।

**''धूप''** - निर्ग ३०:१,७,३४-३८; भजन १४१:२ ।

**''बिनतियाँ''**-परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के लिए खुशबूदार हैं । वे स्वर्ग में हैं और उन्हें चढ़ाया जाता है (८:३)।

५:९ **''यह नया गीत''** - १४:३; भजन ३३:३; भजन १४१:२ ।

''मुहरें खोलने के लायक परमेश्वर के लिए हैं क्योंकि आपने वध होकर''-देखें कि सिर्फ यीशु ही मुहर खोलने के योग्य क्यों हैं ? इसलिए कि उन्होंने हमारे पापों को ले लेने के लिए कुर्बानी दी । देखें १:५; मत्ती २६:२८ । किसी ने ऐसा नहीं किया था और न ही कर सकता था (इब्रा १०:४ के नोट्स देखें) ।

**''खरीद लिया''** - परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाया है । गल. ३:१३; ४:५; इफि १:१७ । यहाँ मतलब है ''खरीदा'' तुलना करें । प्रेरित २०:२८; १ कुरि. ६:२० ।

**''हमें''** - कुछ यूनानी पाण्डुलिपियों में हम शब्द नहीं है ।

५:१० **''परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक (पुरोहित) बनाया और वे राज्य करते हैं''** - कुछ यूनानी पाण्डुलिपियों के मुताबिक ''हमारे परमेश्वर के लिए राजा और याजक बनाया और वे शासन करेंगे'' ।

**''पृथ्वी पर''** - ३:२१; २०:४,६; २ तिमो २:१२; मत्ती १९:२८; लूका २२:२९,३० ।

५:१२ **''वध''** - पद ९ । पापियों के लिए यीशु की मौत स्वर्ग में स्तुति का एक कारण है ।

**''आदर, महिमा धन्यवाद''** -तुलना करें ४:११; ५:१२; यूहन्ना ५:२३ ।

५:१३,१४ यह साफ है कि पिता और यीशु दोनों ही हर प्राणी द्वारा स्तुति के लायक हैं ।

६:१ **''सात मुहरें''**- स्क्रोल (५:१) । इस तरह से मुहर बन्द किया गया था कि मुहर तोड़ते ही स्क्रोल का कुछ भाग वापस फैलाया

१३ मेम्ना ही अधिकार, धन, ज्ञान, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के लायक है। **फिर** मैंने स्वर्ग में और पृथ्वी
पर और पृथ्वी के नीचे और समुद्र की सब बनायी हुयी चीज़ों को और सब कुछ को जो उन में है, यह कहते
सुना, कि जो सिंहासन पर बैठे हैं, उनका और मेम्ने का धन्यवाद, आदर और महिमा और शासन हमेशा-हमेशा
१४ तक रहे। **तब** चारों प्राणियों ने कहा, ऐसा ही हो, और बुज़ुर्गों ने साष्टांग प्रणाम (गिरकर दण्डवत) किया।
**६**,१ **जब** मैंने देखा कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोल दिया तब मैंने उन चार प्राणियों में से एक को
२ गरज के समान आवाज़ करते हुए सुना, "आओ"। **जब** मैंने नज़र डाली तो एक सफेद घोड़े को देखा और
जो उस पर बैठा हुआ था, उसके पास एक धनुष्य था और उसे एक ताज दिया गया। वह युद्ध जीतने के लिए
३ निकला कि और जीत हासिल करे। **जब** उसने दूसरी मुहर तोड़ी, तो मैंने दूसरे, जीवित प्राणी को यह कहते
४ सुना, "आओ"। **तब** लाल रंग का एक घोड़ा निकला। उसके सवार को पृथ्वी पर से शान्ति उठा लेने का अधिकार
५ (हक) दिया गया। साथ ही यह भी कि लोग एक दूसरे को मारें और उसे एक बड़ी तलवार दी गयी। **जब** उसने
तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे जीवित प्राणी को यह कहते सुना, "आओ"। तब मैंने नज़र डाली और एक
६ काले घोड़े को देखा। उस पर सवार व्यक्ति के हाथ में एक तराजू था। **मैंने** उन चारों जीवित प्राणियों के बीच में
से एक आवाज़ मानो यह कहते सुनी, "एक दीनार का एक चौथाई भाग गेहूँ, और एक दीनार का तीन चौथाई
७ जव, लेकिन तेल और दाखरस को नुकसान मत पहुँचाना"। **जब** उसने चौथी मुहर तोड़ी, तो मैंने चौथे
८ जीवित प्राणी को यह कहते सुना, 'आओ'। **मैंने** नज़र डाली और एक हल्के पीले रंग का घोड़ा देखा। उसके
सवार का नाम "मौत" था। और अधोलोक उसके पीछे-पीछे चला जा रहा था। उन्हें प्राणियों के एक चौथे हिस्से

---

जा सकता था। आगे के अध्यायों में लिखी बातें ही उसमें थी । जिस स्क्रोल को यूहन्ना खुला हुआ देखना चाहता था, जिस की वजह से स्वर्ग में स्तुति और आनन्द हुआ, अब हमारे सामने खुला हुआ है । यहूदियों में ज़मीन-जायदाद के कागज़ात मोहर बन्द किए जाते थे ।(यिर्म ३२:९-१४) । मोहर बन्द स्क्रोल इस किताब में यीशु के इस पृथ्वी पर किए गए काम को दिखाता है । इस को हासिल करने और इस पर शासन करने को भी (लैव्य.२५:२४-३१; रूत २:२०; यिर्म ३२:११)। इस युग के आखिर में वह अपनी जायदाद/दौलत को ले लेने के लिए आएँगे ।(मत्ती २१:३४; इब्रा १:२,१३; १०:१३)। यीशु यह १९ और २० अध्याय में करते हैं । अध्याय ६-१४ उस अन्त के तुरन्त पहले की घटनाओं को दिखाते हैं; हालाँकि मुहरें, तुरहियाँ और कटोरे आनेवाली विपत्तियों की तरफ इशारा हैं, याद रहे, मुक्ति देनेवाले यीशु घटनाओं के ऊपर नियंत्रण रखते हैं।

**"आओ"** - पद ३,५,७ । स्क्रोल में लिखी बातों को देखने की अनुमति अब यूहन्ना को मिलती है।

६:२ **"सफेद घोड़ा"** - यीशु भी सफेद घोड़े पर आएँगे (१९:११), लेकिन उनका आना इस घटना के बाद होगा । यह सारी मुहरों के खुलने के बाद होगा । जब यह सफेद घोड़ा आता है, तभी मसीह स्वर्ग में मुहरें खोलते होंगे । शायद सफेद रंग ऐसे व्यक्ति की तरफ इशारा है जो यीशु की जगह लेना मांग रहा है और पृथ्वी को ले लेना मांगता है । ख्रीस्त विरोधी को छोड़कर और कौन हो सकता है (अध्याय १३)?

**"जो उस पर बैठा हुआ था"** -क्योंकि दूसरे घोड़े और उनके घुड़सवार (बाकी सभी मुहरें, तुरहियाँ और कटोरे) आनेवाली विपत्तियों की तरफ इशारा हैं । शायद यह भी उसी तरफ इशारा है ।

**"हाथ में धनुष"**- ऐसा लगता है कि इस युग के आखिर में किसी की ऐसी कोशिश होगी कि दुनिया पर जीत पा जाए । "ताज" का मतलब है वह जीत पा लेगा । तुलना करें १३:७ ।

६:३,४ इस युग के आखिर में बहुत लड़ाइयाँ होंगी (मत्ती २४:६-८ से तुलना करें)। "पृथ्वी पर से शान्ति उठा लेने" का मतलब है अधिकार पाने के लिए पूरी दुनिया संघर्ष में लग जाएगी ।

६:५,६ **"एक तराजू"** -यूनानी शब्द का मतलब किसी सूखी चीज़ की एक लीटर तौल ।

"एक दिन की मज़दूरी" - यूनानी में "दीनार" एक दिन की मजदूरी (मत्ती २०:२)। यह सामान्य लोगों के लिए आकाल की हालत है अगर यह धन गेंहूँ खरीदने में लगेगा, तो अपनी दूसरी ज़रूरतों को कैसे पूरा करेगा ? "तेल और अंगूर का रस" उन चीज़ो को दिखाता है जो ज़रूरत की चीजे नहीं हैं । धनी लोगों के पास सभी चीजें अधिक मात्रा में होती हैं ।

६:७,८ **"अधोलोक"** - मत्ती १६:१८ और लूका १६:२३ के नोट्स देखें ।

**"एक चौथे हिस्से"**- यह पृथ्वी के एक भौगोलिक क्षेत्र या मारे हुए लोगों की संख्या की तरफ इशारा हो सकता है जो मारे गए थे (८:७,९:१८ से तुलना करें) । इस युग के अन्त में अशुद्ध शक्तियाँ ऐसी आज़ाद की जाएगी जैसी कभी

९ पर यह हक दिया था, कि तलवार, भुखमरी, महामारी और धरती के वनपशुओं द्वारा लोगों को मार डालें। **जब**
मेम्ने ने पाँचवी मुहर तोड़ी, तो मैंने वेदी के नीचे उन लोगों के प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन और अपनी
१० गवाही बनाए रखने की वजह से वध किए गए थे। **वे** ऊँची आवाज़ से पुकार कर कह रहे थे, "हे पवित्र और
सच्चे यहोवा परमेश्वर आप कब तक इन्साफ न करेंगें? और दुनिया में रहनेवाले लोगों से हमारे खून का पलटा
११ कब तक नहीं लेंगे?" **उनमें** से हर एक को सफ़ेद चोगा दिया गया और उनसे कहा गया, "कुछ देर और आराम
करो, जब तक कि तुम्हारे संगी साथी और विश्वासियों की, जो तुम्हारी तरह वध होनेवाले हैं, गिनती पूरी न
१२ हो जाए। **जब** मैंने छठवीं मुहर तोड़ते हुए मेम्ने को देखा, तब एक बड़ा भूकम्प हुआ और ऊन से बने कम्बल
१३ की तरह सूरज काला, और चाँद खून की तरह हो गया। **आसमान** के तारे ज़मीन पर इस तरह
१४ गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी के आने से अंजीर के पेड़ से कच्चे फल गिर जाते हैं। **आसमान** फटकर चटाई
१५ की तरह लपेटा गया, और हर एक पहाड़ और टापू अपनी अपनी जगह से हटाया गया। **पृथ्वी** के बादशाह,
प्रधान, सेनाधिकारी, अमीर, शक्तिशाली, हर एक दलित दास और हर एक आज़ाद इंसान पहाड़ों की गुफाओं

---

नहीं की गयी थी ।

**"तलवार..वन पशुओ"** - यहेज १४:२१ में इन्हें परमेश्वर के "चार भयंकर दण्ड" कहा गया है । वे ऐसे दण्ड हैं जो इस पृथ्वी के कुछ लोगों पर अक्सर आए हैं । लेकिन ऐसा लगता है कि युग के अन्त में यह सब बहुत ज़्यादा होगा ।

६:९-११ यह दृश्य मसीह के सेवकों के सताव और शहादत के बारे में है और इस युग के आख़िर के कष्टदायक समय की तरफ इशारा है । ७-१७; मत्ती २४:२१ ।

**"वेदी"**- निर्गमन २७:१-८ । मसीह के शहीद उण्डेले जाने वाले बलिदान हैं (फिलि २:१७; २ तिमो ४:६; लैव्य १:५,११,१५ से तुलना करें) ।

**"खून का पलटा"** जब वे पृथ्वी पर हैं, मसीह के सेवकों को अपने दुश्मनों के ऊपर दण्ड की कामना नहीं करनी चाहिए । देखें मत्ती ५:४४; प्रेरित ७:६०; रोमि १२:१४ । लेकिन इस युग का अन्त वह समय होगा जब परमेश्वर दुनिया से बदला लेगा । भजन ६४:१-३; व्यव.३२:३५; गिनती ३१:१-३ में परमेश्वर के बदला लेने के सम्बन्ध में नोट्स देखें । तब जो लोग मर चुके हैं, उनकी प्रार्थनाएँ, परमेश्वर के सच्चे उद्देश्यों के मुताबिक होंगी । ध्यान दें, मृतक होश में हैं और प्रार्थना के योग्य भी ।

**"सफेद चोगे"** - ३:५,१८; ४:४; ७:६,१३; १६:१४ ।

**"कुछ देर आराम करो"** - पीड़ा का समय आया था । लेकिन परमेश्वर के बदला लेने का नहीं । इस पुस्तक में हम वह दिन बाद में आता हुआ देखते हैं । १४:१७-२०; अध्याय १५ और १६; १६:११-१५ ।

६:१२-१७ सूरज, चाँद और सितारों में होनेवाले बदलाव से मत्ती २४:२६ की तुलना करें । ये वे घटनाएँ हैं जो "महाक्लेश" के बाद होंगी, इनके बारे में मत्ती २४:२१ में है । इसका मतलब है कि महान क्लेश पहली पाँच मुहरों के समय (छठी के खुलने से पहले) ही होगा । लेकिन सूरज, चाँद और तारों में ये बदलाव "प्रभु के दिन" के आने से पहले होगें । देखें प्रेरित २:१६,२०। इसलिए प्रभु का दिन और महाक्लेश एक ही घटना नहीं है । प्रभु के दिन में परमेश्वर का क्रोध और बदला दुनिया के लोगों के खिलाफ होगा - पद १०,१६,१७; १ थिस्स ५:२,३; १ पत ३:१०; यश १३:६-१३ आदि । महाक्लेश वह क्रोध और सताव है जो शैतान और दुष्ट लोग इस युग के अन्त में परमेश्वर के लोगों के ऊपर उण्डेलेंगे । १२:१२; १३:७ ।

महाक्लेश और प्रभु का दिन सूरज, चाँद और सितारों में चिन्हों से अलग अलग पहचाने जाते हैं । एक इन चिन्हों से पहले है और दूसरा इन चिन्हों के बाद । हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि महाक्लेश और प्रभु का दिन एक ही समय में होंगे और एक ही हैं । जो लोग इस फर्क को देखते नहीं, वे कुछ खास बातों को देखने से चूक जाते हैं। ऐसा करने से वे प्रकाशितवाक्य को सही-सही समझ नहीं पाएँगे ।

६:१२ **"भूकम्प"** - यशा २४:१९,२०; इब्रा १२:२६-२७ ।

**"तुरन्त"** - का मतलब है "देखो" ।

६:१५-१७ यशा २:९-२१ देखें जो प्रभु के दिन की बात करता है ।

**"मेम्ने के गुस्से"** - मेम्ना नम्र और नुकसान न पहुँचानेवाला प्राणी है । लेकिन यह मेम्ना यहूदा गोत्र का शेर है (५:५)। वह नम्र है (मत्ती ११:२९) । लेकिन इस दुनिया की बुराई के लिए सज़ा देने उठ खड़ा होगा । यह ध्यान रखें कि परमेश्वर का क्रोध, प्रभु के दिन की शुरूआत के चिन्हों के बाद, जब महाक्लेश खत्म होता है, तब आता है ।

**"गुस्से"** - क्रोध, यह दुष्टता और मन न बदलनेवाले लोगों के खिलाफ परमेश्वर का उचित क्रोध है। देखें गिनती २५:३;

१६ और चट्टानों में जा छुपे। **वे** पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, "हमारे ऊपर गिर पड़ो और हमें उनकी
१७ निगाह से जो सिंहासन पर बैठे हैं, तथा मेम्ने के गुस्से से बचा लो। **क्योंकि** उनके गुस्से का डरावना समय आ
**७**,१ गया है, और कौन है जो उनका सामना कर सकता है?" **इसके** बाद मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी के चारों कोनों
२ में खड़े देखा। वे पृथ्वी की चारों हवाओं को रोके हुए थे कि पृथ्वी, समुद्र या किसी पेड़ पर हवा न चले। **फिर**
मैंने एक और स्वर्गदूत को जीवित परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर आते हुए देखा। उसने उन चारों
३ स्वर्गदूतों को बुलन्द आवाज़ से कहा, "**जब** तक हम अपने यहोवा परमेश्वर के दासों के माथों पर मुहर न लगा
४ दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना।" **मैंने** मुहर लगे हुओं की गिनती सुनी,
५ जो १,४४,००० थी। इस्राएली सन्तानों के हर एक गोत्र में से इन पर मुहर लगाई गयी थी। **यहूदा** के गोत्र में
से बारह हज़ार पर मुहर दी गई। रूबेन के गोत्र में से बारह हज़ार पर, गाद के गोत्र में से बारह हज़ार पर,
६ आशेर के गोत्र में से बारह हज़ार पर, नप्ताली के गोत्र में से बारह हज़ार पर, मनश्शिह के गोत्र में से बारह
७ हज़ार पर, **शमौन** के गोत्र में से बारह हज़ार पर, लेवी के गोत्र में से बारह हज़ार पर, इस्साकार के गोत्र में
८ से बारह हज़ार पर, जबूलून के गोत्र में से बारह हज़ार पर, यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर, और

---

व्यव. ४:२५; भजन ९०:७-११, यूहन्ना ३:३६; रोमि १:१८; २५ । यही वह क्रोध है जिससे यीशु विश्वासियों को मुक्त करते हैं-१ थिस्सु ।

७:१-१७ इसके पहले कि मेम्ना सातवीं मोहर खोले, यीशु यूहन्ना को दर्शन देते हैं, जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि छः मोहरों के खोले जाते समय क्या होता रहा है । ऐसे दर्शन इस किताब के दूसरे हिस्सों में भी हैं-७:१-१७; १०:१-११;१४; १२:१,१४:२०; १७:१-१९:११ । ऐसा साफ है कि मुहरें, तुरहियाँ और कटोरे सीधे विषय को एक पूर्ण क्रम में आगे तक ले जाते हैं । यह पूरे दर्शन कुछ और सूचना भी देते हैं । वे ऐसे वर्णन से सम्बन्धित हैं जो कोष्ठक में हैं ।

अनेक मतों में से एक यह है इस किताब के इस भाग में दो तरह के लोग हैं, एक पृथ्वी पर, एक स्वर्ग में । पहले झुण्ड में सीमित संख्या है और दूसरे झुण्ड में इतनी ज़्यादा कि गिनना मुश्किल है । पहले झुण्ड में वे घटनाएँ हैं जो छः मुहरों के खुलने के बाद की हैं । दूसरे झुण्ड की घटनाएँ वे हैं जो पहली पाँच मुहरों के समय में हुयीं ! पहले झुण्ड को उन सभी सज़ाओं से बचाना है जो सातवीं मुहर के खुलने से आनेवाली हैं । दूसरा झुण्ड, "महाक्लेश" से गुज़र चुका है जो छठी मुहर के खुलने से पहले है ।

७:१ **"चारों हवाओं"** - ये उन ताकतों की तरफ इशारा है, जो दुष्ट लोगों को नाश करने के लिए परमेश्वर भेजते हैं। यिर्म ४९:३६-३८ से तुलना करें ।

७:२,३ यहाँ परमेश्वर की मुहर परमेश्वर की बपौती (दौलत) को दिखाती है । २ कुरि १:२१-२२, इफि. १:१३ से तुलना करें । माथे पर मुहर का मतलब है आने वाली विपत्तियों और सज़ा के समय उनकी रक्षा करना, तुलना करें यहेज ९:३-६ ।

७:४-८ **"परमेश्वर के दासों"**- पद ३ इस युग के अन्त में परमेश्वर की मुहर पानेवाले ये लोग इस्राएल राष्ट्र हैं । बाईबल में इस्राएल कबीले की लगभग तीस सूचियाँ हैं । यह भी उनमें से एक है ।

यह साफ ज़ाहिर नहीं है कि परमेश्वर के सेवकों की संज्ञा उन्हें क्यों दी गयी है। इसलिए कि उनकी खास सेवा है या उन्हें विश्वासी कह कर अलग किया गया है । (तुलना करें १:१; २:२०; ६:११; १०:७; ९:२; २२:३,६; रोमि ६:१६-१८ देखें)। परमेश्वर के संदेश से यह साफ दिखता है कि एक देश के रूप में इस्राएल इस दुनिया के आखिर के समय में परमेश्वर की तरफ मुड़ेगा । अभी एक देश के रूप में यीशु को मसीह नहीं अपनाने की वजह से वे अविश्वास में हैं । लेकिन एक बदलाव आनेवाला है । देखें रोमि ११:११,२५-३२; यिर्म २३:५-८; दानि १२:१; होशे ३:४,५; जक. १०:१०-१२; १२:९-१४; १३:१,९।

१४४,००० (पद ४) शायद मात्र एक पूरेपन की तरफ इशारा है । १२ कबीले, १२ प्रेरित, १२ दरवाजे, बारह नींव, फल की बारह फसलें (२१:१२,१४,२२:२) । एक हज़ार १०x१०x१० -एक सिद्ध धन भी पूर्णता को दिखाता है । या शायद जैसा लोग समझते हैं कि यह एक यथार्थ सख्या है । एक किताब जिसमें तमाम संकेत हैं । हमें संदेहास्पद बातों के बारे में ज़िद्दी नहीं होना है । अगर संकेतों को समझाया जाए, तब हम जान सकते हैं कि उनका मतलब क्या है, नहीं तो हमें अपने कथन के बारे में सावधान होना है । तब, सकता, शायद, सभवतः शब्द का इस्तेमाल ही ठीक है ।

७:८ **"यूसुफ"**-मनश्शै (पद १६) यूसुफ का एक बेटा था । इफ्राएम भी उसका एक बेटा था । इसलिए कि इफ्राएम सूची में नहीं है उसकी जगह यूसुफ ही का नाम है । दान के कबीले के बारे में भी कुछ नहीं कहा गया है ।

७:९ एक बड़ी भीड़ और पद ४ में १४४,००० लोगों में बड़ा अन्तर है । वे इस्राएल के कबीलों में से हैं । ये हर एक कबीले

९ बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हज़ार पर मुहर दी गई । **तब** मैंने नज़र डाल कर एक अनगिनित लोगों की बड़ी
भीड़ देखी। ये लोग जो हर एक देश, गोत्र, जाति और भाषा बोलनेवाले थे, सिंहासन और मेम्ने के सामने सफेद
१० चोंगे पहने, हाथ में खजूर की डालियाँ लिए हुए खड़े थे। **ये** लोग बुलन्द आवाज़ में चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे
११ थे, ''सिंहासन पर विराजमान हमारे यहोवा परमेश्वर और मेम्ने से ही मुक्ति है!'' **सिंहासन**, बुज़ुर्ग और चार
जीवित प्राणियों को घेरे सारे स्वर्गदूत जो खड़े हुए थे, वे सभी अपने मुँह के बल गिरकर परमेश्वर की इबादत
१२ कह कर रहे थे। ''ऐसा ही हो। **हमारे** यहोवा परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, इज्ज़त और अधिकार
१३ युगानुयुग है। ऐसा ही हो।'' **इसके** बाद बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, ''ये सफेद कपड़े पहने हुए लोग कौन
हैं १४ और कहाँ से आए हैं?'' **मैंने** जवाब में कहा, ''महाशय, यह तो आप ही जानते हैं।'' उन्होंने मुझसे कहा, ''ये
वे लोग हैं जो बड़ी तकलीफ़ से निकल कर आए हैं। इन्होंने अपने कपड़ों को मेम्ने के खून में धोकर सफेद किया
१५ है। **इस** वजह से ये यहोवा परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उनके भवन में दिन-रात उनकी खिदमत
(सेवा) करते हैं जो सिंहासन पर बैठे हैं। वह अपने लोगों के बीच रहकर उनकी देखभाल करेंगे, और अपने
१६ तम्बू से ढाँक कर अपनी उपस्थिति से रक्षा करेंगे। **उन्हें** भूख प्यास नहीं लगेगी। सूरज उन्हें अपनी भयंकर गर्मी
१७ से जला नहीं पाएगा । **क्योंकि** मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उन की रक्षा करेगा, और उन्हें जीवन रूपी

---

और देश के हैं । वे संख्या में कम हैं । ये ज्यादा हैं ।

**''हर देश...... बोलनेवाले''** -५:९;१०:११; ११:९,१७:७,१३:७, १४:६; १७:१५ । यह इस बात का सबूत है कि इस युग के खत्म होने से पहले खुशखबरी सब जगह पहुँच चुकेगी । मत्ती २४:१४ से तुलना करें ।

**''सिंहासन के सामने''**-४:२

**''सफेद चोंगे''** - ६:११

**''खजूर की डालियाँ''** - लैव्य २३:४०; यूहन्ना १२:१३- खुश होने और स्तुति को दिखाता है ।

७:१० **''मुक्ति''** - ६:१; भजन ३:८; योना ३:९; रोमि १:१६; इफि २:८,९ ।

**''मेम्ने से ही मुक्ति''** - ५:१३; १४:४; २२:१,३ ।

७:११ **''सिंहासन..... चार जीवित प्राणियों''** - ४:४,६-८ ।

**''मुँह के बल गिरकर''** -५:८ ।

७:१२ ५:१२ से तुलना करें ।

**''धन्यवाद''** - देखें लैव्य ७:१२,१३; भजन ७:१७; ५०:१४,१५; ५६:१२; इफि ५:२०; १ थिस्स ५:१८ ।

७:१४ **''बड़ी तकलीफ (महाक्लेश)''** - मत्ती २४:२१ देखें । इस युग के आखिर में बहुत ज़्यादा और सभी जगह फैलनेवाला क्लेश होगा (१३:७,८) । यहाँ हम यह न समझें कि निकल आने का मतलब बचाव है । १३:७,१५ के अनुसार निकल आने का मतलब, विश्वास के लिए शहीद होना है ।

**''धोकर सफेद किया है''** - दिखाता है कि उनका विश्वास मसीह के संदेश में है । १ यूहन्ना १:७ से तुलना करें ।

७:१५ **''उनकी खिदमत (सेवा) करते हैं''** -२२:७ देखें । पृथ्वी छोड़कर स्वर्ग जाने पर सेवा खत्म नहीं हो जाती है ।

**''दिन रात''** - इसलिए कि वहाँ नींद नहीं है, सेवा ज़्यादा की जाएगी ।

**''भवन''**- यूनानी में प्रार्थना स्थान का भीतरी हिस्सा या महापवित्र जगह । निर्ग २६:३१-३५ इब्रा ९:३ देखें । भवन में यह सेवा दिखाती है कि वे परमेश्वर के पुरोहित (याजक) हैं (१:६; १पत २:९) । उनका स्तुति का बलिदान (इब्रा १३:१५) स्वर्ग पहुँचने पर, रुकेगा नहीं ।

**''बीच रहकर''** - निकट की संगति के साथ-साथ पूरी सुरक्षा भी होगी (पद १६) । तुलना करें २१:३; निर्ग २५:८ ।

७:१६ **''भूख प्यास नहीं लगेगी''** - यशायाह ४९:१०; यूहन्ना ४:१३,१४; यूहन्ना ६:३५,५८ । महाक्लेश के समय में बहुत से लोग सचमुच की भूख सहेंगे (१३:१६,१७), जैसा कि कुछ लोग सदा से सहते आए हैं (१कुरि. ४:११; २कुरि. ६:४; ११:२७; लूका ६:२१) । स्वर्ग में ये सब बातें नहीं होंगी ।

**''भयंकर गर्मी''**- १६:८ से तुलना करें ।

७:१७ **''सिंहासन के बीच में''** - ५:६ के नोट्स देखें ।

**''चराएगा''** (रक्षा करेगा) ''चराने'' का मतलब खिलाने कहीं ज्यादा सही है । चरवाहे के रूप में यीशु का काम स्वर्ग में जारी रहेगा । अनन्तकाल तक वह अपने लोगों के अगुवे बने रहेंगे ।

**''ले जाया करेंगा''** - विश्वासी इस पृथ्वी पर उनकी मानेंगे (यूहन्ना १०:३,४,२७) और स्वर्ग चल पड़ेंगे ।

८,१ जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उन की आँखों से सब आँसू पोंछ डालेंगे।'' **जब** मेम्ने
२ ने सातवीं मुहर तोड़ी तब स्वर्ग में आधे घन्टे तक सन्नाटा छा गया। **तब** मैंने सात स्वर्गदूत देखे जो परमेश्वर
३ के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हे सात तुरहियाँ दी गयीं। **फिर** एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए वेदी
के पास खड़ा हो गया। उसे बहुत धूप (लोबान जैसा खुशबूदार पदार्थ) दिया गया, कि वह उसे सिंहासन के सामने
४ रखी सोने की वेदी पर पवित्र लोगों की बिनती के साथ चढ़ाए। **और** धूप का धुआँ पवित्र लोगों की बिनतियों
५ के साथ स्वर्गदूत के हाथ से ऊपर यहोवा परमेश्वर के सामने पहुँचा। **तब** स्वर्गदूत ने धूपदान में वेदी की आग
६ भरकर पृथ्वी पर फेंक दी। इसके बाद शोर, बादल का गर्जन, बिजली का चमकना और भूकम्प हुआ। **तब** सातों
७ स्वर्गदूत सात उन तुरहियों को फूँकने के लिए तैयार हो गए जो उनके पास थीं। **पहले** स्वर्गदूत के फूँकते ही
खून से मिले ओले व आग पृथ्वी पर फेंक दिए गए। इस से पृथ्वी का एक तिहाई हिस्सा जल गया, तथा एक
८ तिहाई पेड़ और सारी हरी घास भी जल गयी। **दूसरे** स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही मानो आग से जलते

---

**''जीवन रूपी जल''** - यूहन्ना ४:१०; ७:३८,३६ । विश्वासी अभी यह पीते रहे हैं और स्वर्ग में खत्म नहीं करेंगे । वहाँ पर भी मसीह उनको तृप्त करेंगे ।

**''सब आँसू''** - इस पृथ्वी पर आँसू के बहुत कारण हो सकते हैं (२ राजा २०:५; अय्यूब १६:२०; भजन ६:६; ४२:३; ५६:८; ११६:१३६; यिर्म ६:१; मत्ती २६:७५; लूका ७:३८, प्रेरित २०:१६,३१; फिलि ३:१८; २ तिमो १:४) । स्वर्ग में कोई नहीं होगा - २१:४; यशा २५:८; ३५:१० ।

८:१ **''सातवीं मुहर''** -छठे अध्याय में अधिकांश सात मुहरे लगे स्क्रोल खोले गए थे । अब आखिरी मुहर खोली जाती है और अब इस स्क्रौल के आखिरी भाग में से सात तुरहियाँ और क्रोध के सात प्यालों की विपत्तियाँ आती हैं । इसके पहले कि छठी मुहर खोली जाए, महाक्लेश का समय ख़त्म हो जाता है । (६:१२-१७ के नोट्स देंखे।) इस अध्याय में तुरहियाँ इस युग के अन्त में दुष्ट लोगों पर सज़ा की घोषणा करती हैं । प्यालों की आपत्ति में (अध्याय १५,१६), परमेश्वर का गुस्सा पूरी तरह से उन पर उण्डेला जाता है ।

**''सन्नाटा''**-४:८-११ से तुलना करे; ५:६-१४; ७:१०-११ । लगातार प्रशंसा के बाद यह खामोशी कुछ खास होने की ओर इशारा है। यह उस खामोशी की तरह है जो तूफान के बाद आती है । सपन्याह १:७ देखें । ''प्रभु का दिन'' वह समय है जब परमेश्वर का तेज गुस्सा दुनिया के ऊपर आएगा । यह बहुत जल्दी आनेवाला है । वह अपने इन्साफ को तुरहियों के दण्ड के रूप में प्रगट करेंगे । तुरहियों का न्याय उतना ज्यादा भीषण नहीं होगा, जितना प्यालों का होगा । ऐसा लगता है कि तुरहियों का न्याय, आनेवाले कठिन समय की घोषणा है ।

८:२ **''सात''** -यह पूरे होने की संख्या है ।

**''तुरहियाँ''**- दूसरी जगहों में भी बाईबल तुरहियों के बजाए जाने को दिखाती हैं । देखें निर्ग १६:१६; लैव्य २३:१३-२५; गिनती १०:१-८,६; यिर्म ४:१६, १ राजा १:३४,३६; २ राजा ६:१३; यहोशू ६:१३-१६ । तुरहियों के बजाए जाने के बाद हम यह सब देख सकते हैं: परमेश्वर की शान, युद्ध, परमेश्वर के लोगों का इकट्ठा होना, राजा का ज़ाहिर होना, परमेश्वर के दुश्मनों का फेंका जाना । यह सब तुरहियों के बजते और तुरन्त उसके बाद होता है ।

८:३-५ **''धूपदान''** - जलते कोयलों से भरा धातु का एक बर्तन जो धूप जलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है (लैव्य १६:१२) ।

**''धूप''** - निर्गमन ३०:१-६, ३४-३८ ।

**''पवित्र लोगों की बिनती''** - मुहरों के खोले जाने के समय परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं का महत्व है (५:८) । हम यहाँ यह तुरहियों के फूँके जाते समय भी देखते हैं । ऐसा लगता है कि जो कुछ यहाँ होता है, वह प्रार्थनाओं का जवाब है (खासकर शायद २२:२०; मत्ती ६:१० आदि की प्रार्थनाएँ । सच्ची प्रार्थना में बहुत असर होता है - याकूब ५:१६( भजन १८:६-६ से तुलना करें)।

**''सोने की वेदी''** - निर्गमन ३०:१-६; इब्रा ८:५; ६:४ ।

**''शोर, बादल का गरजना, बिजली का चमकना और भूकम्प''** - ४:५ पर नोट्स देखें । यहाँ प्रतीक और सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल हुआ है, लेकिन वे सब सचमुच की आपत्तियों की तरफ इशारा हैं ।

८:७ निर्गमन ६:२२-२६ से तुलना करें । जो कभी मिस्र में हुआ था, वह अब सारी पृथ्वी पर होगा । उससे भी भयानक - आग, खून, ओले और बिजली । यहेज ३८:२२; योएल २:३०; प्रेरित २:१६ ।

८:८,६ निर्गमन ७:१६,२१ से तुलना करें ।

८:१०,११ क्या यह जलता हुआ तारा एक उल्का हो सकता है? संभव है, लेकिन सचमुच में ऐसा है, यह नहीं कह सकते । ६:१,२

हुए बड़े पहाड़ की तरह कोई चीज़ समुद्र में डाल दी गयी, जिस से समुद्र का एक तिहाई भाग खून बन गया।
८,१० **समुद्र** के एक तिहाई जलचर मर गए और एक तिहाई पानी के जहाज भी बर्बाद हो गए। **तीसरे** स्वर्गदूत के
तुरही फूँकते ही एक बड़ा तारा मशाल की तरह जलता हुआ आसमान से नदियों और झरनों के एक तिहाई
११ पर गिरा। **वह** तारा नागदौना कहलाता है। इससे पानी का एक तिहाई नागदौना सा कड़वा हो गया। इस पानी
१२ के कड़वे हो जाने की वजह से बहुत से लोगों की मौत हो गयी। **चौथे** स्वर्गदूत के तुरही फूँकते ही सूरज का
एक तिहाई, चन्द्रमा का एक तिहाई तथा तारों के भी एक तिहाई के तेज को नाश किया गया, जिससे इनका एक
१३ तिहाई हिस्सा अंधेरा हो गया, जिससे दिन के एक तिहाई की रोशनी जाती रही। **जब** मैंने फिर देखा तो आसमान
के बीच में एक उकाब को उड़ते और बुलन्द आवाज़ में यह कहते सुना, ''उन तीनों स्वर्गदूतों की तुरही की
आवाज़ की वजह से जिनका फूँका जाना अभी बाकी है, धरती पर रहने वालों पर हाय, हाय, हाय!''
**९**,१ **जब** पाचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा। उस स्वर्गदूत को
२ अथाह कुण्ड की चाभी दी गयी। **उसने** अथाह कुण्ड को खोला और उसमें से बड़ी भट्टी का सा धुआँ उठा,
३ सूरज और वायुमण्डल दोनों उस कुण्ड के धुएँ से अंधकारमय हो गए। **इस** धुएँ में से पृथ्वी पर टिड्डियाँ छा
४ गयीं। इन टिड्डियों को पृथ्वी के बिच्छुओं की तरह ताकत दी गयी। **उन्हें** यह आज्ञा दी गयी कि वे पृथ्वी की
घास, पेड़ या किसी हरी चीज़ को नुकसान न पहुँचाएँ, लेकिन सिर्फ उन्हीं लोगों को जिनके माथे पर यहोवा
५ परमेश्वर की मुहर नहीं थी। **उन्हें** जान से मारने का हक नहीं दिया गया था। लेकिन पाँच महीने तक पीड़ा
६ पहुँचाने का आदेश था। यह पीड़ा बिच्छू के डंक मारने जैसी थी। **उन** दिनों में लोग मौत खोजेंगे, लेकिन पाएँगे

---

में ''तारा'' एक प्राणी को दिखाता है । १२:४ में तारे स्वर्गदूतों को दिखाते हैं । यह तारा वह स्वर्गदूत हो सकता है, जिसे पृथ्वी के सभी पानी के स्रोतों के १/३ को जहरीला बनाने की ताकत है । सही-सही हमें नहीं मालूम है लेकिन नागदौना का मतलब है कड़ुवाहट ।

८:१२ ६:१२,१३; १०:१२-२३; यशा १३:१० योएल २:२, आमोस ५:१८ ।

८:१३ इसके पहले की आपत्तियाँ भेजी जाएँ, उनकी चितौनी दी जाएगी ।
''हाय'' यह किसी बड़े दुख या पीड़ा को दिखाता है । इन तीन पीड़ाओं में से दो का वर्णन अध्याय ९ में किया गया है । सातवी तुरही के फूँके जाने के बाद तीसरी आती है (११:५) । अध्याय १६ में न्याय के सात प्याले, जो आखिरी तुरही के फूँके जाने पर उण्डेले जाते हैं, उनमे से वे पीड़ाएँ उण्डेली जाती हैं ।

९:१,२ यहाँ ''तारा'' एक जीवित प्राणी है, शायद एक स्वर्गदूत ।
**''चाभी''** - २०:१,३ से मिलाएँ । लूका ८:३१ दिखाता है कि अधोलोक आत्माओं की अनदेखी दुनिया का सज़ा का स्थान है । इस जगह से दुष्टात्माएँ भी डरती हैं । (२ पत २:४ से तुलना करें) । रोमि १०:७ में वही शब्द है और उसका मतलब भी मरे हुओं की जगह है ।
**''धुआँ''** - ८:४ से तुलना करें । स्वर्ग का धुआँ इस नरकीय धुएँ से फर्क है।

९:३ **''टिड्डियाँ''**- यह नहीं कहा गया है कि टिड्डियाँ अधोलोक से निकलती हैं, लेकिन यह कि उस धुएँ से जो अधोलोक से निकलता है । लेकिन शायद वे सीधे अधोलोक से निकलती हैं । यह साफ ज़ाहिर है कि वे सचमुच की टिड्डियाँ नहीं हैं (ये भारत की टिड्डियों की तरह तो हैं, लेकिन बिल्कुल वैसी नहीं । कोई भी टिड्डी बिच्छुओं की तरह नहीं होती है ।

९:४ टिड्डियाँ, घास, पौधे और पेड़ों से अपना भोजन पाती हैं ।
**''परमेश्वर की मुहर''**- ७:३ में इस्राएलियों के लिए इस्तेमाल की गयी है । लेकिन सभी विश्वासियों पर परमेश्वर की मुहर है - २२:४; इफि १:३१ यहेज ९:४-६ से तुलना करें । पाँचवी तुरही फूँकी जाती है । यह महाक्लेश के बाद तब होता है जब अधिकांश लोग मर जाते हैं । ७:९-१४,१३:१५।
**''जिनके माथे पर''** - शायद यह सांकेतिक भाषा है, जिसका मतलब है परमेश्वर की सम्पत्ति होना । परमेश्वर अपने लोगों को पहचानते हैं और उनकी रक्षा करते हैं ।

९:५ **''पाँच महीने''** -इसे मात्र सांकेतिक समझना ठीक नहीं है ।

९:६ ६:१६; यिर्म ८:३ से तुलना करें । मरना चाहेंगे लेकिन आत्महत्या से डरेंगे ।

९:७-१० ये टिड्डियाँ इस पृथ्वी पर अजीब प्राणी होंगी । घोड़े और पंख तेज गति की तरफ इशारा हैं । ताज, अधिकार को दिखाता है । मनुष्यों के चेहरे, बुद्धिमानी और व्यक्तित्व की तरफ इशारा हैं । ''टिड्डियों'' का मतलब क्या है ? अगर वे कुण्ड

७ नहीं। वे मरना चाहेंगे लेकिन मौत उनसे दूर भागेगी। **ये** टिड्डियाँ देखने में उन घोड़ों की तरह थीं जो युद्ध के
८ लिए तैयार होते हैं। उनके सिरों पर मानो सोने के ताज थे। उनके चेहरे मनुष्यों के चेहरों की तरह थे। **उनके**
९ बाल औरतों के बाल की तरह और उनके दाँत सिह के दाँत की तरह थे। **उनके** कवच लोहे के कवच की तरह
१० थे। उनके पंखों की आवाज़ लड़ाई के लिए दौड़नेवाले बहुत से घोड़ेवाले रथों के शोर की तरह थी। **उनकी**
११ पूँछें बिच्छुओं की तरह थीं। उनमें ऐसे डंक थे, जिनमें लोगों को पाँच माह तक पीड़ा देने की ताकत थी। **एक**
अथाह कुण्ड का दूत उनके ऊपर राजा था। यहूदी भाषा में उसका नाम अबद्दोन और यूनानी में अपुल्लयोन
१२ है। **पहिली** विपत्ति खत्म हुयी। देखो, इन सब बातों के बाद दो और विपत्तियाँ आनेवाली हैं। **छठवें** स्वर्गदूत के
१३ तुरही फूँकते ही, मैंने परमेश्वर के सामने की सोने की वेदी के चार सींगो में से एक आवाज़ सुनी। **वह** छठवें
१४ स्वर्गदूत से जिसके पास तुरही थी, कह रहा था, ''उन चार स्वर्गदूतों को जो फरात महानदी के पास रोके गए
१५ हैं, आज़ाद कर दो।'' **वे** चार स्वर्गदूत जो इस पल, दिन, माह और साल के लिए रखे गए हैं, आज़ाद कर
१६ दिए गए ताकि वे पृथ्वी की सारी जनसंख्या की एक तिहाई को मार डालें। **मैंने** सेना के घुड़सवारों की गिनती
१७ सुनी जो बीस करोड़ थी। **मुझे** दर्शन में घोड़े और उनके सवार इस तरह दिखाई दिए: वे सवार कवच पहिने
थे जो आग धूम्रपान और गंधक के रंगों की तरह था, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे और
१८ उन के मुंह से आग, और धुआं और गंधक निकलता था । **इन** तीन महामरियों अर्थात - उन के घोड़ों के मुँह
१९ से निकलने वाली आग, धुआँ और गन्धक से मानव जाति की एक तिहाई मार दी गयी। **उन** घोड़ों की ताकत
उनके मुँह और पूँछ में थी, क्योंकि उनकी पूँछ साँपों की तरह थी, जिनमे सिर थे। इन्हीं से वे नुकसान पहुँचाते
२० थे। **फिर** भी महामारियों से बचे लोग जो नहीं मारे गए थे, अपने बुरे कामों में बने रहे - यह कि उन्होंने मृतक, सोने, चाँदी,

---

(अधोलोक) से निकलती हैं (पद २,३), तो ऐसा लगता है कि वे आत्माएँ या दुष्टात्माएँ हैं । अगर वे सिर्फ उस धुएँ से पैदा होती हैं जो अधोलोक से निकलता है, तो वे एक दूसरी विपत्ति है जो दुनिया में काम करनेवाले शैतान और उसके सहायकों की वजह से है ।

९:११ अबादोन और अप्पोल्लयोन का मतलब है ''बर्बाद करने वाला'' । कुछ सोचते हैं वह शैतान है और हो भी सकता है । हमें मालूम है । शैतान लोगों को नाश करनेवाला है - यूहन्ना ८:४४; इब्रा २:१४; १पत ५:८ । फिर भी अगर वह बहुत सी टिड्डियों के साथ कुण्ड या अधोलोक में बन्द है तो वह शैतान नहीं हो सकता । शैतान को कुण्ड (अधोलोक) में तब तक नहीं डाला जाएगा जब तक यीशु न आ जाए -२०:१-३ । हम यह भी देखें कि टिड्डियों के दल लोगों को नहीं मारेंगे (पद ५) ।

९:१२ **''दो और विपत्तियाँ''** - पद १३-१९; १६:१ ।

९:१३ **''सींग''** - ८:३,४ सींग वे कोने हैं जो ऊपर की ओर इशारा करते हैं।

९:१४ **''चार स्वर्गदूतों ......आज़ाद कर दो''** - साफ है कि ये ७:१ में वर्णित स्वर्गदूत नहीं हैं ।
**''रोके गए''** - शायद दिखाता है कि जब तक परमेश्वर अनुमति न दे वे कुछ नहीं कर सकते ।
**''फरात''** -१६:१२ भी देखें । यह लम्बी नदी टर्की से निकल सीरिया और ईराक होती हुयी फारस की खाड़ी में जाती है ।

९:१५ **''जो इस पल,......साल''** - सब भविष्य में होनेवाली बातें परमेश्वर के वश में हैं और काम का समय नियुक्त है ।
**''मार डालें''** - पद १६- १९ से लगता है कि स्वर्गदूत एक सेना का इस्तेमाल करते हैं । इसका मतलब यह नहीं कि चार स्वर्गदूत इतने लोगों को खुद मार नहीं सकते हैं । तुलना करें २ इति ३२:२१ ।
''जनसख्या की एक तिहाई'' इतने अधिक लोगों की मौत का मतलब है बर्बादी के तमाम भयंकर तरीके ।

९:१६-१९ योएल २:२-११ से तुलना करें । २० करोड़ एक बड़ी संख्या है । इस समय इस दुनिया की सारी सेनाओं की संख्या इसके नज़दीक भी नहीं पहुँचेगी ।
**''गिनती सुनी''** - पद १६। उसे मालूम था कि संख्या बड़ी है । यहाँ भयंकर और अजीब घोड़े किस तरफ इशारा करते हैं? बड़ी फौज खतरनाक हथियार लिए हुए । पृथ्वी पर दुष्ट आत्माएँ छोड़ी जाती हैं ? कौन निश्चयता से कह सकता है ? जब तक घटनाएँ न घटें दूसरी और भविष्यद्वाणियों की तरह हम जान नहीं सकते कि ये कैसे घटेंगी । क्या हमें जानने की ज़रूरत भी है ?

९:२०,२१ **'बाज नहीं आए''** - १६:९,११; मत्ती ३:२,८; लूका १३:३-५; प्रेरित १७:३० । हर तरह की पीड़ा, आपत्ति के बावज़ूद इन्सान मन बदलने से इन्कार करेगा। वे मूर्तियाँ, और गंदी आदतों को नहीं छोड़ेगे हालाँकि चारो तरफ लोग मर रहे होंगे । ध्यान दें, कि किस तरह की बुराइयों में वे लोग फँसे होंगे । वही बुराइयाँ जो अन्त के दिनों में आम बात होंगी ।

पीतल, पत्थर और लकड़ी की मूर्तियों की पूजा बन्द नहीं की और उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। ये मूर्तियाँ न
२१ तो देख सकती, न सुन सकती और न चल सकती थीं। **महामारी** से बचे हुए लोग हत्या करने, जादू टोने
**१०,**१ व्यभिचार, और चोरी करने से बाज़ नहीं आए। **फिर** मुझे एक और ताकतवर स्वर्गदूत बादल ओढ़े हुए स्वर्ग
से उतरता दिखाई दिया। उसके सिर पर मेघ-धनुष था। उसका चेहरा सूरज की तरह और पाँव आग के खम्भे
२ की तरह थे। **उसके** हाथ में एक खुली हुयी छोटी सी किताब थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर और बायाँ
३ पृथ्वी पर रखा। **वह** बुलन्द आवाज़ से ऐसा चिल्लाया जैसे शेर दहाड़ रहा हो। उसके चिल्लाने से गर्जन के सात
४ शब्द सुनायी दिए। **गर्जन** के सातों शब्द खत्म हो जाने पर मैं लिखने वाला ही था, लेकिन मुझे आसमान में से
एक शब्द यह कहते हुए सुनाई दिया, ''जो बातें गर्जन के सातों शब्दों ने कही हैं, उन पर मुहर लगा दो
५ और उन्हें मत लिखो।'' **तब** जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना दाहिना
६ हाथ स्वर्ग की तरफ उठाया। **उसने** परमेश्वर जो हमेशा-हमेशा जीवित हैं और जिन्होंने स्वर्ग और उसकी सब
चीज़ों, पृथ्वी और उसकी सब चीज़ों तथा समुद्र और उसकी सब चीज़ों को बनाया है उनकी शपथ खाकर कहा,

---

**''दुष्टात्माओं की''** - व्यवस्था ३२:१७,१ कुरि. १०:२० । लोग इन्हें ईश्वर समझ कर उनकी उपासना करेंगे ।

**''मूर्तियों''** - व्यवस्था ४:२८, भजन ११५:३-८; यशा ४० :१८,२२; ४४:१२-२० ।

**''हत्या''** - मनुष्य के बुराई में फँस जाने के बाद शुरूआत से हत्या करना आम बात रही है । अभी तो बहुत ज़्यादा हम यह देखते हैं ।

**''जादू टोने''** - प्रेरित ८:९-११; १९:१७-२०; निर्ग ७:११,१२,२२, ८:७,१८,१९; व्यव. १८:१०-१२; प्रका २१:८; २२:१५।

**''व्यभिचार''** - एक बुराई जो लोगों को दबोचे हुए है (नीति २:१६-१९) । देखें १ कुरि. ६:९,१०; इफि ५:३-७; इब्रा १३:४; प्रका. २१:८; २२:१५।

**''चोरी''** - निर्ग २०:१५; यिर्म ७:९,१०; मत्ती १५:१९; रोमि २:२; इफि ४:२८ । यह तो एक साधारण सी बात समझी जाती है । परमेश्वर की निगाह में यह क्या है -१कुरि. ६:१० ।

१०:१ जैसे छठीं और सातवीं मुहर के बीच, वैसे ही छठीं और सातवीं तुरही के बीच एक समय है । यह खामोशी का समय सीधे छठीं तुरही बजने पर नहीं है, लेकिन एक अवकाश है कि इस युग के आखिर की घटनाओं पर ध्यान दें । यह ११:१५ तक है । ऐसा लगता है कि इनमें से कुछ घटनाएँ (११:१-६) किसी भी तुरही के बजने से पहले या छठीं और सातवीं मुहर के खोले जाने से पहले होंगी ।

१०:१-३ यहाँ बादल और मेघधनुष परमेश्वर की उपस्थिति से जुड़े हैं - १:७; ४:३; १४:१४ ।

**''चेहरा सूरज की तरह''** - पाँव आग के खंभे'' ये १:१५,१६ में मसीह के दर्शन को दिखाते हैं । ''शेर'' (पद ३) यहूदा के कबीले के शेर की तरफ संकेत है ।

**''अपना दाहिना पाँव''**-यह जीत को दिखाता है । व्यव. ११:२४ देखें और यहोशू १:३ भी । अगर यहाँ यह मतलब है (कुछ ज्ञानी इन्कार करते हैं) तो ऐसा लगता है कि यह स्वर्गदूत मसीह हैं । उन्हीं को इस दुनिया को दावे के साथ अपना कहना सही है । लेकिन क्या यीशु मसीह को इस किताब में कहीं स्वर्गदूत कहा गया है ? नहीं, लेकिन उन्हें स्वर्गदूत (संदेश देने वाला) कई जगह कहा गया है ? देखें उत्पत्ति १६:७ । फिर भी क्या यह मुमकिन है कि यीशु को अन्य ''ताकतवर स्वर्गदूत'' कहा जाए ? ऐसा लगता तो नहीं है । इसलिए हम ज़ोर डालकर नहीं कह सकते कि स्वर्गदूत मसीह हैं । वह ५:२ का ताकतवर स्वर्गदूत मसीह हो भी सकते हैं और नहीं भी ।

१०:२ **''छोटी किताब''**-यह ५:१ की सात मुहरों वाली किताब नहीं हो सकती है । इसे छोटी किताब (स्क्रॉल) कहा गया है । ५:१ की किताब स्वर्ग में थी और पूरी तरह से खोली नहीं गयी थी । लेकिन स्वर्गदूत, यूहन्ना से स्क्रौल को खाने के लिए कहता है । ऐसा लगता है कि इस छोटी किताब (स्क्रॉल) में कुछ और दर्शन तथा भविष्यद्वणियाँ हैं (जैसा १२ से १४ और १७,१८ में लिखा है) जो क्रम से खुलने वाली मुहरों और तुरहियों के फूँके जाने या प्यालों में से उण्डले जाने की वजह से नहीं थी । देखें यूहन्ना के किताब खाने के बाद स्वर्गदूत क्या कहता है - पद ११ ।

१०:४ ये सात गर्जन क्या दिखाते हैं ? कोई नहीं जानता और हमें अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं । व्यवस्था २९:२१ ।

**''मुहर लगा दो''** - दानिय्येल १२: ४,९ से तुलना करें । १०:५,६ यह गंभीर क्षण है । इस किताब में लिखी बातों, घटनाओं आदि को समझने के लिए जो स्वर्गदूत कह रहा है, उसे समझने की ज़रूरत है ।

१०:६ **''देर नहीं होगी''** - थोड़ी देर के बारे में ६,१०,११ में लिखा था । यहाँ देर हो भी चुकी है - अब समय आया है कि संसार के लोगों का इन्साफ हो और सृष्टिकर्ता अपने लोगों के बदले लोगों को सज़ा दें ।

७ "अब और देर नहीं होगी।" **सातवें** स्वर्गदूत के आवाज़ देने के दिनों में जब वह तुरही फूँकनेवाला होगा, तो
परमेश्वर की छिपी बात पूरी हो जाएगी, जिसकी सूचना उन्होंने पहले से अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं को दी
८ थी। **और** जिस शब्द करनेवाले को मैंने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा; कि जा,
६ जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले। **तब** मैंने उस स्वर्गदूत
के पास जाकर कहा, "यह छोटी किताब मुझे दे दो।" उसने मुझसे कहा, "लो और इसे खा लो। यह तुम्हारे
१० पेट को कड़ुवा कर देगी, लेकिन मुँह में शहद की तरह मीठी लगेगी।" **मैंने** उस किताब को स्वर्गदूत के हाथ
से लेकर खा लिया। वह मेरे मुँह में शहद जैसी मीठी लगी। लेकिन उसके खाने के बाद मेरा पेट कड़वा हो गया।
११ **इसके** बाद मुझसे कहा गया कि तुम्हें बहुत से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं के सामने फिर भविष्यवाणी
**११,**१ करनी पड़ेगी। **किसी** ने एक छड़ी देते हुए मुझ से कहा, "उठो, यहोवा परमेश्वर के मन्दिर और वेदी और उसमें
२ आराधना करने वालों को नाप लो। **और** भवन का बाहरी आँगन छोड़ दो। उसे मत नापो, क्योंकि वह गैरयहूदियों
३ के लिए है। वे बयालीस महीने तक पवित्र नगर को रौदेंगे। **मैं** अपने दो गवाहों को अधिकार दूँगा और वे टाट

---

१०:७ सातवीं तुरही के समय में युग के अन्त का समय होगा - 'दिनों' का मतलब है, थोड़ा समय 'वर्ष या लम्बा अनिश्चित समय नहीं । ये दिन समय देंगे ताकि सज़ा के प्याले उण्डेल जाएँ (अध्याय १५,१६) ।

**"परमेश्वर की छिपी बात"** - न्यू टेस्टामेन्ट में छिपी या रहस्य की बात वह है जिसे परमेश्वर रोशनी में लाते हैं । अगर परमेश्वर खुद ऐसा न करें तो उन्हें कोई भी जान सकता । ऐसी तमाम बातें बाईबल में हैं । देखें मत्ती १३:११; रोमि ११:२५; १कुरि १५:५१,५२; इफि ३:३-१०; ५:२२; कुलु १:२४-२७; २ थिस्सु २:७; १ तिमो. ३:१६ । सातवीं तुरही तक इनमें से कौन सी गुप्त बातें खत्म हो चुकेंगी? या "परमेश्वर की छिपी" में क्या तमाम बातें आती हैं ? या इफि १:६,१० में जिस की बात पौलुस करता है, उसी में सब बातें है ? ऐसा हो सकता है । सातवी तुरही के बजने पर होनेवाली घटनाओं पर ध्यान दें-११:१५-१८ ।

१०:६ **"खा लो"** - यहेज ३:१,२ से तुलना करें ।

**"पेट को .....शहद की तरह"**-यह मीठी थी, क्योंकि इसमें परमेश्वर का संदेश था । तुलना करें भजन १६:६,१०; ११६:१-३; यिर्म. १५:१६; यहेज ३:३। यह पेट में कडुवी थी - जब आनेवाले इन्साफ की भविष्यद्वणियाँ समझीं जाती हैं और अपनायी जाती हैं, तो वे दुखदायी और कड़वी उन्हें लगती हैं, जिनके पास प्यार और दया है । तुलना करें यहेज २१:६,१२; यिर्म. ६:१; १०:१६; १३:१७; यशा २२:४; भजन ११६:५,१३६ । यह सच्चे भविष्यद्वक्ताओं का चिन्ह है ।

१०:११ **"भविष्यद्वाणी"** - १:२,३ ।

**"इसके बाद"** - इसका मतलब हो सकता है कि जिस बातों और लोगों के बारे में यूहन्ना भविष्यद्वाणी कर चुका था, उसे फिर उनके बारे में भविष्यद्वाणी करना है ।

११:१,२ **"भवन"** - स्वर्ग के भवन नहीं, पृथ्वी के भवन की बात है । यह यरूशलेम "पवित्र शहर" (पद ८; मत्ती ४:५; २७:५३) में है । यह यहूदियों का प्रार्थना भवन था और परमेश्वर को समर्पित था । भवन के बाहरी हिस्से में गैर यहूदी और भीतरी हिस्से में यहूदी जाते थे । आज और यूहन्ना के आखिर के दिनों में कोई प्रार्थना भवन यरूशलेम में नहीं था । यीशु के समय का भवन ७० ए.डी. में बर्बाद किया गया था (मत्ती २४:२ लूका १६:४१-४४) । यूहन्ना को मिले संदेश से लगता है कि इस युग के आखिर में प्रार्थना भवन होगा, देखें मत्ती २४:१५; २ थिस्स २:४।

**"नाप लो"**- एक इशारा जो दिखाता है कि एक जगह बचाव या बर्बादी के लिए है । २ राजा २१:१३; यशा ३४:११; विलापगीत २:८; ज़कर्याह २:१-५ ।

**"गैर यहूदियों के लिए"** -अन्त के समय में थोड़ा सा समय होगा जब दूसरे लोग शहर को ले लेंगे, जकर्याह १४:२ से तुलना करें ।

**"बयालीस महीने"** - १३:५ यही १२६० दिन हैं । (पद ३; १२:६) एक समय, और आधा समय १२:१४ । इसका मतलब लगता है कि यह सीमित समय है । देखें दानि ७:२५; ६:२७; १२:७ ।

११:३,४ **"दो गवाहों"** - कुछ सिखाते हैं कि ये दोनों एक यहूदी विश्वासियों की तरफ इशारा हैं जो इस युग के आखिर के महाक्लेश के समय होंगे । दूसरे लोग सोचते हैं कि क्योंकि उन्हें "दो दीपदान" कहा गया है, वे साक्षी देने वाली मण्डलियों की तरफ इशारा हैं ।(तुलना करें १:२०) । कुछ दूसरे इन्हें दो व्यक्ति ही समझते हैं । पद ५:१२ की भाषा इस दूसरे विचार को ज्यादा सही समझती हैं । कुछ ज्ञाताओं का ख्याल यह है कि मूसा और एलिय्याह हैं (जा पहाड़ पर यीशु के रूप बदलने के समय

४ ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे। **ये** जैतून के दो पेड़ और दो दीपदान हैं जो पृथ्वी
५ के स्वामी के सामने खड़े रहते हैं। **अगर** उन्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकलकर
उनके दुश्मनों को भस्म करती है। अगर कोई उनको नुकसान पहुँचाना चाहेगा, तो ज़रूर इस तरह से मार डाला
६ जाएगा। **इन्हें** यह हक है कि आसमान को बन्द कर दें कि उनकी भविष्यवाणी के दिनों में बरसात न हो। उन्हें
सब पानी पर हक है, कि उसे खून बना डालें। यह भी कि जब चाहे तब पृथ्वी पर हर तरह की विपत्तियाँ
७ लाएँ। **जब** वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उनसे युद्ध करेगा और उन
८ पर जीत हासिल करके उन्हें मार डालेगा। **उनकी** लाशें उस बड़े शहर के चौराहे में पड़ी रहेंगी। यह शहर
९ आत्मिक रूप से सदोम और मिसर कहलाता है। वहीं उनके प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए थे। **सभी** राष्ट्रों, कुलों,
भाषाओं और राज्यों के लोग साढ़े तीन दिन तक उनकी लाशों को देखते रहेंगे, लेकिन उन लाशों को कब्रों मे
१० रखने न देंगे। **पृथ्वी** के रहनेवाले उनकी मौत से खुश होंगे और जश्न मनाएँगे। वे एक दूसरे को इनाम भेजेंगे,
११ क्योंकि इन दोनों भविष्यवक्ताओं ने पृथ्वी के रहनेवालों को सताया था। **साढ़े** तीन दिन के बाद यहोवा परमेश्वर

---

थे -मत्ती १७:३) । बाईबल में कहीं यह इशारा नहीं है कि मूसा फिर आकर मरेगा । जहाँ तक एलिय्याह का सवाल है (जो मरा नहीं था - २ राजा २:११) । देखें मलाकी ४:५; मत्ती १७:११ । बिना मरे दूसरा व्यक्ति जो स्वर्ग गया, हनोक था (इब्रा ११:५) । उसने अन्त के दिनों के बारे में भविष्यद्वाणी की थी (यहूदा १४,१५) । क्या वह वापस आकर इसी पृथ्वी पर मरेगा? यह बात कौन निश्चयता के साथ कह सकता है ?

**"जैतून के दो पेड़"** -ज़कर्याह ४:३-१४ ।

**"दो दीपदान"** - सात दीपदान सात कलीसियाएँ हैं (१:२०) फिर भी यह असम्भव नहीं कि दो दीपदान दो गवाही देनेवाले झुण्ड या व्यक्तियों की तरफ इशारा हैं और मण्डलियाँ नहीं हैं । दीपदान उन्हें दिखाते हैं जो परमेश्वर के लिए रोशनी हैं और यीशु को भी जो खुद रोशनी हैं ।

११:५ **"मुँह से आग निकलकर"** - यह मात्र एक इशारा है लेकिन किस बात का ? तुलना करें २ राजा १:६-१२ । उन्हें बोलना है और परमेश्वर उनके लिए काम करेंगे ।

**"दुश्मनों को .. करती है"** - ये गवाह मण्डलियों की तरफ इशारा नहीं है, क्योंकि मण्डली अपने दुश्मनों को नाश नहीं करती है ।

११:६ **"आसमान को बन्द कर दें"** - १ राजा १७:१ और याकूब ५:१७ से तुलना करें ।

**"खून बना डालें"** - निर्ग ७:२०; ८:५,६,१६; आदि । क्योंकि ये सब बातें इतिहास में हुयी हैं । क्या ऐसा कुछ सबूत है कि ऐसा भविष्य में नहीं होगा ?

११:७ **"गवाही दे चुकेंगे"** -उनके काम के लिए परमेश्वर एक समय निर्धारित करेंगे, जब तक उनका काम पूरा न हो ।

**"पशु"** - देखें १३:१-८; १७:३,७-११ । २ थिस्स २:३,४; १ यूहन्ना २:१८ से तुलना करें ।

**"अथाह कुण्ड"**-९:१ के नोट्स। "अथाह कुण्ड से" का मतलब है मरे लोगों की जगह से पशु निकलता है । १३:३;१७:८।

**"मार डालेगा"** - १३:७ से तुलना करें । पशु का दूसरा नाम है ख्रीस्त विरोधी । उसके पास बड़ी ताकत होगी और यह अनुमति मिलेगी कि बहुत से परमेश्वर के लोगों को मार डाले । फिर भी परमेश्वर इस संसार को अपने वश में रखेंगे और जो कुछ होता है उसमें खास उद्देश्य होगा । यह सच्चाई कि दोनों गवाह यरूशलेम में होंगे और पशु उन्हें मार डालेगा, इस बात की पुष्टि नहीं कि उस समय तक उसका मुख्य केन्द्र वहाँ होगा (१७:९,१०,१८ पर नोट्स देखें)। कुछ दूरी से भी वह मारा जा सकेगा या इस समय पर व्यक्तिगत रीति से यरूश्लेम आ सकता है ।

११:८ यहाँ एक बड़े शहर का मतलब यरूशलेम से है । यह वही शहर है जहाँ यीशु मारे गये थे । यशा १:८-१० में यरूशलेम को सदोम भी कहा गया है । बाईबल में "मिस्र" का मतलब आत्मिक गुलामी है ।

११:९ इतने थोड़े समय में इतने ढेर से लोग कैसे देखने पाएँगे ? क्या टेलिविज़न के इन समयों में मुश्किल होगा ?

**"लाशों"** और "कब्रों में रखने" का मतलब है लोगों का व्यक्तिगत रीति से मरना।

११:१० यहाँ देखें स्वभाव से इन्सान क्या है । परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं की मौत अच्छी खबर है । मनुष्य परमेश्वर के सत्य को नहीं जानता । इससे उसे पीड़ा होती है । और जब नहीं सुनता तब शान्ति महसूस होती है । तुलना करें यूहन्ना ३:१९,२०; रोमि ८:५-८ ।

११:११ दुष्ट लोगों का समय हमेशा का नहीं है। (अय्यूब २०:५) से तुलना करें । इस भाषा से लगता है कि शारीरिक जी उठने की बात है । मरे हुओं के जी उठने की बात है ।

की तरफ से ज़िन्दगी की साँस उनमें समा गयी। वे अपने पैरों पर खड़े हो गए और उनके देखनेवालों पर भारी
१२ डर छा गया। **उन्हें** स्वर्ग से एक बुलन्द आवाज़ सुनाई दी, कि यहाँ ऊपर आओ। यह सुनकर वे बादल पर सवार
१३ होकर अपने दुश्मनों के देखते देखते स्वर्ग पर चढ़ गए। **फिर** उसी क्षण एक बड़ा भूकम्प आ गया। शहर का
दसवाँ भाग गिर पड़ा। उस भूकंम्प से सात हज़ार लोग मर गए। बाकी बचे लोग डर गए और स्वर्ग के बनानेवाले
१४,१५ की बड़ाई की। **दूसरी** विपत्ति खत्म हुयी, देखो, तीसरी विपत्ति जल्दी आनेवाली है। **जब** सातवें दूत ने तुरही फूँकी,
१६ तो स्वर्ग में बुलन्द आवाज़ उठ रही थी, लोग कह रहे थे, "दुनिया का राज्य हमारे स्वामी और उनके मसीह का राज्य
१७ बन गया है और वह हमेशा-हमेशा तक राज्य करेंगे।" **तब** चौबीस बुज़ुर्ग जो यहोवा परमेश्वर के सामने अपने
अपने सिंहासनों पर बैठे थे, मुँह के बल गिर पड़े। उन्होंने यह कहते हुए आराधना की, "**हे** सर्वशक्तिमान
स्वामी परमेश्वर, जो हैं, जो थे, हम आपका धन्यवाद करते हैं, कि आप अपने बड़े अधिकार को लेकर शासन
१८ करने लगे हैं। **गैरयहूदियों** ने गुस्सा किया और आपका प्रकोप उन पर आ पड़ा। वह समय आ पहुँचा है, कि
मरे हुओं का इन्साफ किया जाए। साथ ही आपके सेवक भविष्यवक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन
छोटों-बड़ों को जो आपके नाम से डरते हैं, प्रतिफल दिया जाए। यह भी कि पृथ्वी के बिगाड़नेवाले बर्बाद कर दिए
१९ जाएँ। **परमेश्वर** का भवन जो स्वर्ग में है, वह खोला गया और उनके भवन में उन की वाचा का बक्सा दिखाई
**१२**,१ दिया। तभी बिजलियाँ, शब्द, गर्जन और भूकम्प हुए और बड़े ओले गिरे। **फिर** स्वर्ग पर एक बड़ा निशान
दिखायी दिया - एक महिला सूरज को ओढ़े हुए थी, चाँद उसके पैरों के नीचे और सिर पर बारह तारों का

---

११:१२ यह भी एक घटना की तरफ इशारा है । उनके उठाए जाने का, जो मरते हैं और फिर जी उठते हैं ।
**"बादल"**- प्रेरित १:९ से तुलना करें ।

११:१३ एक ज़ोरदार भूकम्प से ७००० लोगों का मरना यह सबूत है कि यह वास्तविक शहर (२,८) यरूशलेम है । यह सर्वजगतीय नहीं, स्थानीय घटना है । जीते हुए लोगों पर इसका अच्छा असर होता है । (१६:९,११ से तुलना करें) ।

११:१४ **"दूसरी विपत्ति"** - वे घटनाएँ जो छठी तुरही के समय में होती हैं । देखें ८:१३; ९:१२ । "अभी" -इसका मतलब है "देखो"।
**"तीसरी"** - सातवीं तुरही बजने पर कोप के सात प्याले आते हैं । वे तीसरी और आखिरी विपत्तियाँ हैं ।

११:१५ सातवीं तुरही इस किताब में यीशु के वापस आने से पहले आखरी है । मत्ती २४:३०,३१; १ कुरि १५:५१,५२; १थिस्स. ४:१६। ख्रीस्त विरोधी के उठने और महाक्लेश के बाद बजते है ।
**"दुनिया का राज्य....**१९:१५,१६; मत्ती ६:१०; १३:४०-४३; १६:२८;२५:३१; लूका १:३२,३३; प्रेरित १:६,७; भजन २:१-१२; यशा ११:१-९; दानि २:४४,४५ । एक खास विषय प्रकाशित वाक्य में है - खुली रीति से परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपना शासन कायम करेंगे । यह किताब दिखाती है कि दूसरे लोग कैसे शासन करते हैं । कैसे अधिकार को नाश किया जाता है। और मसीह किस तरह दुनिया पर राज्य करते हैं । मत्ती ४:१७ में परमेश्वर के राज्य पर नोट्स देखें । सातवीं तुरही बजने पर (१९:११-१६) लगता है बुज़ुर्ग लोग आखरी घटना के समय में खड़े हैं ।

१२:१ इसके पहले १५,१६ अध्याय में गुस्से (आक्रोश) के सात प्याले उण्डेले जाएँ, की जो बातें हुयी उनमें यह एक दूसरी शुरूआत है।इस युग का अन्त सातवीं तुरही से होता है । लेकिन ऐसा लगता है कि १२-१ अध्याय पीछे मुड़कर उन घटनाओं को देखता है जो सातवीं तुरही से पहले घटती हैं । उन दिनों के बारे में हमें और ज्यादा जानकारी मिलती है ।
**"महिला"** - कई मत हैं । लेकिन देखेंगे कि उसके बारे में क्या लिखा हैं ।
वह एक "चिन्ह" है - इसका मतलब है कि हम उसे सचमुच में स्त्री नहीं समझें, लेकिन उसका मतलब क्या है। इस बात की पुष्टि उसके लिए इस्तेमाल हुए दूसरे प्रतीक से होती है ।
वह "स्वर्ग" में दिखई देती है -"आकाश में" भी एक सही अनुवाद है । दूसरी, उसकी स्वर्गिक बुलाहट दिखाई देती है । पृथ्वी के दूसरे देशों से बढ़कर उसकी जगह है (व्यवस्था ७:६ से तुलना करें) ।
सूरज, चाँद और सितारों से वह जुड़ी हुयी है (उत्पत्ति ३७:९,१०) ।
वह एक ताज पहनती है जो शासन का अधिकार दिखाता है (मत्ती १६:२८; प्रेरित १:६,७; यशा २:१-५ आदि उसने एक ऐसे बेटे को जन्म दिया जो दुनिया पर राज्य करेगा (पद ५ तुलना करें १९:१५,१६)।
इस युग के अन्त में वह एक बड़ा सताव सहेगी (पद ६:१३-१५) । तुलना करें यिर्म ३०:७-९; दानि १२:१ । उसके अलावा और भी बच्चे हैं, जो शासन करेंगे (पद १७) ।
इस कारण हमारा मत है कि यह महिला इस्राएल को दिखाती है । ओल्ड टेस्टामेन्ट में इस्राएल को "परमेश्वर की पत्नी"

२ ताज था। **वह** गर्भवती थी, और बच्चे को जन्म देने से पहले जच्चा की पीड़ा की वजह से चिल्ला रही
३ थी। **एक** और निशान स्वर्ग में दिखाई दिया : देखो, लाल रंग का एक बड़ा सा अजगर था। उसके सात सिर, दस
४ सींग थे और सभी सिरों पर एक एक ताज था। **उसने** अपनी पूँछ से आकाश के तारों का एक तिहाई भाग
खींचकर पृथ्वी पर फेंक दिया। वह अजगर उस महिला के सामने खड़ा हो गया जो बच्चे को जन्म देने वाली थी।
५ वह बच्चे को उसके जन्म होते ही खा लेना चाहता था। **महिला** ने एक बेटे को जन्म दिया जो लोहे के राजदण्ड
से सभी देशों पर शासन करने वाला था। उस महिला का बच्चा अचानक ही यहोवा परमेश्वर और उनके सिहाँसन
६ के पास उठाकर पहुँचा दिया गया। **लेकिन** वह महिला भागकर उस जंगल में चली गयी, जहाँ यहोवा परमेश्वर की
७ तरफ से एक जगह तैयार की गयी थी, ताकि वहाँ एक हज़ार दो सौ साठ दिनों तक पाली जाए। **फिर** स्वर्ग में
एक युद्ध हुआ। मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने के लिए निकले और अजगर तथा उसके दूतों
८ के साथ उनका घमासान युद्ध छिड़ गया। **अजगर** और उसके दूतों को मुँह की खानी पड़ी और वहाँ उनके लिए

---

भी कहा गया है । यशा ५४:५ यिर्म ३:१४,३१:३२ इसलिए वह आसमान में शान से दिखती है ।

१२:२ यह पद २००० साल पहले यीशु के जन्म को दिखाता है ।

१२:३ **"अजगर"** - शैतान (पद ६) । इस किताब में तमाम प्रतीको में से यह एक है (६:५ के नोट्स देखें) ।

**"सात सिर दस सींग"** - १३:१ से तुलना करें । सात सिर दुष्ट बुद्धिमानी और अगुवापन की पूर्णता की तरफ इशारा हैं; दस सींग दुनिया की ताकत को दिखाते हैं (१७:१२) ।

**"सात ताज"** - अन्धेरे (दुष्टता) और बुराई के दायरे पर शासन करने का पूरा अधिकार (इफि ६:१२) । १:४ में "सात" पर नोट्स देखें ।

१२:४ यहाँ दिखता है कि शुरू में लूसीफर की गिरावट और उसके संगी साथियों की तरफ इशारा है ।

**"तारें"** - ६:१ से तुलना करें । शैतान के पास भी स्वर्गदूत हैं - पद ७ की तस्वीर का इशारा है कि शैतान इतना बड़ा और ताकतवर है कि वह एक तिहाई तारों को उनकी जगह से हिला सकता है । लेकिन पहला मतलब ज़्यादा सही दिखता है ।

**"खा लेना चाहता था"** - शैतान मसीह को बर्बाद करना चाहता था । कोई शक भी नहीं कि वह हेरोद राजा की कोशिश में शामिल था । (मत्ती २:१३-१६) ।

१२:५ यीशु इस्राएल के कबीले यहूदा के बेटे के रूप में पैदा हुए थे (५:५; रोमि १:३; गल ४:४) ।

**"लोहे का राजदण्ड"** - १६:१५; भजन २:६।

**"सिंहासन के पास पहुँचा दिया"** - ३:२१; ५:६; ७:१७; प्रेरित १:६; २:३२-३६; इब्रा १:३,४ । क्या यह किसी और जन या दूसरे लोगों के बारे में कहा जा सकता है ।

१२:६ **"१२६० दिन"** - पद १४; ११:३; १३:५ (११:२ में नोट्स देखें) । यह वास्तविक समय होना चाहिए । यह इस युग के आखिर की तरफ एक इशारा है जब शैतान स्वर्ग से बाहर खदेड़ा जाता है (पद ८:१३) । यीशु के तुरन्त स्वर्ग पर उठा लिए जाने के तुरन्त बाद १,२६० का समय शुरू नहीं होता है । १:५ पद में जो कुछ महिला के बारे में कहा गया है, वह इसलिए है ताकि हम उसे पहचान सकें । सब कुछ पढ़ लेने के बाद उसके इतिहास के बारे में कुछ कहना ज़रूरी नहीं है । इसलिए इस महिला के भविष्य के बारे में एक बड़ी घटना का वर्णन है । हमेशा से पहली शताब्दी से आखिर तक ।

१२:७ **"स्वर्ग में एक युद्ध"**-शैतान और गंदी आत्माएँ अभी आसमानी दायरों में हैं - इफि ६:१२ (इफि १:३ पर नोट्स देखें) । इसका मतलब स्वर्ग ही है । परमेश्वर की उपस्थिति में अभी शैतान दाखिल होता है - पद १०; अय्यूब १:६,७ (१ इतिहास २१:१ में शैतान पर नोट्स देखें) । ऐसा लगता है कि उसको हकालने का युद्ध इस युग के आखिर में है । जब शैतान निकाल दिया जाता है तो कहा जाता है कि परमेश्वर का राज्य आया है ।.........(१०) और वह जानता है "कि उसके पास थोड़ा सा समय ही है" (पद १२) । यह भी ध्यान दें कि वह महिला को सिर्फ १२६० दिन पीड़ा दे सकेगा ।

**"मीकाईल"** - दानिय्येल १०:१३,२१, १२:१; यहूदा ६। यह बड़ा स्वर्गदूत इस्राएल देश का रक्षक है ।

१२:८ **"मुँह की खानी"** -शैतान को स्वर्ग से (स्वर्गिक दायरों) बहुत पहले फेंका जाना चाहिए था । हाँ, अगर यह परमेश्वर का बुद्धिमानी का फैसला होता ।

**"कोई जगह न रही"** - भविष्य के लिए परमेश्वर की योजना पूरी होगी, जिसमें शैतान का कोई हिस्सा न होगा ।

१२:६ **"साँप"** - उत्पत्ति ३:१:५; यशा १७:१; २कुरि. ११:३ ।

**"शैतान"** - मत्ती ४:१-५; यूहन्ना ८:४४।

९ कोई जगह न रही। **तब** वह बड़ा अजगर नीचे गिरा दिया गया - वही पुराना साँप जो इबलीस और
१० शैतान कहलाता है और सारी दुनिया को बहकाता है। वह पृथ्वी पर अपने दूतों समेत गिरा दिया गया। **तब** मैंने
स्वर्ग में बुलन्द आवाज़ में किसी को यह कहते सुना, ''अब हमारे यहोवा परमेश्वर की मुक्ति, शक्ति, शासन
और उनके मसीह का अधिकार दिखायी दिया है, क्योंकि विश्वासियों पर दोष लगानेवाला, जो हमारे यहोवा
११ परमेश्वर के सामने रात-दिन उनको दोषी ठहराता था, नीचे गिरा दिया गया है। **लेकिन** उन्होंने मेम्ने के खून और
अपनी गवाही के वचन की वजह से उस पर जीत पायी है, क्योंकि मरते दम तक उन्होंने अपनी जान की परवाह
१२ नहीं की। **इसलिए** हे स्वर्ग और उस में रहनेवालो, खुश हो। पृथ्वी और समुद्र पर हाय! क्योंकि शैतान बहुत
१३ गुस्से से तुम्हारे पास उतर आया है, क्योंकि वह जानता है कि उस का समय थोड़ा ही है। **जब** अजगर ने देखा
१४ कि मैं पृथ्वी पर फेंक दिया गया हूँ, तो उस महिला को जिस ने बेटे को जन्म दिया था, सताने लगा। **लेकिन**
उस महिला को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि वह अजगर के सामने से जंगल में अपनी ज़गह पहुँच जाए,
१५ जहाँ वह एक समय, समयों और आधे समय तक पाली जाए। **फिर** अजगर ने महिला के सामने अपने
१६ मुँह से नदियों का सा पानी बहाया ताकि वह महिला को पानी के बहाव में बहा ले जाए, **लेकिन** धरती ने उस महिला
की मदद की। ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर उस नदी को निगल लिया, जो अजगर के मुँह से निकली थी।
१७ **अजगर** को महिला पर गुस्सा आया और उसकी बची हुयी सन्तान से जो यहोवा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते
और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और समुद्र के किनारे की रेत पर अजगर खड़ा रहा।
**१३**,१ **मैंने** एक ऐसे पशु को समुद्र में से निकलते देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस
२ राजमुकुट थे। उसके सिरों पर बेइज्ज़ती के नाम लिखे हुए थे। **जिस** पशु को मैंने देखा, वह चीते की तरह
था, लेकिन इसके पैर भालू की तरह और मुँह शेर की तरह था। अजगर ने इस जानवर को अपनी ताकत, सिहांसन

---

**''सारी दुनिया को बहकाता है''**- शैतान एक बड़ा धोखेबाज है (२०:३,४,१०) । दुनिया में दो और बड़ी धोखा देनेवाली ताकतों के लिए देखें यिर्म १७:९; इब्रा ३:१३ । इन सब बातों से हम देख सकते हैं कि धोखा खाने की संभावना हमेशा है और बिना सीमा की है (मत्ती २४:२४ से तुलना करें) । इस्राएल की रक्षा हो सके (पद ६; यिर्म. ३०:७) ।

१२:१५ **''एक समय, समयों और आधे समय''** - पद ६; ११:२,३ दानिय्येल ७:२५; १२:७ ।

१२:१७ **''बची हुयी सन्तान''** - ये लोग महिला से भिन्न हैं इसलिए एक दूसरा झुण्ड हैं । यह महिला इस्राएल है, तो यह झुण्ड क्या है ? क्या हम यह नहीं कह सकते कि जो मसीही यीशु मसीह से जुड़े हुए हैं, इस्राएल से निकले हैं ? यह भी कि मसीहियों की नींव पुराने नियम (ओल्ड टेस्टामेन्ट) में है । यह भी कि इस्राएल में ईश्वर भक्तों ही से मण्डली (चर्च) की स्थापना हुयी? अगर उससे निकले हुए बाकी लोग इस युग के अन्त में मसीही नहीं हैं, तो यह कहना भी मुश्किल है कि वे हैं कौन ।

**''यीशु की गवाही''**- यह भी एक पुख्ता सबूत है कि उसके ''बाकी बचे हुए लोग'' विश्वासी और मसीही हैं । इस युग के अन्त में शैतान उन्हें बर्बाद करने की कोशिश करेगा ।

१३:१ **''पशु''**-११:७ - इस किताब में यह शब्द ४० से ज़्यादा बार आया है । दानिय्येल की किताब में ''पशु'' साम्राज्य और उनके राजा को दिखाते हैं । (दानि ७ और ८) । यहाँ भी पशु का मतलब यही है । देखें १७:९-१३ । यह भी देखें कि यह पशु १२:३ के लाल अजगर की ओर इशारा है । लेकिन अजगर के सिर पर सात ताज हैं, इस पशु के सींगों के ऊपर दस ताज है। अजगर के पास पूरा अधिकार है । पशु को दस राजाओं (१७:१२,१३) और अजगर से अधिकार मिलता है ।

**''दस सींग''** - दानि ७:७ भी देखें ।

**''बेइज्ज़ती का नाम''** -पद ५ । २ थिस्स २:४; १ यूहन्ना २:१८,२२ । बेइज्ज़ती पर नोट्स मत्ती ९:३ में देखें ।

१३:२ **''चीते.....मुँह शेर''**- दानि ७:२-८ के चारो पशुओं के लक्षण इस पशु में दिखते हैं । लेकिन चौथे से ज़्यादा मिलता जुलता है । ऐसा लगता है कि यह पशु किसी न किसी तरह से फिर से जागा हुआ रोमन साम्राज्य है । दानि २:३२-४५;७:७ पर नोट्स देखें । इस दुनिया में यह आखिरी गैर यहूदी शक्ति होगी । यह भयंकर बुरी शक्ति होगी क्योंकि अजगर का इसको पूरा सहयोग मिलेगा । अदृश्य अंधकार की दुनिया में जो शैतान है, वही पशु पृथ्वी पर खुले रूप में होगा । देखें २ थिस्स. २:९,१० ।

१३:३ १७:८-११ देखें । दानिय्येल के दर्शनों में सिर राज्य था शासकों के भाग को दिखाते हैं । यहाँ एक बुरी ज़ख्म का मतलब आनेवाले साम्राज्य या उसके एक हिस्से या इसके शासक का बर्बाद होना है । देखें ११:७ ''पशु'' कुण्ड से निकलेगा । कुण्ड

३ और शासन के लिए ज़बरदस्त अधिकार दिया। **उस** पशु के तमाम सिरों में से एक बुरी तरह से ज़ख्मी होने
की वजह से मरने की हालत में लग रहा था, लेकिन वह जानलेवा ज़ख्म ठीक हो गया। और सारी दुनिया के
लोग आश्चर्य के साथ इस पशु की मानने लग गए। इसलिए कि अजगर ने उन्हें शासन करने का अधिकार दिया
४,५ था, **वे** लोग उस पशु की इबादत (पूजा) यह कहते हुए करने लगे, ''इस पशु की तरह कौन है? **और** उसके
खिलाफ कौन लड़ सकता है?'' उस पशु को डींग मारने और बेइज्ज़ती करने का मुँह दिया गया। उसे बयालीस
६ महिनों तक शासन चलाने के हक का इस्तेमाल करने की इज़ाज़त दी गयी। **इसलिए** पशु ने मुँह खोलकर
७ परमेश्वर की बेइज्ज़ती की - ताकि परमेश्वर के नाम, स्वर्ग और वहाँ रहने वालों की बदनामी करे। **इस** पशु
को इज़ाज़त दी गयी कि वह परमेश्वर के पवित्र लोगों के खिलाफ लड़ाई छेड़े और उन्हें जीत ले। उसे सभी
८ जनजाति, लोग, अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोगों और देशों के ऊपर शासन करने का हक दिया गया। **और**
दुनिया में रहनेवाले सभी लोग इस पशु की पूजा (इबादत) करेंगे, अर्थात जिनका नाम ज़िन्दगी की किताब में,
जो कुर्बान किए गए मेम्ने की है, नहीं लिखे गए। यह मेम्ना दुनिया की शुरूआत के समय से ही मारा गया था।

---

मरे हुओं का दायरा है । कभी-कभी ऐसा लगता है कि पशु उस मनुष्य की ओर संकेत है जो ''पशु'' नामक साम्राज्य का शासक होगा (देखें पद १८; १७:८-१३; १६:१६,२०;२०:१०) । वह एक साम्राज्य को दिखाने के साथ उसमें पशु के सारे लक्षण को भी दिखाता है । २ थिस्सु २:३,४ और १ यूहन्ना २:१८,२२ एक व्यक्ति के बारे में है जो ''पाप का पुरुष'' और खिस्ट विरोधी है। क्या हम शक कर सकते हैं कि ''पशु'' वही व्यक्ति है ? ''ठीक हो गया'' यह इतना बड़ा आश्चर्यकर्म होगा कि पूरी दुनिया में हलचल मच जाएगी । यह रोमी साम्राज्य के किसी पुराने शासन का मरे हुओं में से जीना हो सकता है, देखें १७:१०,११।

१३:४ **''अजगर की इबादत''** -इस दुनिया के अन्त मं पास लोग शैतान की इबादत करेंगे । ऐसा इसलिए कि लोग समझेंगे कि शैतान और पशु ने परमेश्वर और उनके लोगों पर जीत हासिल कर ली है । शैतान हमेशा से आराधना चाहता रहा है । (मत्ती ४:८-१०) और कुछ लोगों से उसने आराधना पायी है (६:२०; लैव्य १७:७; व्यवस्था ३२:१७; भजन १०६:३७; १ कुरि. १०:२०) । अन्त के दिनों में ऐसी आराधना आम बात होगी ।

**''शासन करने का अधिकार''**-इस दुनिया के सब राज्यों को देकर मसीह को बर्बाद करने की कोशिश शैतान ने की थी।यीशु ने उसका इन्कार किया था । लेकिन दुनिया के अन्त में शैतान किसी को पा लेगा जो ऐसी परीक्षा में पड़ जाएगा।

**''पशु की इबादत की''** - इन्सान की पूजा करने की प्रवृत्ति इस दुनिया के अन्त समय तक बहुत बढ़ जाएगी ।

**''खिलाफ कौन लड़ सकता है''** - पशु के पास सारी दुनिया के ऊपर अधिकार होगा (पद ७), और कोई देश उससे लड़ नहीं सकेगा ।

१३:५ **''डींग भरने और बेइज्जती करने''** - पद १; दानिय्येल ७:८; ११:३६ ।

**''बयालीस महीने''** - ११:२,३, १२:६,१४; १७:१२ । उसकी डींगो के बजाए इतिहास में तमाम तानाशाहों का राज्य खीष्ट विरोधी से लम्बा ही होगा ।

१३:७ **''परमेश्वर के पवित्र लोग''**-दानि ७:२१,२५ पूरे नए नियम में यह शब्द उन विश्वासियों के लिए है जो यीशु मसीह में हैं। रोमि १:७ से तुलना करें । पुराने नियम में भी ये शब्द विश्वासियों के लिए उपयोग में लाए गए हैं ।

**''जीत ले''** - ६:१०; ७:१४,११:७;१२:१७ । ''महान क्लेश'' उसके कामों का परिणाम होगा । पशु पवित्र लोगों को जीत लेगा और वे उसको जीत लेंगे । देखें १५:२ । शारीरिक रीति से वह उनको जीतेगा । वे लोग आत्मिक रीति से उसे जीत लेंगे। जबकि वह उन्हें पीड़ा देता होगा और मौत के घाट उतारता होगा, फिर भी वे बहुतायत की जीत पाएँगे ।

''दुनिया में रहनेवाले सभी........खीष्ट विरोधी का साम्राज्य पहला होगा जो सारी दुनिया को कब्ज़े में कर लेगा ।

१३:८ पद ४ **''ज़िन्दगी की किताब''**-३:५ । ''दुनिया की शुरूआत से'' इन शब्दों को **''कुर्बान किए गए मेम्ने''** के साथ रखा जा सकता है ''जिनके नाम ज़िन्दगी की किताब में नहीं...'' । तुलना करें १७:८ से । परमेश्वर की योजना में सृष्टि की शुरूआत से ही मेम्ना वध किया गया था । ( १ पत १:१६,२०) । हालाँकि वास्तविक घटना तो २००० साल पहले ही घटी। हम सोच भी सकते हैं कि कुछ लोगों के नाम किताब में लिखे गए, वे वही हैं जिनके बारे में मत्ती २४:२४ में लिखा है । वे परमेश्वर से प्रेम करेगें और पशु का दुष्ट स्वभाव पहचान लेंगे । इसलिए जो कुछ दुनिया करेगी, वह करने से इन्कार करेंगे।

१३:६ **''सुनना''** -२:७ ।

१३:१० भजन ७:१५ से तुलना करें; १८:२५-२७; नीति २२:८; गल ६:७ ।

१३:११ **''पृथ्वी में से''** - यह समुद्र में से निकलने के बिल्कुल उल्टा है, जहाँ से पहला पशु निकला था । यहाँ समुद्र का मतलब

९,१० **जो** सुनना चाहे अच्छा होगा कि वह सुन ले, **कि** जो कैदी होने के लिए बुलाया गया है, वह कैदखाने में डाला
जाएगा। जो तलवार से मारता है वह तलवार से मारा जाएगा। पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है।
११ **फिर** मैंने पृथ्वी में से एक और पशु को निकलते देखा। एक मेम्ने की तरह इसके दो सींग थे, लेकिन यह एक
१२ अजगर की तरह बोलता था। **उस** पहिले पशु की मौजूदगी में यह दूसरा जानवर सब अधिकार काम में लाता
था। यह दूसरा पशु, जिस पहले पशु का घाव ठीक हो गया था, उसकी उपासना सारी दुनिया के लोगों से करवाता
१३,१४ था। **वह** बड़े-बड़े अजीब काम दिखाता था, यहाँ तक कि आसमान से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। इन,
अजीब कामों से जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे हासिल था, वह पृथ्वी पर रहनेवालों को धोखा
देता था। वह उनसे यह कहता था कि उस पशु की मूरत को बनाओ, जिसकी देह पर तलवार का घाव
१५ था और जो फिर से ज़िन्दा हो गया था। उसे पशु की मूरत में जान डालने का अधिकार दिया गया, जिससे वह
१६ मूरत बोलने लगे। यह भी कि जितने लोग उस मूरत को पूजने से इन्कार करें, उन्हें मरवा डाले। **उसने** छोटे-बड़े,
१७ अमीर-गरीब, आज़ाद-गुलाम, सभी के दाहिने हाथ या माथे पर एक छाप लगा दी। **उसने** ऐसा भी किया, कि
जिसके पास उस पशु का नाम था उसके नाम की संख्या की छाप न हो, उसको छोड़ और कोई इन्सान लेन
१८ देन न कर पाए। **जिसे** समझ हो वह उस पशु की संख्या का हिसाब लगा ले, क्योंकि यह संख्या इन्सान की
**१४**,१ है। यह है छः सौ छियासठ। **मैंने** जब एक नज़र डाली तो मेम्ने को सिय्योन पहाड़ पर खड़ा देखा। उनके साथ
२ १,४४,००० लोग थे। उनके माथे पर मेम्ने का और उसके पिता का नाम लिखा था। **मैंने** स्वर्ग से तमाम पानी

---

लोगों की बड़ी संख्या है (१७:१५ से तुलना करें) । अगर ऐसा है तो शायद पृथ्वी का अर्थ है कोई खास देश, जैसे इस्राएल। ''एक मेम्ने की तरह......अजगर की तरह'' - वह धोखेबाज दिखता है । वह दिखता (दिखना माँगता है) कुछ है, लेकिन है कुछ और । लेकिन उसकी बातों से उसकी असलियत दिख जाती है (मत्ती १२:३४,३५) । १६:१३;१६:२०,२०:१० वह ''झूठा भविष्यद्वक्ता'' कहलाता है । वह इस्राएल को कायल करना चाहेगा कि वह मसीहा है (यूहन्ना ५:४३; ज़कर्याह, ११:१५-१७; ११:३६-४५) । वह उन सभी झूठे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे मसीहा का मुखिया होगा । इन्हीं के बारे में यीशु ने सावधान किया था । देखें मत्ती २४:२३-२६ । इसलिए इस युग के आखिर में तीन व्यक्तियों से दुनिया गुमराह की जाएगी। वे हैं -अजगर, खीष्ट विरोधी और झूठा भविष्यद्वक्ता ।

१३:१२ वह चाहे जहाँ रहे, वह पहले पशु का प्रतिनिधित्व करेगा, जो दुनिया के साम्राज्य का शासक होगा ।

**''उपासना''** -झूठा भविष्यद्वक्ता होने की वजह से धार्मिक होगा और धार्मिक आन्दोलन को चलाएगा । वह सच्चे परमेश्वर के विरोध में खिलाफत करने के साथ-साथ खीष्ट विरोधी को आराधना का लक्ष्य बनाएगा ।

१३:१३ मत्ती २४:२४ में और व्यवस्था १३:१-३ में चेतावनी देखें ।

१४:१ मुहर, तुरही और प्याले की विपत्तियाँ जो १२:१ में शुरू हुयी थी उसके क्रमानुसार विकास में यह अध्याय एक लम्बा ब्रेक था। इसके पहले कि दण्ड के प्याले उण्डेले जाएँ, उस समय के अन्त की घड़ी की सूचना यह देता है । आखिरी तुरही के बजाए जाने से पहले के समय की तरफ पीछे मुड़कर यह भाग देखता है ।

**''वहाँ''** - मतलब है ''देखो'' या ''देखना''

**''सिय्योन पहाड़''** यह इस्राएल के यरूशलेम (२ शमूएल ५:६-९, भजन २:६; मत्ती २३:३७-३९) या स्वर्ग के यरूशलेम (२:१२; गल ४:२५,२६; इब्रा १२:२२-२४) की तरफ संकेत हो सकता है । अगर संसार का यरूशलेम है तो यह वापस पृथ्वी पर यीशु के आने की तस्वीर है । लेकिन यह संभव है कि स्वर्गिक यरूशलेम की ओर इशारा है -तीसरा पद यह दिखाता है ।

**''मेम्ने''** -५:६ यीशु ।

**''१ लाख ४४ हज़ार''** -७:४ में भी एक झुण्ड दिखा था । क्या यह वही झुंड है ? एक कारण है कि ये दोनों झुंड एक ही नहीं हैं । नवे अध्याय में लोग इस्राएल के कबीलों में से हैं और पृथ्वी पर हैं । जो यहाँ पर हैं वे ''पृथ्वी से हैं'' ''मनुष्यों में से हैं'' । इसके अलावा उनके बारे में और कुछ सातवें अध्याय में नहीं लिखा है । इसलिए यह सोचना बेकार है कि इस्राएल से चुने हुओं के ऊपर यह लागू होता है ।

**''उनके माथे पर''** - इसका मतलब है कि वे परमेश्वर की खास सम्पत्ति हैं और उनका चरित्र उनमें देखा जा सकता है।

१४:२ **''वीणा''** - ५:८; १५:२ ।

१४:३ **''नया गीत''** - ५:९ ।

**''सीख''** हमें यह नहीं बताया गया है कि सबसे पहले यह गीत कौन गाता है । १,४४,००० लोगों को कौन सिखाता है ।

अर्थात बड़े गर्जन जैसी आवाज़ सुनी। यह आवाज़ बिल्कुल वीणा से निकलने वाली आवाज़ की तरह थी।
३ **वे** सिंहासन के सामने और चारों ज़िन्दा प्राणियों और प्राचीन (बुज़ुर्गो) के सामने एक नया गीत गा रहे थे। पृथ्वी
४ से मोल लेकर छुड़ाए गए १,४४,००० लोगों को छोड़कर कोई उस गीत को सीख नहीं सकता था। **ये** वे लोग
हैं जिन्होंने कभी किसी से यौन सम्बन्ध नहीं रखा और कुंवारें हैं। ये वे लोग हैं जो मेम्ने के पीछे, जहाँ-जहाँ वह जाता
है, जाते हैं। परमेश्वर और मेम्ने के लिए एक खास भेंट के रूप में उन्हें पृथ्वी पर रहनेवालों में से खरीदा गया
५,६ है। **उन्होंने** कभी भी झूठ नहीं बोला और निर्दोष हैं। **फिर** मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश में उड़ते देखा।
७ उसके पास सुनाने के लिए अनन्त ख़ुशी की खबर थी। **यह** खबर हर देश, हर आदिवासी, हर भाषा के लोगों
के लिए थी। उसने चिल्ला कर कहा, ''परमेश्वर को इज़्जत दो, उनकी इबादत (उपासना) करो, क्योंकि उनके
इन्साफ करने का समय आ गया है। उन्हीं की आराधना करो, जिन्होंने आसमान, ज़मीन, समुद्र और जल के
८ सोते बनाए।'' **तब** एक और स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, ''गिर पड़ा, विशाल बाबुल गिर पड़ा, जिसने अपने
९ बुरे काम की वासनामय शराब सब देशों को पिलायी थी।'' **इनके** बाद एक तीसरा स्वर्गदूत ऊँची आवाज़ से यह
कहता आया, ''अगर कोई इस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे या हाथ पर उसकी छाप
१० लगाए, **उसे** भी परमेश्वर के गुस्से की शराब, जो उनके गुस्से के कटोरे में भरपूर उँडेली गयी है, पीएगा। उसे
११ पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने की मौजूदगी में आग और गन्धक की भयंकर पीड़ा सहनी पड़ेगी। **उनकी** पीड़ा का
धुआँ हमेशा हमेशा तक उठता रहेगा। जो लोग उस पशु और उसकी मूरत की उपासना करेंगे और उसके नाम

---

**''मोल लेकर खरीदे गए हैं''**- १:५; ५:९; १ पत १:१८; इब्रा ९:१२; इफि १:७; रोमि ३:२४; मत्ती २०:२८ ।

१४:४ **''स्त्रियों से यौन सम्बन्ध''**- विवाह से अशुद्ध कोई नहीं होता है इब्रा १३:४; मत्ती १९:४-६। लेकिन वैवाहिक सम्बन्ध के बाहर यौन सम्बन्ध अशुद्ध करता है ।

**''कुँवारे''** - अगर हम इसका शाब्दिक अर्थ लगाएँ, तो मतलब साफ ज़ाहिर है । कुछ लोग शाब्दिक अर्थ नहीं लगाते हैं । सांकेतिक अर्थ का उदाहरण २ कुरि ११:२ में देख सकते हैं । अगर ऐसा ही इसे समझे तो १,४४,००० परमेश्वर के प्रति आत्मिक रीति से अविश्वासयोग्य नहीं थे । तुलना करें होशे १:२; २:२; यिर्म २:२,५ आदि ।

**''पीछे - जाते''** -७:७ ।

१४:५ **"झूठ"** भजन १५:१-५ से मिलान करें। झूठे लोग दूसरी जगह पड़े रहेंगे (२:८, २७; २२:१५)। ईश्वर जो सच्चे हैं और झूठ से नफरत करते हैं। भजन ३१:५; नीति ६:१६-१९; भजन १५:२; २४:३५; उत्प १७:१; व्यव १८:१३; इफि १:४; ५:२७; फिलि १:१०; २:१५; २ पत ३:१४ १४:६। यह स्वर्गदूत भी अध्याय १२ की महिमा की तरह प्रतीक मात्र हो सकता है। यूनानी में स्वर्गदूत का मतलब है खबर देने वाला (१:२०; मरकुस १:२; लूका ७:२४; १:५२) और यीशु के इस दुनिया में आने से पहले सारी दुनिया में खुशखबरी की तरफ इशारा हो सकता है, मत्ती २४:१४ देखें।

१४:७ **"ईश्वर से डरो"** - इसका महत्व जानने के लिए पढ़ें १५:४, १९:५; १ पत १:१७; २:१७; २ कुरि ५:११; रोमि ३:१४; इब्रा १२:२८; उत्पत्ति २०:११; भजन ३४:११-१४; ११०:१०; नीति १:७। यहाँ ध्यान दें, हमेशा की खुशखबरी का संबंध ईश्वर के भय से जुड़ा हुआ है। मन बदलाव की तरह सबके लिए सब जगह एक हुक्म है। मन बदलाव और असली ईश्वर की तरफ मुड़ना और खुशखबरी पर ईमान लाने से ईश्वर का भय पैदा होता है। अनन्त या हमेशा की खुशखबरी इसलिए कही जाती है, क्योंकि यह दुनिया की शुरूआत से तैयार की गयी थी और हमेशा के लिए है। यह हमेशा ईश्वरीय खुशखबरी कहलाएगी।

**"इबादत (उपासना) करो"** - १६:६; १६:७; १ कुरू १०:३१।

**"इन्साफ"** - ११:१८

**"आराधना ... बनाए"** - मत्ती ४:१०; प्रेरित १४:१५; १ कुरू ८:५,६; यशा ४०:१८-२६; ४२:५; ४३:१०,११; ४५:१८ सृजनहार ईश्वर को छोड़कर और किसी की इबादत नहीं की जानी चाहिए।

१४:८ **"बाइबल"** १७:१ -५, १८:२; यहाँ उसके पतन की बात की कही गयी है लेकिन अध्याय १८ तक उसका वर्णन नहीं है।

**"बुरे काम की वासनामय शराब"** -१८:३,९

१४:९-११ यहाँ पशु की पूजा के खिलाफ चेतावनी (१३:४,८,१५) इस बात का इशारा है कि जगस्वामी को छोड़कर किसी और चीज़ की आराधना न की जाए (पद ७)। सभी मूरतों के पूजक, सिर्फ पशु के आराधक ही हमेशा की आग में रहेंगे (२१:८)।

१४:१० **"गुस्से की शराब ..."** पद १९; गिनती २५:३; भजन १०:७ -११; यशा ५१:१७; यिर्म २५:१५; यूहन्ना ३:३६ रोमि १:१८; इफि ५:६।

१२ की छाप लेंगे, उन्हें दिन और रात चैन नहीं मिलेगा। **इसका** मतलब यह है कि परमेश्वर के पवित्र लोगों को
१३ उनकी बातों को मानते हुए यीशु मसीह में अपने भरोसे पर कायम रहना होगा। **फिर** मैंने स्वर्ग से सुना,
''लिखो, सुखी वे हैं, जो यीशु पर विश्वास करने के बाद, उसी विश्वास में ही इस पृथ्वी से उठा लिए जाते
हैं। पवित्र आत्मा कहता है, हाँ, क्योंकि वे अपनी मेहनत से आज़ाद हो जाएँगे और उनके कामों का हिसाब
१४ रखा जाएगा।'' **मैंने** निगाह डाली और देखो, एक उजला बादल है। उस बादल पर मनुष्य के पुत्र के समान कोई
१५ बैठा है। इसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हँसुआ है। **फिर** एक और स्वर्गदूत ने प्रार्थना भवन
में से निकलकर, बादल पर बैठे हुए व्यक्ति से ऊँची आवाज़ मे कहा, ''हँसुआ लगाकर फसल काटो। क्योंकि
१६ पृथ्वी की फसल पूरी तरह से तैयार है, इसलिए फसल के इकट्ठा करने का समय आ पहुँचा है''। **इसलिए** जो
१७ बादलों पर बैठा हुआ था उसने अपने हँसुए से पृथ्वी की फसल को काटा । **तब** एक और स्वर्गदूत स्वर्ग के

---

**"आग और गन्धक"** - उत्पत्ति १६:२४; भजन ११:६; यूहन्ना ७।

**"मेम्ने" की मौजूदगी"** - जिस यीशु ने लोगों को बचाने के लिए अपनी जान दी थी, अपनी निगाहें तड़पते दुष्ट लोगों पर डालेंगे, लेकिन उन्हें बचाएँगे नहीं। यह इस बात का सबूत है कि उनकी पीड़ा इन्साफ का हिस्सा है, इसलिए उन्हें क्लेश से बचाना बेइन्साफी होंगी।

१४:११ **"हमेशा-हमेशा"** - यशा ३३:१४; मत्ती २५:४६; मरकुस ३:२६; १:४८, लूका १६:२२-२६। यह पद नहीं कहता कि दुष्ट के दुख हमेशा रहेंगे, लेकिन यह कि उनकी पीड़ा का धुआँ हमेशा निकलता रहेगा। (१६:३ से तुलना करें)। लेकिन यह मान कर चलें कि पीड़ा हमेशा की हैं। (तुलना २५:१०)। जब तक रात दिन होंगे, पशु के उपासक बेचैन रहेंगे।

१४:१२ देखें १३:१०; इब्रा ६:१२; २ थिस्सु १:४।

१४:१३ **"विश्वास करने के बाद"** यह सच्चाई उन लोगों के लिए हिम्मत का कारण होना चाहिए, जो पशु के शासन में मौत का सामना करेंगे (१३:१५)। इसमें कोई शक नहीं कि यीशु पर विश्वास करने वालो की मौत खुशी की बात है (२ कुरि. ५:१-६; फिलि १:२१-२३; भजन ११६:१५)। लेकिन यह खास उनके लिए सच होगा जो पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के सामने समर्पण नहीं करेंगे।

**"मेहनत से आज़ाद"** - पद ११ से तुलना।

**"कामों का हिसाब"** - बड़े खतरे और तकलीफों को भोगने वालों को खास ईनाम और आदर मिलेगा।

१४:१४ **"बादल"** १:७; मत्ती २४:३०; २६:६४; प्रेरित १:६,११ १ थिस्सु ४:१६,१७।

**"मनुष्य के पुत्र के समान"** ये शब्द १:१३ में यीशु के लिए इस्तेमाल किए गए है। क्या इसमें सन्देह है कि यहाँ बादल पर बैठने वाले यीशु नहीं हैं।

**"मुकुट"** - यह शब्द स्वर्गदूतों के लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया गया। यह शब्द विजेता को मिलने वाले पुरूस्कार को दिखाता है, राजा के पहनने वाले ताज को नहीं। तुलना करें २:१०; १ कुरू १:२५; इब्रा २:६। बाद में यीशु तमाम मुकुट पहने हुए दिखते हैं - १६:१२। वहाँ यूनानी शब्द का इशारा उस ताज की तरफ है जो राजा पहनते है। यहाँ यीशु शासन करने नहीं, फसल काटने आ रहे है।

१४:१५ अगर बादल पर बैठा व्यक्ति यीशु है तो एक संदेशवाहक आकर उन्हें क्या करता है, क्यों बताएगा? इसलिए कि यीशु हमेशा परमेश्वर के आधीन हैं और उन्हीं से आदेश लेते हैं (यूहन्ना ५:१६; ६:३८;१४:३१)। यह स्वर्गदूत प्रार्थना भवन से निकलता है - परमेश्वर की उपस्थिति से - और पिता की तरफ से यीशु तक खबर लाता है । या फिर स्वर्गदूत मात्र उस संदेश का प्रतीक है जो परमेश्वर से यीशु तक पहुँचता है ।

**''फसल.... समय''** - मत्ती ३:१२; मरकुस ४:२६ । जब यीशु फसल काटते हैं, वे स्वर्गदूतों को इस्तेमाल करते हैं - मत्ती १३:३६; २४:३१ ।

१४:१६ हमें नहीं बताया गया है कि यह फसल कौन सी है । फिर भी पृथ्वी की अंगूर की लता से तुलना की गयी है, १७:२० पद में । यह दुष्टों की फसल है, इसलिए यह परमेश्वर के लोगों की है । दूसरे शब्दों में, पद १४:१६ सम्पूर्ण चर्च (मण्डलियाँ, कलीसिया) के आसमान में उठाए जाने के बारे में है (१ थिस्सु ४:१६,१७) । दूसरे लोग सोचते हैं कि ४:१ में चर्च का उठाया जाना है । कुछ और लोग हैं जिनके अनुसार अध्याय १६ में जब यीशु आसमान से आते हैं, यह तब होगा ।

१४:१७-२० **''एक और''** - साफ ज़ाहिर है कि ये पद जिस फसल के बारे में हैं, वे पहले वाली फसल से फर्क है । यह बुरे लोगों पर दण्ड और न्याय की है ।

१४:१८ **''आग पर अधिकार''** - शायद ८:३-५ के स्वर्गदूत के बारे में है ८:३-५ ।

१८ प्रार्थना भवन में से बाहर निकला, जिसके हाथ में भी एक तेज हँसुआँ था। **एक** और स्वर्गदूत वेदी से बाहर आया,
जिसे आग पर अधिकार था। जिस स्वर्गदूत के पास तेज़ हँसुआँ था, उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "इसलिए कि
अंगूर पूरी तरह से पक चुके हैं, उनके गुच्छों को हँसुएँ से काट लो।" इसलिए स्वर्गदूत ने अपने हँसुएँ को पृथ्वी
पर घुमाकर, पृथ्वी के अंगूर के बगीचे मे से अंगूर काट लिए और उसे परमेश्वर के गुस्से के रस कुण्ड में फेंक
१९ दिया। **शहर** के बाहर रस कुण्ड में अंगूर को रौंदा गया और रस कुण्ड से लगभग सौ कोस तक खून का
**१५**,१ झरना बह कर घोड़े की लगाम तक पहुँच गया। **फिर** मैंने स्वर्ग में एक बड़ा और अजीब निशान देखा। वह यह
कि सात स्वर्गदूतों के पास सातों आने वाली मुसीबतें थीं। उन के हो जाने पर परमेश्वर के ज़बरदस्त गुस्से का
२ अन्त है। **मैंने** आग से मिले हुए काँच का सा एक समुद्र देखा। जिन लोगों ने उस जानवर, उसकी मूरत और
उसके नाम के अंक पर जीत हासिल की थी, उन्हें उस काँच के समुद्र के पास परमेश्वर की वीणाओं को लिए
३ हुए खड़े देखा। **वे** परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, "हे सबसे ज़्यादा
४ ताकतवर प्रभु परमेश्वर, आप जो हमेशा-हमेशा तक राजा हैं, आपके काम बड़े और अजीब हैं। **हे** प्रभु, आप
से कौन न डरेगा और आपके नाम की इज़्जत न करेगा? क्योंकि आप ही पवित्र हैं। सभी देश आकर आपकी
५ आराधना करेंगे, क्योंकि आपके इन्साफ के काम दिखाए जा चुके हैं।" **इसके** बाद मैंने यह देखा कि स्वर्ग में

---

**"वेदी"** - ६:९; ८:५; १६:७।

**"पक चुके"** - पशु के शासन काल में दुष्टता चरम सीमा तक पहुँच जाएगी ।

१४:१९ **"परमेश्वर के गुस्से के रसकुण्ड"** - यशा ६३:३,४; विलापगीत १:१५; योएल ३:१३ ।

**"गुस्सा"** पद १० देखें ।

१४:२० **"रौंदा गया"** - यीशु मसीह स्वयं ऐसा करते हैं - १९-१५ । परमेश्वर पिता ने दुनिया के दुष्ट लोगों का इन्साफ उन्हीं के हाथों में कर दिया है ।

"शहर" ये शब्द यरूशलेम की तरफ इशारा है (११:२,८,१३) । आखिर के दिनों में यरूशलेम परमेश्वर के भयानक दण्ड का क्षेत्र होगा देखें योएल ३:१२-१६; जकर्या १४:१-३ ।

**"सौ कोस"** - लगभग ३०० किलो मीटर इस्राएल में उत्तरी सीमा से दक्षिण सीमा घनी आबादी वाली जगहों का यह औसतन क्षेत्र है । ज़्यादा खून दिखाता है, बहुत से लोगों का नरसंहार, तुलना करें १९:१७,१८।

१५:१ ....से जो साफ साफ सिखाया जा रहा था, यहाँ खत्म होता है । मुहर, तुरही और प्यालों के वर्णन का एक लम्बा धागा यहाँ फिर से शुरू होता है । ये सात प्यालें, सातवीं तुरही के बजाए जाने पर आते हैं । और सातवीं तुरहियों का न्याय शुरू होता है ।

**"परमेश्वर के गुस्से का अन्त"** - ६:१६,१७; ११:१८; १४:१०,१९ ।

१५:२ इससे पहले कि दूत गुस्से (इन्साफ) के प्यालों को उण्डेंले, खूबसूरती और आशीष का एक दृश्य दिखता है ।

**"काँच सा समुद्र"** - ४:६ ।

**"आग"** - निर्गमन ३:२- के नोट्स देखें । इसके तुरन्त बाद जीत हासिल की थी । ये वे होगें जिन्हें पशु जीतता और मारता है (१३:७,१५) । वे बुराई के साथ समझौते के बजाए मर जाना चाहेंगे । कहीं भी और कहीं भी यह एक बड़ी आत्मिक जीत होगी । ऐसा लगता है कि पशु जीत लेता है और यह दिखता भी है । लेकिन उन विश्वासियों को आत्मिक और हमेशा की जीत मिलती है । उन की जीत यह होगी: वे जानवर की उपासना नहीं करेंगे, न ही उसका चिन्ह अपने ऊपर लेंगे। इसलिए यह समय संगीत और गाने का होगा ।

१५:३ **"मूसा का गीत"** -ओल्ड टेस्टामेन्ट में दो गीत हैं -निर्गमन १५:१-१८ और व्यवस्था ३१:३०-३२, ४३। इस अवसर पर इनमें से कोई एक उचित है । एक फिरौन और उसकी फौज से आज़ादी है (कुछ मायनों में फिरौन पशु की तरफ इशारा है)। दूसरा दुष्ट की पूरी हार को दिखाता है (व्यवस्था ३२:१९-१६,२२,३२,३५,४१-४३) ।

**"मेम्ना"** - ५:६ । इसके बाद मेम्ने का गीत है ।

**"हे सबसे ज़्यादा ताकतवर......."** - निर्गमन १५:११; भजन ६२:५; १११:१ ।

**"आपके काम....."** प्रभु के गुस्से का बुरे लोगों पर प्रगट होना ।

१५:५ **"प्रार्थना भवन (मन्दिर)"** - ७:१५; ११:१९ ।

**"गवाही का तम्बू"** -निर्गमन ३८:२१; गिनती १:५०; इब्रा ८:२,५ - इसमें जो सन्दूक या उसमें दस आज्ञाएँ रखी थीं । न्यू टेस्टामेन्ट में यही एक वह जगह है, जहाँ यह नाम दिखाई देता है - शायद यहाँ जिस परमेश्वर के नियमों को लोगों ने

६ प्रार्थना भवन (मन्दिर) जो कि गवाही का तम्बू है, खोला गया। **उस** प्रार्थना भवन (मन्दिर) में से सात स्वर्गदूत
सात विपत्तियों को लेकर निकले। वे मलमल के साफ कपड़े पहने और छाती पर सुनहरा पटुका लिए हुए थे।
७ **तब** उन चार जीवित प्राणियों में से एक ने हमेशा-हमेशा तक जीवित रहनेवाले परमेश्वर के गुस्से से भरे हुए
सात कटोरों को सात स्वर्गदूतों को दे दिया। प्रार्थना भवन (मन्दिर) परमेश्वर की शान के धुएँ और उनकी शक्ति
से भर गया। और जब तक सात स्वर्गदूतों की सात मुसीबतें खतम नहीं हुयीं, तब तक प्रार्थना भवन (मन्दिर)
**१६**,१ में कोई भी जा न सका। **तब** मैंने प्रार्थना भवन में से किसी को स्वर्गदूतों से ऊंची आवाज़ में यह कहते सुना, जाओ
२ और परमेश्वर के गुस्से के सात प्यालों को पृथ्वी पर उण्डेल दो"। **पहले** स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल
दिया। इस वजह से उन लोगों पर जिन्होंने पशु की छाप ली थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, बहुत तकलीफ
३ देनेवाले फोड़े निकल आए। **दूसरे** स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र पर उण्डेला तो सारा पानी मरे हुए इन्सान
४ के खून की तरह हो गया और उसमें का हर एक प्राणी मर गया। **तीसरे** ने अपना कटोरा नदियों और पानी
५ के सोतों पर उण्डेल दिया और वे सब खून बन गए। **फिर** मैंने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, "हे पवित्र
६ जो हैं और जो थे, आप इन्साफ करने वाले हैं और आपने यह इन्साफ किया है। **क्योंकि** लोगों ने पवित्र लोगों
और नबियों का खून बहाया था, इसलिये आपने उन्हें पीने के लिए खून दिया है। वे इसी के लायक भी
७ हैं। **फिर** मैंने वेदी से यह आवाज़ सुनी, "हाँ, हे सर्वशक्तिशाली प्रभु परमेश्वर, आपके फैसले ठीक और सच्चे
८ हैं। **और** चौथे ने अपना कटोरा सूरज पर उण्डेल दिया, और उसे मनुष्यों को आग से झुलसा देने का हक दिया
९ गया। **बहुत** भयंकर गर्मी से लोग झुलस गए और उन्होंने परमेश्वर के नाम की जिन्हें इन विपत्तियों पर

---

पाँवों से रौंदा, उनका पूरा गुस्सा उण्डेला जानेवाला है ।

१५:६ **"प्रार्थना भवन में से"** - परमेश्वर की उपस्थिति से ।

१:७,८ **"चार जीवित प्राणी"** - ४:६-८ ।

**"गुस्से"** - १४:१० के पद देखें ।

**"धुएँ"** - निर्गमन १९:१८; भजन १८:८; यशा. ६:४; ३०:२७ ।

**"कोई भी न जा सका"** - निर्गमन ४०:३४; १ राजा ८:१०,११ ।

१६:१ **"प्रार्थना भवन में से ऊँची आवाज़ से"**-शायद यह परमेश्वर की आवाज़ थी । इस समय वहाँ कोई जा नहीं सकता था । (१५:८) ।

**"प्यालों"**-सात मोहरें पूरी तरह से परमेश्वर के पास स्क्रौल को मोहरबन्द कर देती हैं (५:१) । सात तुरहियाँ आनेवाली मुसीबतों की चेतावनी देती हैं । ये सात प्याले सारी दुनियाँ के खिलाफ परमेश्वर के गुस्से को रखे हुए हैं । उनके समय की मुसीबतें, तुरही के दण्ड के समय की मुसीबतों की तरह हैं, लेकिन ज़्यादा भयंकर भी ।

१६:२ **"फोड़ें"** - निर्गमन ९:९-११ से तुलना करें ।

१६:३ **"समुद्र"** -८:८,९ दूसरी तुरही बजने के बाद समुद्र के एक तिहाई हिस्से और उसमें रहनेवाले जीवों पर असर पड़ा ।

१६:४ ८:१०,११ से तुलना करें - तीसरी तुरही बजने पर साफ पानी के स्रोतों का एक तिहाई हिस्सा ही प्रभावित हुआ ।

१६:५-७ १५:३ के पदों को देखें । यह बात तीन बार बतायी गयी है, कि परमेश्वर के इन्साफ की वजह से दुष्ट/बुरे लोगों पर उनका गुस्सा उण्डेला जा रहा है । २ थिस्सु १:५-७ और भजन ४७:२ के नोट्स देखें । इस पर ज़ोर शायद इसलिए डाला गया है क्योंकि लोग विश्वास करना मुश्किल पाते हैं। जब कभी पृथ्वी पर मुसीबतें आती हैं, लोग सृष्टिकर्ता पर यह दोष लगाते हैं कि वह सीधे सादे लोगों को सता रहे हैं । ऐसा इसलिए कि उनका सोचने का तरीका उल्टा पुल्टा है । इस दुनिया के आखिरी समय में जब सबसे भयानक मुसीबत (मरी) आएगी, स्वर्ग में सभी मान लेंगे, कि परमेश्वर इन्साफ करनेवाले हैं ।

१६:६ यहाँ जैसे करनी वैसी भरनी का सिद्धान्त हमें दिखता है। तुलना करें लैव्य २६:२३,२४, गिनती ३१:१-३; व्यवस्था ३२:३५,४१,४२ ।

**"इसी के लायक"** - परमेश्वर की तरफ से किसी को ऐसी सज़ा नहीं मिलती है, जिसके वह लायक न हो ।

१६:७ **"वेदी"** - ६:९,१० ।

१६:८ **"सूरज"** - ८:१२ से तुलना करें जहाँ एक सूरज आदि का एक तिहाई भाग बर्बाद हुआ था ।

१६:९ **"निन्दा की"** - इसे तीन बार दोहराया गया है (पद ११,१२) । यह इन्सान की पूरी अशुद्धता, कठोरता और बेवकुफी को दिखाता है । बजाए इसके कि वे अपनी बुराई को मानें और छोड़ दें जिनकी वजह से मुसीबतें उन पर आएँ, वे मुसीबतें भेजनेवाले न्यायी परमेश्वर के खिलाफ गुस्सा ज़ाहिर करेंगे । रोमि ८:७; यूहन्ना ७:७ ।

१० अधिकार है, निन्दा की। उन्होंने अपने बुरे कामों को न छोड़ा और न ही परमेश्वर की बड़ाई की। **तब** पाँचवे
स्वर्गदूत ने अपने कटोरे को पशु के सिंहासन पर उण्डेल दिया और उसका राज्य अँधेरे में डूब गया। उसके मानने
११ वाले अपने दाँतों को पीसने लगे। **अपनी** पीड़ा और ज़ख्मों की वजह से वे परमेश्वर को बुरा कहने लगे। लेकिन
१२ उन्होंने अपने गंदे कामों को न छोड़ा और न परमेश्वर की ओर मुड़े। **तब** छठे स्वर्गदूत ने बड़ी नदी फरात
(यूफ्रेटीज़) पर अपना कटोरा उण्डेल दिया। वह सूख गई ताकि पूर्व दिशा के राजा अपनी फौजों को बिना किसी
१३ रुकावट पश्चिम दिशा की तरफ ले जा सकें। **फिर** मैंने मेंढक की तरह दिखने वाली तीन दुष्ट आत्माओं को
१४ अजगर, उस पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह से निकलते देखा। **वे** दुष्टात्माएँ हैं जो अजीब काम करने के
साथ दुनिया के शासकों के पास जाती हैं। वे सबसे शक्तिशाली परमेश्वर के बड़े इन्साफ (न्याय) के दिन प्रभु के खिलाफ
१५ युद्ध करने के लिए उन्हें अरमागिदोन नाम के स्थान में इकट्ठा करती हैं। ''**देखो**, मैं चोर की तरह अचानक आ जाऊँगा। वे लोग
आशीषित हैं जो मेरा इन्तज़ार करते हैं। जो अपने कपड़ों को तैयार रखते हैं, ताकि उन्हें नंगेपन और शर्मिन्दगी
१६ का सामना न करना पड़े।'' **फिर** दुष्टात्माओं ने शासकों और उनकी फौजों को, इब्रानी में आरमेगादोन कहलाने
१७ वाली जगह पर इकट्ठा किया । **तब** सातवें स्वर्गदूत ने अपने कटोरे को हवा में खाली कर दिया। और स्वर्ग
के पवित्र स्थान में परमेश्वर के सिंहासन से एक ज़ोरदार आवाज़ यह कहते हुए सुनी गयी, ''सब कुछ पूरा हो
१८ चुका है।'' **फिर** बिजलियाँ, शब्द, गर्जन और एक भूकम्प हुआ। यह ऐसा ज़बरदस्त भूकम्प था, जैसा पृथ्वी पर
१९ इन्सान के रखे जाने के समय से कभी भी नहीं हुआ था। **बड़ा** शहर तीन हिस्सों में बँट गया और देशों के

---

**''बुरे कामों को न छोड़ा''**- ९:२०,२१ ।

१६:१० **''पशु का सिंहासन''**-केवल इसी किताब में इस सिंहासन की बात कही गयी है (४० बार परमेश्वर के सिंहासन की बात कही गयी है)। पशु यह सोचेगा कि सब बातें उसी के आधीन हैं, लेकिन बाद में समझ पाएगा कि स्वर्ग के आधीन सब कुछ है। (दानि ४:२६)

**''अँधेरे''** - निर्गमन १०:२१-२३ से तुलना करें ।

**''पीड़ा''** -पिछली मुसीबत (मरी) की वजह से ।

१६:१२-१६ ९:१४-१६ से तुलना करें ।

**''फरात'' (यूफ्रेटीज़)** - ९:१४ के नोट्स देखें । इस नदी के पूर्व में ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत और चीन हैं । इस नदी के सूख जाने का मतलब है कि ये देश पश्चिम एशिया में बिना किसी रुकावट आ सकें ।

१६:१३,१४ तर्क (चतुराई) और अच्छी मिलिट्री योजना, इन अन्तिम दिनों में इन फौजों की सफलता का कारण नहीं है, यहेज ३८:४ और ३९:२ से तुलना करे । दुष्टात्माओं के द्वारा शासक धोखा खाएँगे और उत्तेजित किए जाएँगे । इन दुष्ट आत्माओं के स्रोत पर ध्यान दें - शैतान, आनेवाला ख्रीष्ट विरोधी और झूठा भविष्यद्वक्ता (१३ वे अध्याय का दूसरा पशु) । मत्ती ४:२४ में दुष्टात्माओं पर नोट्स ।

**''शक्तिशाली परमेश्वर के बड़े इन्साफ (न्याय) के दिन''** - ६:१७; १६:१६; यशा ४२:३; योएल ३:९-१३; सपन्याह १:१४-१८; जकर्याह १४:३ ।

**''आरमेगादोन''** - मगिद्दो का पहाड़ या पहाड़ी । पहाड़ के लिए इब्रानी शब्द है ''हर'' । यह इस्राएल का ऐसा मैदानी इलाका है जो नासरत के दक्षिण, गलील की पहाड़ियों और कर्मेल पहाड़ के पूर्व में है (२ इति ३५:२२, जकर्याह १२:११) । इसे इस्राएल का मैदान और यिज्रेल की घाटी भी कहते हैं । तबोट पहाड़ उत्तर पूर्व में और गिलबो दक्षिण पूर्व में है । मगिद्दो का पुराना और खास किलानुमा शहर इसके दक्षिणी किनारे पर है (न्यायियों १:२७; १ राजा ९:१५) ।

१६:१७ **''पवित्र स्थान''** -पद ।

**''सिंहासन से''** -१६-५; २१:३ ।

१६:१८ ४:५; ८:५; और ११:१६ से तुलना करें ।

**''भूकम्प''** - इस किताब में यह शब्द सात बार इस्तेमाल हुआ है । यह इतिहास का भयंकार भूकम्प होगा ।

१६:१९ **''शहर''** भूकम्प की बातें कहे जाने के तुरन्त बाद बॅबिलोन का नाम यह दिखाता है कि बॅबिलोन जिस शहर को दिखाता है, वह यही है (१७:८,१८)। १८ वें अध्याय में उसकी बर्बादी भी यही दिखाती है कि भूकम्प की वजह से क्या होता है (१८:८-१०,२१; अक्सर भूकम्प के कारण आग लग जाती है ) ।

**''देशों के शहर नाश हो गए''** - यह स्थानीय भूकम्प नहीं था जैसा हमें ११:१३ में दिखता है । यशा २४:१८-२०,

शहर नाश हो गए। परमेश्वर के सामने बाबेल महान को याद किया गया ताकि परमेश्वर के गुस्से की शराब उसे
२० (बाबेल को) पिलायी जाए। **हर** एक टापू अपनी-अपनी जगह से सरक गया, पहाड़ों का तो पता ही नहीं चला।
२१ **आसमान** से इन्सानों पर मन मन भर के ओले गिरे। यह विपत्ति बहुत दुखदायी होने की वजह से लोगों ने
**१७**,१ परमेश्वर को बुरा कहा। **जिन** सात स्वर्गदूतों के पास सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझ से कहा, आओ,
२ जो बड़ी व्यभिचारिन बहुत से पानी के ऊपर बैठी हुयी है, मैं उसके दण्ड को तुम्हें दिखाऊँगा। **इसी** के साथ
दुनिया के राजाओं ने व्यभिचार किया है और दुनिया के लोग उस औरत के साथ व्यभिचार की शराब से मतवाले
३ हो गए हैं।" **इसके** बाद स्वर्गदूत मुझे पवित्र आत्मा में एक जंगल ले गया। वहाँ मैंने सात सिर और दस सींगों
४ वाले एक लाल जानवर को देखा। निन्दा भरे नामों से ढँके इस पशु पर एक औरत बैठी हुयी थी। **यह** औरत
बैजनी और लाल कपड़े पहने हुयी थी। वह सोने, मोती और हीरे के गहनों से सजी हुयी थी। उसके हाथ में
५ एक सोने का प्याला था, जो घिनौनी चीज़ों और व्यभिचार की गंदी चीज़ों से भरा हुआ था। **उसके** माथे पर

---

इब्रा १२:२६,२७ से तुलना करें ।

**"गुस्से की शराब"** - १४:१० ।

१७:१ **"व्यभिचारिन"** - बाईबल में प्रायः यह शब्द उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है जो परमेश्वर के कहलाते तो हैं-लेकिन परमेश्वर के प्रति ईमानदार नहीं हैं और दूसरे देवताओं/ईश्वरों को मानने लगते हैं, देखें यशा १:२१; यिर्म २:२०; ३:१; यहेज १६:१५-३४; होशे ९:१ । जिस तरीके से इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, जैसा कि यहाँ है, तो यही इस का सामान्य मतलब है ! एक जगह इसका इस्तेमाल सूर देश के लिए भी किया गया है यशाः१५-१७ । एक जगह नीनवे के लिए नहूम ३:४ और दोनों मूर्तिपूजक देशों के लिए । ऐसी जगहों में इसका मतलब था सच्चे परमेश्वर को तिरस्कृत करना और इस दुनिया की दौलत के पीछे दौड़ना । इस अध्याय में एक शहर व्यभिचारिन है पद १८ । लेकिन हम यह सोचने में गलती नहीं करते हैं। जब हम मान लेते हैं कि शहर तमाम धार्मिक मतों और व्यापारिक सिस्टम (प्रणाली या व्यवस्था) की ओर इशारा है ।

**"बहुत से पानी"** - पद १५।

१७:२ **"व्यभिचार"** -यह शब्द भी बाईबल में प्रायः परमेश्वर के लोगों की आत्मिक अविश्वासयोग्यता को दिखाता है यिर्म ३:६,८,९; यहेज २३:३७,४३; होशे १:२;२:४,५ आदि । यह शब्द किसी और बात को नहीं दिखाता है । ओल्ड टेस्टामेन्ट में हमेशा यह शब्द परमेश्वर को त्यागनेवाले इस्राएल के लिए है । यहाँ पर इस अन्तिम युग के उस चर्च के लिए यह शब्द है जो ईश्वर को भुला चुका है (तुलना करें मत्ती २४:१०-१२; २तिमो ३:१-५; ४:३४; २ पत २:१-३ आदि)। इसका मतलब यह नहीं है, तो विश्वास त्यागी हुयी मसीहियत के बारे में यहाँ कहीं भी नहीं बताया गया है, जो इस दुनिया के ऊपर आनेवाले दण्ड के बारे में बताता है । यह एक बड़ी अजीब बात भी होगी ।

"राजाओं" - के स्त्री से व्यभिचार करने का मतलब है उनके फायदे या मज़े के लिए गहरा सम्बन्ध रखना ।

"मतवाले" -लोग पीते हैं और झूठे व्यापारिक और धार्मिक विचारों से बन्धे रहते हैं । वह अपनी शराब से धोखा देकर अपनी बुराइयों में शामिल कराती है ।

१७:३ **"जंगल"**-शायद यह शब्द बताता है कि स्त्री आत्मिक सूखेपन को दिखाती है ।

**"औरत"**- बाईबल में कभी-कभी एक धार्मिक झुण्ड के लिए स्त्री शब्द का इस्तेमाल किया गया है (यशा ५४:५,६; यिर्म. ३:१; इफि ५:३२-३३ । प्रकाशितवाक्य में १२:१; १९:७,८) ।

**"पशु"** -१३:१ पशु एक राज्य और इसके शासक दोनों ही की तरफ इशारा है । इसलिए औरत का मतलब न ही राज्य और न ही शासक है।

१७:४ **"बैजनी और लाल"** - कुछ जानकार कहते हैं कि ये रंग विलासिता और राजसी शान शौकत की तरफ इशारा हैं । दूसरे लोग कहते हैं कि रोमन केथोलिक चर्च के अधिकारीगण और एक दूसरे चर्च के अधिकारी ये रंग के कपडे पहनते हैं।

**"सोने .... हीरे के गहने"** -यह बड़ी दौलत की तरफ इशारा है ।

**"सोने का प्याला"** - बाहर से अमीर और आकर्षक तुलना करें मत्ती २३:२५,२६ ।

**"गंदी चीजें"** - ओल्ड टेस्टामेन्ट में प्रायः यह मूर्ति और मूर्तिपूजा की तरफ इशारा है । (यिर्मयाह ७:३० के नोट्स देखें)

१७:५ **"माथे पर उसका भेद भरा नाम"**-यह नाम वही दिखाता है जो वह है ।

**"भेद"**-इसका मतलब यह है कि अगर ईश्वर न बताए तो इसका अर्थ कोई नहीं समझ सकता (मत्ती १३:११; रोमि १६:२५)।

**"बेबिलोन की महान"** - यह वास्तविक बेबिलोन नहीं जिसे बहुत पहले बर्बाद किया गया (देखे पद १८; यिर्म ५०:३९,४०)।

उसका भेद भरा नाम लिखा था; ''बेबिलोन की महान व्यभिचारियों और दुनिया की गन्दी चीज़ों की माता।''
६ **मैंने** उस औरत को पवित्र लोगों और यीशु के गवाहों का खून पीकर मतवाला देखा। उसे देखकर मैं आश्चर्य
७ से भर गया। **उस** स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, ''तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है? मैं सात सिरों और उस सींगों वाले
८ जानवर और उस पर बैठी औरत के भेद को तुम पर प्रगट करूँगा। **जो** पशु तुमने देखा है, वह पहिले था, पर
अभी नहीं है। वह अथाह कुण्ड से निकल कर विनाश में पड़ जाएगा। दुनिया की शुरूआत से तमाम लोग जिनके
नाम ज़िन्दगी की किताब में नहीं लिखे गए, इस जानवर को जो पहले था और अब नही है, लेकिन आनेवाला
६,१० है, देखकर अचम्भा करेंगे। **असलियत** तो यह है कि वे सातों पहाड़ हैं जिन पर वह औरत बैठी है। **वे** सात
राजा भी हैं। जिनमें से पाँच का राज्य खत्म हो गया है, एक राज्य कर रहा है और एक अभी तक नहीं आया है।

---

वह रहस्यमयी बाबेलोन है । कुछ मायनों में वह बाबेलोन की तरह है । यह झूठे धर्म का शहर था । इसको परमेश्वर की खिलाफत में बनाया गया (उत्पत्ति ६:१,७ की तुलना ११:१-४ से करें) । यह मूर्ति से भरा हुआ शहर बन गया था (यिर्म ५०:३८), और धर्मों का एक संगम भी । इस पूरे संगम का मुख्य पुरोहित पेन्टिफेक्स मैकिज़मम (बाद में रोमी राजाओं ने यह नाम ले लिया उसके बाद से रोम के बिशप और पोप ने) कहलाता था । जिसका मतलब था प्रधान खाई पाटनेवाला । आज भी पोप के लिए इस्तेमाल किया जानेवाले शब्द 'पौन्टिक' का मतलब है ''सेतु बनानेवाला''

**''व्यभिचारियों और दुनिया की गंदी चीज़ों की माता''** - इसका मतलब यह है कि वह ही खास है जो उसकी तरह आत्मिक और धार्मिक बातों में ईश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य झुण्ड तैयार करती है । यह औरत झूठे धर्म की एक व्यवस्था है जिसकी जड़ें प्राचीन बेबिलोन में हैं और अन्त इस युग के आखिर में, जबकि इसका मुख्य कार्यालय रोम में । जब लोग सच्चे ईश्वर की शिक्षाओं को छोड़ देते हैं, तब वे सब तरह की गंदगी फैला सकते हैं ।

१७:६ **''गवाहों का खून''**-शुरू की शताब्दियों में रोम के शासकों की आधीनता में मसीही लोगों को सताया जाता था । उसके बाद इन्हें सतानेवाला सबसे बड़ा समुदाय रोम केथोलिक चर्च था । इस चर्च ने हज़ारो मसीहियों को मार डाला था (एक विद्वान ने यह सख्या ५ करोड़ (५० मिलियन) आंकी है । इस युग के आखिर में पशु (शायद पुनः जागृत रोमन राज्य का अधिकारी होगा-१३:२ के नोट्स देखें और १३:७,१५ के । लेकिन यहाँ पशु के ऊपर औरत बैठी है । )

१७:७-१८ इन पदों में स्वर्गदूत यूहन्ना साफ-साफ शब्दों में औरत और पशु का अर्थ देता है । ज़रूरी यह है कि हम जैसा है वैसा ही मान ले बजाय इसके कि उसका अर्थ बताने की कोशिश करें ।

१७:८ एक बात लोगों को समझने के लिए कठिन रही है, वह यह है कि पशु एक व्यक्ति है या साम्राज्य ।

एक बार फ्रांस के राजा ने कहा, ''मैं खुद देश हूँ।''

पशु और औरत दोनों ही रोम शहर से जुड़े हुए हैं (पद ६,१८) । जब स्वर्गदूत ने यह यूहन्ना को बताया तब बड़े रोमी साम्राज्य की राजधानी के रूप में रोम पनप रहा था । स्वर्गदूत ने यूहन्ना के काल में न ही शहर के बारे में और न ही साम्राज्य के बारे में कहा होता, लेकिन एक व्यक्ति विशेष के बारे ही में कहा होता ।

**''अथाह कुण्ड''** -११:७ देखें ! यह मरे हुए लोगों की जगह है (६:१ के नोट्स देखें) । ख्रीष्ट विरोधी के राज्य का भविष्य का प्रधान वहीं का होगा । यूहन्ना के समय में उसका उदय भविष्य में था ।

**''विनाश''** -१६:२० ।

**''ज़िन्दगी की किताब''** -१३:८; ३:५;२०:१२ ।

**''अचम्भा''** - देखें १३:३ ।

१७:६ यहाँ समझने की ज़रूरत है क्योंकि सात सिर दो बात के संकेत हैं ।

**''सातों पहाड़ जिन पर औरत''** -सात पहाड़ियों पर बसे शहर के रूप में रोम मशहूर था । यूहन्ना पृथ्वी पर किसी और जगह के बारे में नहीं सोच सकता था ।

१७:१० यह पशु के सात सिरों का दूसरा अर्थ था । जूलियस सीज़र से शुरू करके, रोम और इसका साम्राज्य शुरू के ताकतवर राजाओं पर निर्भर था । यूहनना के दिनों में उनमें से पाँच का पतन हो गया था । इसका मतलब हिंसा के द्वरा मौत ! सीज़र से यूहन्ना के दिनों तक (१४० साल का समय), लगभ्ग ११ राजा हुए । उनमें से आठ की या तो हत्या हुयी या आत्महत्या । लेकिन आठ शक्तिशाली राजाओं में से पाँच पर ही रोम मज़बूत बना । जूलिसस सीज़र को मिलाकर, तायबीरियस, कालीगुला, क्लौडियस और नीरो । दूसरे तीन (गलबा, ऑटो और विटेलियस) ज़्यादा खास नहीं थे और बीच में करीब दो साल उन्होंने शासन किया ।

११ जब वह आएगा, थोड़े समय के लिए ज़रूर बना रहेगा। **वह** जानवर जो पहले था और अब नहीं है, वह खुद
१२ आठवाँ राजा है। हालाँकि वह सातों में से एक है जो नाश होने वाला है। **दस** सींग जो तुमने देखे थे, वे
दस राजा हैं जिन्हें अब तक राज्य नहीं मिला है। लेकिन इन राजाओं को एक घंटे के लिए पशु के साथ राज्य
१३ करने का अधिकार मिलेगा। **इन** राजाओं का एक ही मकसद है। वे अपनी ताकत और अधिकार पशु को देंगे।
१४ **वे** सभी मेम्ने (यीशु) से लड़ेंगे, लेकिन मेम्ना उनको जीत लेगा। वही प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है।
१५ जो मेम्ने के साथ हैं, उन्हें चुना हुआ और विश्वासयोग्य कहा जाता है। **तब** स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, कि जिस
१६ पानी पर तुमने व्यभिचारिन को बैठे देखा है, वह भीड़ देश और अलग ज़ुबान के लोग हैं। **जिन** दस सींगों
और जानवर को तुमने देखा था - वे व्यभिचारिन से नफरत करके उसे नंगा और बर्बाद कर देंगे। वे उसे खाएँगे
१७ और जला डालेंगे। **परमेश्वर** ने अपने मकसद को पूरा करने के लिए उनको एक मन दिया, ताकि जब तक

---

''एक'' यूहन्ना के समय में डौमीशीयन राजा था । या अगर यूहन्ना ने ५४-६८ ए.डी. में प्रकाशितवाक्य लिखा (जैसा कुछ सोचते हैं ) तो नीरो बादशाह था । (इस स्थिति में जो राजा आए और चले गए-हिंसात्मक तरीके से नहीं - वे जूलियस सीज़र, ऑगस्तुस, तायबीरियस, कालीगुला, क्लौडियस होंगे और नीरों छठवाँ राजा ।

''एक अभी तक नहीं आया है'' - वह सातवाँ राजा है जिसकी जगह आठवें ने ले ली है (पद ११), वह अधोलोक से निकलेगा (पद ८) । डॉमीश्यिन (या नीरो) के बाद तमाम राजा हुए जब तक ४०० साल बाद रोमन साम्राज्य बर्बाद न हुआ । लेकिन यह सारा समय शान्ति से समाप्त हो गया क्योंकि उसका इस पुस्तक से कुछ सम्बन्ध नहीं था । प्रकाशितवाक्य रोमन साम्राज्य का इतिहास नहीं बताती, लेकिन अन्त के दिनों की एक तस्वीर दिखाती है । १०, ११ में पुर्नजागृत रोमी साम्राज्य के एक तानाशाह की उत्पत्ति के बारे में बताने के बाद स्वर्गदूत अन्त की बातों की तरफ बढ़ जाता हैं ।

''थोड़े समय'' - १३:५ ।

१७:११ स्वर्गदूत के शब्दों को देखें ''पशु.....आठवाँ राजा'' है । इसके पहले कि वह यूहन्ना से बोले, वह था लेकिन बाद में शक्ति के साथ आएगा ।

''वह सातों में से एक हैं'' इसलिए कि वह अधोलोक में से आता है (पद ८;११:७) ।ऐसा लगता है वह मरे हुओं में से जी उठा है । १३:३ से तुलना करें ।

१७:१२,१३ **''दस सींग''**-पद ३; १३:१, दानि ७:७ यहाँ फिर से ये दस राजा यूहन्ना के समय के लिए भविष्य थे और अब तक पशु को मदद नहीं दी है । इसलिए कि वे सभी एक ही समय पर यह करते हैं, ज़रूर वे रोम को छोड़कर दूसरी जगहों के शासक होंगे । एक ही समय में रोम के ११ (ग्यारह) राजा नहीं हो सकते हैं ।

**''एक घण्टे''** - थोड़ा समय, तुलना करें १३:५ ।

**''एक ही मकसद''** - शायद पशु के नेतृत्व में संसार पर शासन -१३:७।

१७:१४ **''मेम्ने से लड़ेंगे''** - १३:७, मेम्ने के लोगों से लड़ना मेम्ने के लोगों से लड़ना है । प्रेरित ६:४,५ से तुलना करें ।

**''मेम्ना उन्हें जीत लेगा''**- १६:१६-२१ ।

**''जो मेम्ने के साथ हैं''** -१६:१४ ।

१७:१५ **''पानी''**- पद १ अगर वेश्या रोम पर बैठी है, तो उसी समय दूसरे और लोगों पर कैसे बैठ सकती है ? रोम उसका घर है । उसकी गतिविधियों का केन्द्र है । लेकिन दुनिया के सभी देशों पर प्रभाव डालेगी ।

१७:१६ **''व्यभिचारिन से नफरत''**- वह उन पर बैठेगी, लेकिन वे इस बात से खुश न होंगे । जब मौका मिलेगा वे खिलाफ हो जाएँगे और उसे बर्बाद कर डालेंगे ।

**''उसे खाएँगे''** - इसका मतलब है उसकी दौलत ले लेंगे ।

**''जला डालेंगे''**- शायद उसकी सम्पत्ति और जायदाद को जलाया जाएगा जो हाथ से निकल जाएगी और सारे शहर को खत्म कर देगी (१८:८-६) । यह कल्पना करना मुश्किल है कि पशु और दस राजा अमीर व्यापारिक केन्द्र से नफरत करेंगे ।

१७:१७ **''एक मन दिया''** - नीति १६:६,२१:१, उत्पत्ति ४५:५ से तुलना करें । चाहे दुष्ट लोग परमेश्वर से कितनी नफरत करें, परमेश्वर का उद्देश्य पूरा होकर रहेगा ।

**''जब तक परमेश्वर की बात पूरी न हो''**-१०:७ मत्ती ५:१८ । जो परमेश्वर कहते हैं वह होकर रहेगा ।

१७:१८ यूहन्ना को यह प्रकाशन दिए जाने के समय, जब स्वर्गदूत यह सब बता रहा था, तब रोम काफी बड़े क्षेत्र पर राज्य कर रहा था । उसके लिए यह मात्र 'शहर' था । पद ६ और १८:२० देखें । हम सोच सकते हैं, कि शायद वह नहीं जानता था कि

१८ परमेश्वर की कही बात पूरी न हो जाए तब तक जानवर को अपनी अपनी हुकूमत का हक सौंप दें। **यह** स्त्री
**१८**,१ जिसे तुमने देखा था, वह बड़ा नगर है जो इस दुनिया के राजाओं पर राज्य करता है। **इसके** बाद मैंने एक और
२ स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखा जिसे बड़ा अधिकार था। उसके तेज से पृथ्वी चमक उठी। **उसने** ऊँची
बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा, ''महानगर बाबुल ढह गया, ढह गया! वह प्रेतात्माओं का निवास और सब
३ तरह की गंदी आत्माओं का अड्डा था। **क्योंकि** उसके व्यभिचार की वासना की शराब सभी देशों ने पी है। इस
दुनिया के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है। उसकी विलासिता की वजह से व्यापारी अमीर हो गए हैं।
४ **मैने** स्वर्ग से आने वाली एक और आवाज़ को यह कहते हुए सुनाः मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ, ताकि
५ तुम उसके अपराधों में हिस्सेदार न बनो और उस पर आनेवाली विपत्तियों से बच सको। **क्योंकि** उसके
अपराध स्वर्ग तक पहुँच गए हैं और परमेश्वर ने उसके गलत कामों को अपने सामने रखा है। जैसा उसने तुम्हारे
साथ किया है, वैसा ही उसके साथ करो और उसके कामों के मुताबिक उसे दुगूना बदला दो। जिस प्याले से

---

रोम जाली मसीहियत का केन्द्र बनेगा, लेकिन उसे मालूम था इस युग के अन्त में यह प्रमुख घटनाओं का केन्द्र होगा । औरत रोम शहर है जो वहाँ के लोगों के चालचलन और धर्म को दिखाता है ।

१८:१ **''एक और स्वर्गदूत''** -एक स्वर्गदूत तो पहले ही से यूहन्ना से बातचीत कर रहा था । उसका एक उद्देश्य यह था कि यूहन्ना को बड़ी व्यभिचारिन की सज़ा को दिखाए (१७:१) । यह उसने पद १६ में किया । फिर दूसरा स्वर्गदूत ऐलान करने क्यों आता है ? शायद इसलिए कि यह अध्याय उसके पतन (ढह जाना) के दूसरे पहलू को दिखलाता है या उसका पतन दो हिस्सों में है ।

१८:२ **''ढह जाना'' ''ढह गया''** - १४:८; यशा २१:६। ''ढह जाना'' शब्द दो बार क्यों आया है ? शायद ज़ोर डालने के लिए या इसलिये कि वह अपनी ऊँची धार्मिक हालत से पहले गिरती है और बाद में अपने व्यापार के दायरे में । एक को बर्बाद करने से (१७:१६) पशु यह पाता है कि उसने दूसरे को भी बर्बाद कर दिया है । या इसका मतलब यह भी हो सकता है कि यह औरत 'बाबेल' पहले आत्मिक, नैतिक रीति से ढह गयी और बाद में सचमुच में बर्बाद हो गयी ।

**''प्रेतात्माओं का निवास''** - यह शायद आत्मिक बर्बादी की तरफ इशारा है जो परमेश्वर से पूरी तरह दूर होने को दिखाता है (मत्ती ४:२५ में दुष्टात्माओं पर नोट्स देखें) । पुराने सचमुच के बाबेल की बर्बादी के बाद, यह दुष्टआत्माओं का निवास बन गया था (यशा १३:१६-२२; यिर्म २२:३६; ५१:३७) । रहस्यमयी बाबेल इन से भी ज़्यादा बुरी चीज़ो से भरी हुयी है ।

१८:३ **''व्यभिचारी की वासना की शराब''** - १७:२ । यहाँ शराब को ''जलजलाहट पैदा करनेवाला'' कहा गया है । यिर्म ५१:७ से तुलना करें ।

**''व्यापारी''** -पद १,१५, २३। पहली बार यहाँ इनके बारे में लिखा है । अब तक यह सवाल ही नहीं उठा था कि अध्याय १७ की वेश्या एक शहर की तरफ इशारा है जो एक बड़े और ताकतवर क्रम को दिखाता है । यह भी सच है कि एक बड़ा शहर धर्म से बढ़कर है ।

**''व्यापारी''**-पद ११, १५,२३ । यह शब्द इस किताब में पहली बार आया है । अब तक कुछ भी कारण नहीं था कि हम यह सोचें कि अध्याय १७ का व्यभिचारिन शब्द एक ऐसे शहर की तरफ इशारा है जो बड़े और ताकतवर धार्मिक ढाँचे को दिखाता है । बेशक, एक बड़ा शहर इसके धर्म से बढ़कर है ।

**''विलासिता''** - पद ७,६ ।

१८:४ **''स्वर्ग से आनेवाली आवाज़''** - इब्रा १२:२५ से तुलना करें ।

**''निकल आओ''** - यशा ५२:११, यिर्म ५१:४५; २ कुरि ६:१७ । आखिरी दिनों में परमेश्वर के कुछ लोग इस रहस्यमयी बाबुल का हिस्सा होंगे । बाहर निकल आने का मतलब रोम शहर से बाहर आ जाना नहीं है । इसका मतलब है उस ढाँचे से बाहर आना, जिसे यह शहर दिखाता है और इस मुनाफे के फायदे से भी जिसके बारे में अगले अध्याय में है । १ तिमोथी ६:१०,११ ।

**''अपराधों में हिस्सेदार''** - इसका मतलब उस सज़ा में भी शामिल होना है । बुराई के साथ साझेदारी खतरनाक है ।

१८:५ **''स्वर्ग तक''**-यिर्म ५१:६ । सृष्टि की शुरूआत में जब वे स्वर्ग तक पहुँचना चाहते थे, उन्होंने बाबुल का बुर्ज़ बनाया था ।

**''सामने रखा है''** -१६:१६ ।

१८:६ **''जैसा उसने तुम्हारे साथ किया है, वैसा ही उसके साथ करो''**-यहाँ इन्साफ का वह सिद्धांत है, जिसे बाईबल में बताया गया है । निर्ग २१:२३-२५; लैव्य २४:२५; २६:२३,२४; एस्तेर ७:१०; भजन १८:२५-२७, यशा ५६:१८;

६ उसने उण्डेला है, उस के बदले में उसके प्याले में दुगुना दे दो। **जिस** तरह से उसने अपने आप को इज़्ज़त
दी है और विलासिता में जीवन बिताया है, उसी अनुपात में उसको पीड़ा और दुख दो। क्योंकि वह अपने मन
७ में कहती है, "मैं रानी की तरह बैठी हूँ और विधवा नहीं हूँ, मुझे कभी भी कुछ दुख नहीं होगा। **इसलिए** एक
ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगीः मौत, विलाप और अकाल। वह आग से भस्म हो जाएगी, क्योंकि इन्साफ
८ करनेवाले प्रभु परमेश्वर ताकतवर हैं। **इस** दुनिया के जिन राजाओं ने उससे व्यभिचार किया है और उसके
साथ शान शौकत में रहे हैं, वे उसे जलता हुआ देखकर उसके लिए रोएंगे और विलाप करेंगे,
९ **उसकी** पीड़ा की वजह से वे डर कर दूर खड़े रह कर कहेंगे, 'हाय, हाय, बड़े शहर बाबुल! ताकतवर शहर।
१० एक घण्टे ही में तुम्हें सज़ा मिल गयी।' **इस** दुनिया के व्यापारी उसके लिए रोएंगे और दुख मनाएँगे,
११ क्योंकि उनसे कोई भी कुछ खरीदेगा नहीं। **सोना** चाँदी, कीमती पत्थर और मोती, बढ़िया मलमल, बैंजनी कपड़े,
रेशम और लाल कपड़े, हर तरह की लकड़ी और हाथी दाँत की बनायी चीजें, महँगी लकड़ी, पीतल, लोहे और
१२ मार्बल क़ी चीजें। **दालचीनी**, इत्र, सुगंधित पदार्थ, लोबान, शराब, तेल, ऊँची किस्म का आटा, जानवर, भेड़, घोड़े,
१३ रथ, गुलाम और मनुष्य। **जिस** फल की तुम्हारी आत्मा कामना करती रही, वह तुमसे जाता रहा। तुम्हारी
१४ विलासिता और शान तुमसे जाती रही और तुम उसे कभी नहीं देखोगे। '**जो** व्यापारी उसकी वजह से अमीर
१५ बन गए थे, वे उसकी पीड़ा के डर से बहुत दूर खड़े बिलख बिलख कर रोएंगे। **वे** कहेंगे "हाय! हाय! वह बड़ा
१६ शहर जो बढ़िया मलमल, बैंजनी और लाल कपड़े और सोने, कीमती पत्थर और मोतियों से सजा हुआ था, **एक**
घण्टे ही में उसकी बड़ी सम्पत्ति गायब सी हो गयी। जहाज का हर एक कप्तान और वे जो जहाज़ से यात्रा
१७ करते हैं, मल्लाह और जो समुद्री व्यापार करते हैं, दूर खड़े रहे। **जब** उन्होंने उसके जलने का धुआँ देखा, तो

---

यिर्म ५१:५६; रोमि २:५-११; गल ६:७-९) ।

१८:७ इस पद में तीन बुराइयों के बारे में लिखा है - अपनी बड़ाई, ठाठ-बाट की ज़िन्दगी और घमण्ड ।
**"अपने आप को इज्ज़त"** - उसने जो कुछ किया वह सब उसके खुद के लिए था, न कि परमेश्वर के लिए ।
**"विलासिता"** - इस ठाठ-बाट की ज़िन्दगी के लिए भी परमेश्वर उसे सज़ा देंगे । जब दुनिया के ज़्यादा लोग गरीबी, चिथड़ों और भूख में जी रहे हैं, ठाठ-बाट से जीना बुरा है । यह इस बात को भी दिखाता है कि ऐसे लोगों के पास परमेश्वर के लिए कोई भूखे नहीं हैं ( लूका १६:१९-२१), और वे लोग सज़ा पाएँगे जो इस के दोषी हैं - याकूब ५:१-५ ।

१८:८ **"एक ही दिन"** - अचानक और जल्दी ही ऐसा लगता है कि उसकी बर्बादी में दो या तीन स्तर हैं । पहला है मौत, विलाप अकाल, आग और फिर शायद बड़ी बर्बादी (पद २१) । अकाल को बढ़ते जाने और एक शहर पर असर डालने में समय लगता है ।

१८:९ दुनिया के राजा (वे) - पद ३, १७:२ । ये उन राजाओं से फर्क हैं जो १७:१२,१७ में हैं। अगर वे वही हैं तो इसका मतलब हैं कि उन्होंने रोम जैसे व्यापारिक केन्द्र को नाश नहीं करना चाहा । वे पशु और स्त्री से फर्क हैं ।
**"विलाप"** -क्योंकि उनकी ताकत का एक खास स्रोत और असर नाश किया जाता है ।

१८:१० **"डर"** - उनका अपना भविष्य बड़ा डरावना होगा ।
**"बड़े शहर बाबुल"** - १७:१८ ।

१८:११-१७ **"व्यापारी"** - पद ३। रोम एक बड़े व्यापारिक ढाँचे को दिखाता है (पद २३) । अलग-अलग देशों की अर्थव्यवस्था एक साथ बन्ध जाएगी । जब एक देश पर असर होता है तब दूसरे देशों पर भी असर होता है ।
**"डर"** (पद १५) यह डर कि उन पर भी ऐसी मुसिबत न आ पड़े ।
**"रोएँगे"** - जिन लोगों के पास यहाँ दुनिया की दौलत है (स्वर्ग में नहीं - मत्ती ६:१९-२१), घबरा जाएंगे और दुखी हो जाएंगे । जब उन्हें यह लगेगा कि उनकी दौलत जाती रहेगी ।

१८:१३ "लोगों की आत्मा और देह" बाबेल को परवाह नहीं कि लोगों का क्या होगा, लेकिन यह कि वह उन लोगों से क्या हासिल करेगी । वह लोगों को हर तरह से अपनी गुलामी में लाना चाहती है । उनके अगुवे लोगों की आत्मा को जानवरों की तरह बेच डालेंगे ।

१८:१७-१९ मल्लाह और कप्तान उनके साथ विलाप करेंगे । समुद्री व्यापार के लिए रोम का पतन एक गम्भीर बात होगी ।
"क्या इस तरह का कोई शहर था ।" क्या भविष्य में रोम व्यापारिक केन्द्र के साथ-साथ राजनैतिक केन्द्र भी होगा ? यह इस अध्याय और सवाल से लगता भी है ।

१८ चिल्ला कर कहा, "क्या इस शहर की तरह कोई शहर था। **इन्होंने** अपने सिर पर धूल डालते हुए ऊँची आवाज़
में रोते-बिलखते हुए कहा, "हाय! हाय! वह बड़ा शहर जहाँ पर पानी जहाज के मालिक, उस औरत की दौलत
१९ से अमीर बन गए थे। क्योंकि एक ही घण्टे में वह बर्बाद हो गयी।' **हे** स्वर्ग, पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं,
२० इस बात से खुश हो, क्योंकि परमेश्वर ने उसको सज़ा दी है।" **एक** ताकतवर स्वर्गदूत ने एक चक्की के पत्थर
के समान एक बड़े पत्थर के चक्के को समुद्र में डाल दिया और कहा, "इस तरह से बड़ा शहर बाबुल बहुत
२१ बहुत ज़ोर से ऐसा फेंक दिया जाएगा कि उसका नामोनिशान नहीं मिलेगा। **वीणा** बजानेवालों, संगीतज्ञों, बाँसुरी
२२ बजानेवालों, तुरही फूँकनेवालों की आवाज़ फिर कभी तुझमें सुनायी नहीं देंगी। **किसी** भी काम को करनेवाला कोई
व्यक्ति तुममें फिर कभी पाया नहीं जाएगा। रात में की जानेवाली रोशनी फिर कभी दिखायी नहीं देगी। दुल्हे और
दुल्हन की आवाज़ तुम्हारे यहाँ नहीं सुनायी देगी। दुनिया के बड़े लोग और सभी देशों के व्यापारी तुम्हारे जादू
२३ टोने से छले गए थे। **इस** पृथ्वी पर जो लोग मार डाले गए थे उनका, पवित्र लोगों का और भविष्यद्वक्ताओं का
**१९**,१ खून तुम में पाया गया था।" **इन** सब बातों के बाद, स्वर्ग में बहुत से लोगों की एक बुलन्द आवाज़ मैंने सुनी,
२ "हालेलूयाह! मुक्ति, शान, इज़्ज़त और ताकत हमारे प्रभु परमेश्वर के पास हैं। **क्योंकि** उनका इन्साफ़ सच्चा
और ठीक है, क्योंकि उन्होंने बड़ी व्यभिचारिन को सज़ा दे डाली है, और जिन सेवकों का खून उसने बहाया
३ उसका बदला लिया है। **उन्होंने** फिर से कहा, "हालेलूयाह! और हमेशा-हमेशा के लिए उसके जलने का धुआँ उठता

---

**"अमीर"** - (पद १९) राजा उसकी शक्ति के बारे में सोचेंगे (पद १०)। व्यापारी और मल्लाह अपनी दौलत के बारे में ।

१८:२० इस वाणी के स्वर्ग से आने की बात यहाँ है (पद ४) । ध्यान दें कि एक ही घटना के बारे में विश्वासियों और अविश्वासियों के विचार कितने भिन्न हैं? इस दुनिया के लोगों के लिए बाबुल का नाश दुख की बात होगी, लेकिन परमेश्वर और उनके लोगों के लिए खुशी की बात है । लूका १६:१५; यशा ५५:८,९ से तुलना करें । इसका मतलब, एक ऐसे क्रम का खत्म हो जाना जो लोभ और पैसों के प्यार का है । एक ऐसा क्रम जो अधिकार की ज़्यादा और लोगों की भलाई की कम सोचता है । एक ऐसा ताना बाना जो भोग विलास को ज़्यादा और परमेश्वर को कम जगह देता है । ऐसे सिस्टम को बर्बाद किया जाना ज़रूरी है ।

१८:२१,२२ ऐसा लगता है कि बेबिलोन का आखिरी नाश अचानक होनेवाली हिंसा से होगा ।

**"फिर कभी"** - रोम को लोगों ने एक नाम दिया था । वह था "अनन्तकालिक शहर", यह भी झूठा ठहरेगा ।

१८:२३ **"दुनिया के बड़े लोग"** -पद ११,१४,१५ । हम फिर देखते हैं कि शहर एक व्यापारिक ढाँचे की तरफ संकेत है जिसमें ताकतवर बैंकर और व्यापारी हैं ।

**"छले"** -१२:९ । इसका मतलब है खटाई से दूर हट कर दुष्टता में गिरना । शैतान उसे इसी उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करता है ।

**"जादूटोने"** - इसकी तुलना नहूम ३:४ में नीनवे से करें ।

१८:२४ **"जो लोग मार डाले गए"** - किसी एक शहर के बारे में ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? इसी से मिलती जुलती बात मत्ती २३:३५, और नोट्स में देखें । बड़ा बाबुल अपने रवैये और बर्ताव से इतिहास के सबसे हिंसात्मक सताव को दिखाता है ।

१९:१ **"हालेलूया"**- न्यू टेस्टामेन्ट में इस अध्याय के पहले ६ पदों में यह शब्द आता है । यह इब्रानी के दो शब्दों से बना है । पहला है हालत या स्तुति और "जह" (याह) मतलब यहोवा परमेश्वर । इसका अर्थ होगा "परमेश्वर की बढ़ाई हो या याहवे की तारीफ हो ।

**"परमेश्वर के पास हैं"** - ४:११; ५:१२; ७:१०,१२ ।

**"व्यभिचार"** - १७:२,५ ।

**"बदला लिया है"**- ६:१०; १७:६; १८:२० । हमारा काम बदला लेना नहीं है । जब परमेश्वर बदला लेते हैं स्वर्ग में बड़ी खुशी मनायी जाती है । वे जान जाते हैं कि सारी दुनिया के लिए यह न्यायी परमेश्वर का काम है ।

१९:३ वे परमेश्वर की बड़ाई करते हैं कि, ...बड़ा बाबुल बर्बाद किया जाएगा । पृथ्वी को गंदा करने और सच्चे लोगों को सताने में वह फिर सफल न हो सकेगी ।

**"हमेशा हमेशा"** - १४:११ ।

१९:४ बुजुर्गों - "जीवित प्राणियों" - ४:४,६-८ ।

४ रहेगा।" **और** चौबीसों बुजुर्गों और चार जीवित प्राणियों ने परमेश्वर को जो सिंहासन पर बैठे हुए थे, साष्टांग
५ प्रणाम किया और आराधना करते हुए कहा, "आमेन, हालेलूयाह!" **तब** सिंहासन से आती हुयी यह
आवाज़ सुनायी दी, "तुम सभी जो सेवक हो, चाहे छोटे हो या बड़े और उनसे डरते हो, परमेश्वर की बड़ाई
६ करो।" **फिर** मुझे भीड़ का सा शोर सुनायी दिया। यह बहुत ढेर पानी और ज़बरदस्त गडगड़ाहट की तरह शब्द
७ था, हालेलूयाह, शक्तिमान प्रभु परमेश्वर शासन कर रहे हैं। **आओ** हम खुश हों और परमेश्वर की बड़ाई करें
८ क्योंकि मेम्ने की शादी का समय आ गया और उसकी पत्नी ने अपने आपको तैयार किया है। **पहनने** के लिए उसे
अच्छे किस्म की साफ और चमकती हुयी मलमल दी गयी। यह अच्छी किस्म की मलमल सन्तों के धार्मिकता के
९ काम हैं।" **और** उसने कहा, "लिखोः वे आशीषित लोग हैं जिन्हें मेम्ने की शादी के खाने पर बुलाया गया है।" उसने
१० मुझ से यह भी कहा, "यह परमेश्वर की कही गयी सच्ची बात है"। **और** मैंने उसके पाँवों पर गिरकर उसकी
आराधना की। उसने मुझ से कहा, "देखो, ऐसा मत करो! तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के साथ, जिनके पास गवाही

---

**"आमेन"** - १:६ ।

१६:५ **"सिंहासन से"** - १६:१७; २१:३ ।

**"आराधना"** - भजन ३३:१-३ के नोट्स देखें ।

**"डरते हो"** - १४:७; १५:४; उत्पत्ति २०:११ के नोट्स; अय्यूब २५:२८; भजन ३४:११-१४; ८०:११; १११:१०; नीति १:७; रोमि ३:१८; १पत १:१७; २:७। यहाँ ध्यान दें कि परमेश्वर के सेवक और जो उनसे डरते हैं, एक ही लोग हैं । बिना परमेश्वर के लिए इज्ज़त यह मुमकिन नहीं है कि कोई परमेश्वर की सेवा करनेवाला हो । एक इन्सान सृष्टिकर्ता का सेवक कैसे ही हो सकता है अगर उनके लिए मान-सम्मान नहीं, और यह भावना भी नहीं कि मैं कैसे उन्हें चोट पहुँचाने से रुकूँ ।

१६:६ **"शासन"** -११:१५। यह बड़ी स्तुति और प्रशंसा का एक कारण है । सारी पृथ्वी पर परमेश्वर शासक हैं । धार्मिक और गैर धार्मिक शासनों को जो बुरे हैं, वह बर्बाद कर डालेंगे ।

१६:७ **"शादी"** - जो इस युग में मसीहियों के साथ-साथ है उसका सार्वजनिक तरीके से जश्न मनाया जाना । दुल्हिन का मतलब यीशु की देह (लोग) । देखें रोम १२:४,५; १कुरि. १२:१२; इफि १:२३; ५:२३; कुलू १:१८ । इस विषय पर देखें मत्ती २२:२-१४; यूहन्ना ३:२९; १७:२०-२३; रोमि ६:३; ७:४; २ कुरि ११:२; इफि ५:२२-३२ । ओल्ड टेस्टामेन्ट में इस्राएल को परमेश्वर की पत्नी कहा गया था । देखें यशा ५४:५-७ यिर्म ३:१४,२० ३१:३२; होशे २:१६, १८,२०। श्रेष्ठगीत पर नोट्स और भजन ४५:८-१७ देखें ।

**"पत्नी ने उसको तैयार किया है"**-तुलना करें इफि ५:२६,२७ । मसीह अपनी दुल्हिन को तैयार करते हैं । तो वह अपने आप को कैसे तैयार करें ? सहयोग और आज्ञा मानने से

१६:८ **"अच्छे काम"** - विश्वासियों को यीशु ने निर्दोष ठहराया है (रोमि ३:२१-२६; १ कुरि १:३०; २ कुरि ५:२१, फिलि ३:९)। लेकिन वे अपने अच्छे कामों से इसकी पुष्टि करते हैं । इसी विषय पर मत्ती ५:६; २५:३४-४०; रोमि २:६-१०, याकूब २:१४-२६ देखें । "खरा जीवन न होता" दिखाता है कि सच्चा विश्वास है ही नहीं ।

१६:९ **"बुलाया गया है"** - यह उन लोगों की तरफ इशारा नहीं है जो खुला निमंत्रण स्वीकार नहीं करते हैं (तुलना करें मत्ती २२:२-७; लूका १४:१६-२४)। इसका मतलब है स्वर्ग में एक खास निमंत्रण उन लोगों को, जिन्होंने धरती पर यीशु को अपनाया है। "बुलाए हुए" वे हैं जो उपस्थिति होते हैं (रोमि ८:३०)। वे कौन हैं ? क्या इसमें कोई शक है उनका झुण्ड ही दुल्हन कहलाएगा । दुल्हन का प्रतीक उनके लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है । मत्ती २२:२-१४ में जो लोग राजा के नेवते को स्वीकार करके शादी के कपड़े पहन कर आए हैं, वे ही दुल्हे (राजा के बेटे) की दुल्हन हैं । नेवते को स्वीकार करने से वे दिखाते हैं कि वे दुल्हन का हिस्सा हैं ।

**"आशीषित"** - उत्पत्ति १२:१-३, गिनती ६:२२-२७; भजन १:१; मत्ती ५:३ ।

**"सच्चे शब्द"** - यह स्वर्गदूत की बनायी बातें नहीं हैं। बाईबल में हर जगह सृष्टिकर्ता ने कुछ न कुछ कहा है (इब्रा १:१,२)। उन के प्रगट किए हुए शब्द पर भरोसा किया जा सकता है ।

१६:१० अगर यह १८:१ वाला स्वर्गदूत है, तो शायद यूहन्ना उसकी शान, जलवे, अधिकार और आशीष की बातों से आत्मविभोर हो गया था, और उसे मसीह समझ बैठा ।

**"ऐसा मत करो"**-जैसा लूसीफर के मन में है, वैसी इच्छा किसी अच्छे स्वर्गदूत और अच्छे आदमी में नहीं होगी (देखें मत्ती ४:९) । ये सभी अपनी उपासना के बदले महान परमेश्वर की तरफ ही इशारा करेंगे । जो ऐसा नहीं करता है वह अपनी दुष्टता दिखाता है ।

११ है मैं सेवक हूँ। परमेश्वर की आराधना करो। क्योंकि यीशु मसीह की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।" **और** मैंने
स्वर्ग को खुलते हुए देखा। मैंने एक सफेद घोड़ा देखा, जिस पर कोई बैठे हुए थे। वह विश्वासयोग्य और सच्चे
१२ कहलाते हैं। वह धार्मिकता से इन्साफ करते और युद्ध करते हैं। **उनकी** आँखें आग की लपट की तरह थीं और सिर
१३ पर बहुत से ताज थे। उनके माथे पर एक नाम लिखा हुआ था, जिसे उनको छोड़ और कोई नहीं जानता था। **वह**
१४ ऐसे कपड़े पहने हुए थे जो खून में डुबाए गए थे। उनका नाम परमेश्वर का शब्द था। **स्वर्ग** की सेनाएँ - सफ़ेद
१५ घोड़ों पर सफेद साफ और बढ़िया किस्म की मलमल पहने हुए मेम्ने के पीछे-पीछे चली जा रही थी। **उनके**
मुँह से तेज धार वाली तलवार निकल रही थी, जिससे वह देशों को मारते थे। वह उनके ऊपर लोहे के राजदण्ड
से शासन करेंगे। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के गुस्से की जलजलाहट से शराब के कुण्ड में अंगूर को रौदेंगे।
१६,१७ **उनके** अपने चोगे और जाँघ पर एक नाम लिखा हुआ थाः "राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु।" **फिर**
मैंने सूरज में एक स्वर्गदूत को खड़े हुए देखा। उसने बुलन्द आवाज़ में चिल्लाकर आसमान में उड़ने वाले पक्षियों

---

**"आत्मप्रेरित संदेश"** - जो इन्सान यीशु के बारे में सही बातें कहता है वह पवित्रात्मा प्रेरित है । यह महान-दैव से प्रेरित बातें होगी और हमारे से समयों और आनेवाले समयों के बारें में ।

१६:११ बडी वेश्या का इन्साफ किया जा चुका है । अब बुरे तिगड्डे (अजगर, पशु और झूठे नबी का समय आ चुका है - ताकि उनकी गुलामी से इस दुनिया को छुड़ाया जाए । यीशु वापस आने पर ऐसा करेंगे (पद २०;२०:१-३) । यहाँ पर यीशु के इस पृथ्वी पर अचानक आने की तस्वीर है । पहली शताब्दी से ये लोग इस घटना का इन्तज़ार कर रहे हैं । १:७ के बारे में पदों को देखें ।

**"सफेद घोड़ा"** - ६:२ के घुडसवार और इसमें काफी फर्क होगा ।

**"विश्वासयोग्य और सच्चा"**- १:५; ३:१४ - यह और कोई नहीं, सिर्फ यीशु हैं । जैसी वेश्या झूठी है और दगाबाज़ है जैसे पशु और नबी हैं, वह ऐसे नही हैं ।

**"युद्ध करता है"**- १७:१४; निर्ग १५:३; यहोशू १०:४२; २३:३; भजन ४५:३-७; यशा ११:४ । यीशु अपनी दुनिया और अपने लोगों के लिए लड़कर जीत हासिल करेंगे । यीशु के पहली बार आने से इसकी तुलना कीजिए (लूका २:७) । गधे पर बैठकर यरूशलेम में दाखिल होने से भी (मत्ती २१:१-५)।

१६:१२ **"आग"** -१:१४ ।

**"बहुत से ताज"** - यही एक जगह है जहाँ यीशु को शाही ताज पहने देखते हैं ।

"उसको छोड़ और कोई नहीं; २:१७; मत्ती ११:२७ से तुलना करें । यीशु क्या हैं, सृष्टिकर्ता ही इसे पूरी तरह समझ सकते हैं ।

१६:१३ **"खून"** -यीशु आज़ाद करनेवाले की तरफ एक इशारा (मत्ती २६:२८; रोमि ३:२४,२५;इफि १:७)। कुछ लोग सोचते हैं कि दुश्मनों को हरानेवाले यीशु को सैनिक की तरह यहाँ दिखाया गया है ।

**"सृष्टिकर्ता का शब्द"** - यूहन्ना १:११,१४ ।

१६:१४ स्वर्गिक या आकाशीय सेनाएँ - निश्चित रीति से दूत (मत्ती १६:२७; २५:३१, २ थिस्सु १:७) । शायद उनके माननेवाले भी (१७:१४; १ थिस्सु के नोट्स देखें) । इस किताब में सफेद मलमल दूतों और परमेश्वर के माननेवालों की पोशाक है (पद ८,१५:६) ।

१६:१५ १:१६ के नोट्स देखें ।

**"मारता"** - २थिस्स २:८; यशा १:४ ।

**"लोहे का राजदण्ड"**- २:२७; भजन २:६ । साफ है कि दुनियाँ के देशों के ऊपर उनका शासन उनके दूसरे आने के बाद है ।

**"जलजलाहट से शराब के कुण्ड में अंगूर"** - १४:१६; यशा ६३:१-४ ।

१६:१६ राजाओं का राजा, मालिकों का मालिक उन सब में सबसे बड़ा और ऊँचा जो शासक और राजा कहलाते हैं । क्या यह किसी और के बारे में कहा जा सकता है जिसका स्वभाव सृष्टिकर्ता का नहीं है, या वह खुद सृजनहार नहीं है ? व्यवस्था
१०:१७; भजन १३६,२,३; दानिय्येल २:४७ से तुलना करें । देखें तिमो ६:१५ जहाँ सृष्टिकर्ता का यही नाम है ।

बाईबल के पहले हिस्से में (यहोवा) महान राजा हैं (भजन ४७:२) । यह यीशु बड़े राजा हैं । वह यहोवा ही हैं (लूक २:११ और दूसरे पद देखें ) । उनके आने पर यह नाम उन पर लिखा होने का मतलब यह है कि वह खुद बादशाहों के बादशाह हैं और मालिकों के मालिक १७:१४ । उनके पास ऐसा नाम नहीं है जो किसी और का है । यह हमारे सर्वशक्तिमान सृजनहार

१८ से कहा, "आओ और महान परमेश्वर के भोज में इकट्ठे हो। **ताकि** तुम राजाओं, कॅप्टेन, ताकतवर
१६ लोगों, घोड़ों, उनके सवारों और सब तरह के लोग-आज़ाद, गुलाम, छोटों और बड़ों का मांस खा सको।" **फिर**
मैंने पशु और दुनिया के राजाओं और उनकी सेनाओं को घोड़े पर बैठे व्यक्ति और उसकी सेना से लड़ने के
२० लिए इकट्ठा देखा। **उस** पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता को जो उसके सामने चिन्ह दिखाता था, पकड़ लिया गया।
इन चिन्हों से वह उनको धोखा देता था, जिन्होंने पशु का चिन्ह लिया था और जो मूरत की आराधना करते
२१ थे। दोनों ही को गंधक से जलती हुयी आग में ज़िन्दा डाल दिया गया। **बाकी** लोगों को घोड़े पर बैठे व्यक्ति के
**२०**,१ मुँह से निकलती तलवार से खत्म कर डाला गया। सभी पक्षी उनके माँस से तृप्त हो गए। **मैंने** स्वर्ग से उतरते
२ हुए एक स्वर्गदूत को देखा, जिसके पास अथाह कुंड की चाभी और बड़ी जंजीर थी। **उसने** अजगर, पुराने साँप,
३ जो कि शैतान है, उसे एक हज़ार साल के लिए बाँध दिया। **उसने** उसे अथाह कुंड में ताले से बंद करके एक मुहर
लगा दी ताकि जब तक हज़ार साल न बीतें, वह देशों को छल न सके। उसके बाद उसे थोड़ी देर तक आज़ाद

---

और मुक्तिदाता का शान से प्रगट होना है । यह हमारी बड़ी उम्मीद है (तीतुस २:१३)। फिलिप्पुस २:६ में दूसरे पद देखें ।

१६:१७,१८ चिड़ियाँ, माँस, घोड़े और इन्सान ये सब बहुत से मारे हुओं के साथ लड़ी लड़ाई की तरफ इशारा है । मेम्ने के ब्याह की दावत और इस दावत में बड़ा फर्क है (पद ६) । वह यीशु के निर्दोष ठहराए लोगों के लिए, लेकिन यह यीशु के विरोधियों के लिए । यह दावत पक्षियों की है जो लाशो का मज़ा उठाते हैं । तुलना करें ३६:१७-२० ।

**"सब तरह के लोग"**- सारी दुनिया के लोग, जिन्होंने पशु का निशान लिया और पद १६ की सेना में शामिल हो गए ।

१६:१६ **"पशु"** - देखें १३:४ । यह पशु है जो यीशु के खिलाफ युद्ध कर सकता है ।

**"इकट्ठा"**- १६:१४,१६ इस युग की यह आखिरी लड़ाई है । बलिराजा यीशु पृथ्वी के सभी शासकों (प्रधानों) के ऊपर हैं। १:५ । वही हैं जिन्होंने फिरौन राजा की फौज़ो को समुद्र में बर्बाद कर डाला था (निग १४:४,२३-३८)। वह इस युद्ध में जीत हासिल करेंगे । हमें यह नहीं बताया गया है कि पशु और राजा क्या सोचेंगे । जो हमें मालूम है वह यह कि वे यह सोच सकते हैं कि यह हमला अन्तरिक्ष से है, और इसका मुकाबला इस धरती को बचाने के लिए किया जाना चाहिए । लेकिन यह संभव है कि वे यीशु से युद्ध करना चाहेंगे । शैतान द्वारा प्रेरित ज़िद्दी बगावत जो जानबूझ के है, उसकी कोई सरहद्द या सीमा नहीं है । याद रखें कि शैतान और उसके दूत आकाश में युद्ध रत हैं (१२:७) । दुनिया में परमात्मा के न्याय के बारे में जानने के बावजूद लोग उनके खिलाफ बगावत में लगे रह सकते हैं (रोमि १:३२) ।

१६:२० **"झूठे भविष्यद्वक्ता"** - १६:१३, २०:१० ।

**"चिन्ह"** - १३:१३-१५ ।

**"जलती हुयी आग"**- २०:१०,१४,१५;२१:८ आग की झील में उनका फेंका जाना एक और सबूत है कि पशु (जानवर) और झूठा भविष्यद्वक्ता व्यक्ति हैं । राज्यों और साम्राज्यों के वहाँ फेंकने के बारे में बाईबल कुछ नहीं कहती है ।

१६:२१ **"मुहँ से निकलती तलवार"** - यीशु के बोलते ही बर्बादी होगी ।

२०:१ इस घटना के पहले यीशु -वेश्या, पशु और झूठे नबी से निबट चुके थे । लेकिन इसके पहले कि यीशु का शासनकाल शुरू हो एक और व्यक्ति का हटाया जाना ज़रूरी है । यही हमारे पास है ।

२०:२ **"अजगर"**- १२:३,६ ।

**"शैतान"** - १ इतिहास २१:२; मत्ती ४:१-१० और यूहन्ना ८:४४ के नोट्स देखें ।

**"बाँध दिया"** - एक तरह से अगर देखें, पहले आगमन पर यीशु ने शैतान को निष्क्रिय (निकम्मा) कर दिया था । कुछ लोग इन पदों का सहारा लेकर कहते हैं कि इस पूरे काल में शैतान बन्धा हुआ है । लेकिन अगर ऐसा है तो वह एक बहुत बड़ी जंजीर से बंधा होगा - देखें १२:१०,१२,१२,१७, १पत ५:८; इफि २:२; ६:११,१२ । यहाँ ध्यान दें कि यीशु नहीं, एक दूत उसे बाँधता है । उसके बाद वह उसे अथाह कुण्ड में फेंकता है । न्यू टेस्टामेंट या कहीं और ऐसा नहीं लिखा है कि शताब्दियों तक वह वहीं रहा है और लोगों को धोखा देने में असमर्थ है ।

२०:३ **"ताले से बंद कर के मुहर"**-तुलना करें । यशा २४:२१-२४ । यह दिखाता है कि वह हिरासत में होगा ताकि निकल कर अपने पैर धरती पर न रख सके ।

हजार साल.....छल न सके - इसलिए कि देशों को धोखा देने का काम वह अभी करता है । जिस घटना के बारे में बताया गया है वह भविष्य की है (१२:६) २कुरि. ४:४; ११:३,१४,१५; २थिस्स २:६,१तिमो ४:१ ।

२०:४ **"सिंहासनों"** - यह नहीं बताता कि वे कहाँ हैं । लेकिन पद १ से पद ६ तक धरती का ही नज़ारा है । पद १ कहता है दूत

४ किया जाएगा। **फिर** मैंने सिहासनों और उनके ऊपर बैठे लोगों को देखा। उन्हें यह अधिकार दिया गया कि वे
इन्साफ़ करें और सजा दें। फिर मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर यीशु की गवाही देने की वजह
से और परमेश्वर के वचन के कारण धड़ से अलग किए गए थे। उन्होंने पशु या मूरत की पूजा नहीं की थी,
न ही अपने माथे या हाथ पर उसका चिन्ह लिया था। वे फिर से जी उठे थे और एक हजार साल तक शासन
५ करते रहे। **बाकी** लोग मर चुके थे। वे तब तक जीवित नहीं हुए, जब तक एक हज़ार साल खत्म नहीं हुए। यह
६ पहला जी उठना था। **आशीषित** और पवित्र वह है जो पहले जी उठने में शामिल होगा। ऐसे लोगों पर दूसरी
मौत का अधिकार नहीं होगा, लेकिन वे परमेश्वर और यीशु के याजक होंगे और एक हज़ार साल तक उनके साथ
७,८ शासन करेंगे। **जब** हज़ार साल पूरे हो जाएँगे, तब शैतान को कैद से आज़ादी दी ज़ाएगी। **वह** युद्ध के लिए गोग-मागोग
९ और पृथ्वी के चारों तरफ के तमाम देशों को इकठ्ठा करने के बारे में धोखा देगा। उनकी गिनती समुद्र की रेत

---

आसमान से नीचे आया और पद ८,९ वे घटनाएँ हैं जो पृथ्वी पर होंगी ।

''अधिकार... इन्साफ करें' - मत्ती १९:२८ से तुलना करें ।

सिर यीशु की .... अलग किए गया - ६:९ ।

जानवर (पशु)- इस युग के आखिर तक ख्रीष्ट विरोधी सबके सामने नहीं आएगा । यीशु ही उससे निबटेंगे (१९:२०, २ थिस्स २:३-८)। यह साफ जाहिर है कि यहाँ बतायी गयी घटनाएँ उसके बाद ही घटती हैं ।

**''फिर से जी उठे''** - इसका मतलब है आत्माओं का देह के साथ फिर दिखना ।

**''शासन करते रहे''** - जैसा महान यीशु ने वायदा किया (२:२६,२७; ३:२१) था । जो लोग पशु द्वारा शहीद किए गए थे, उनके राज्य करने की बात वहाँ है । इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे शिष्य राज्य नहीं करेंगे । उनका शासन करना दूसरी और जगह बाईबल में है । इसलिए उसे दोबारा कहने की ज़रूरत नहीं थी । देखें ५:१०; २तिमो २:१२; रोमि ८:१७; लूका १९:१५;१७,१९ से तुलना करें ।

**''एक हज़ार साल''** - शैतान अथाह कुण्ड में है । यही एक जगह है बाईबल में जहाँ यीशु का उनके लोगों के शासन की अवधि के बारे में है जो इस पृथ्वी पर होगा । लेकिन यह किताब परम पिता की तरफ से एक खास सच्चाई है और कोई आश्चर्य नहीं कि ये बातें पहले नहीं बतायी गयी थीं ।कुछ लोग कहते हैं कि यीशु के आने के बाद पृथ्वी पर सचमुच का शासन नहीं होगा । कुछ यह सिखाते हैं कि इस्राएल के अच्छे दिनों की और आशीष की बातें आज चर्च में पूरी हो रही हैं। शैतान को अपंग कर दिया गया है और यीशु के साथ उनको माननेवाले राज्य कर रहे हैं । कुछ दूसरे लोग सिखाते हैं कि १००० साल पृथ्वी के राज्य के बारे में नहीं हैं, लेकिन आसमान में शासन के बारे में । यीशु के शासन के बारे में यशा २:१-४; ९:६,७; ११:४-१६, २४:२३; ३२:१-५; ३५:१-१०; दानि २:३४,३५, ४४,४५ और ज़कर्याह १४:८-२१ में है ।

२०:५ इसके हिसाब से दो तरह का जी उठना है ।

**''बाकी लोग''** -वे अविश्वासी जो बिना मुआफी पाए मर चुके थे । यूहन्ना ५:२८,२९ से तुलना करें फिलि ३:११ । लूका २०:३५ । लोगों के जी उठने के बारे में और पद - १ कुरि १५:२०-२५; ४२-४,५१-५३; १थिस्स ४:१४-१७ ।

२०:६ आशीषित और पवित्र वे लोग हैं जो यीशु के समय से इस युग के आखिरी समय तक होंगे - मत्ती ५:३; उत्पत्ति १२:१-३; गिनती ६:२२-२७; यूहन्ना १७:१७; रोमि १:७; इफि १:४; २:२१; कुलु १:२; ३:१२; इब्रा १०:१०,१४; १ पत २:९ ।

**''दूसरी मौत''** - पद १४ ।

**''आज़ादी दी जाएगी''**- यह ''थोड़े समय'' के लिए होगा जैसा पद १ में है । यह १२:१२ से अलग है । वहाँ शैतान को आसमान से फेंका गया था यहाँ अधोलोक से आज़ाद किया गया ।

२०:८ **''धोखा''** - तुरन्त वह पुरानी चतुराई करेगा और सफल भी होगा । १ हज़ार साल के इन्साफ सुकून और भरपूरी के बावजूद लोगों के मन गंदे और दुष्ट रहेंगे । ये लोग १ हज़ार साल के दौरान पैदा हुए और बढ़ेंगे भी ।

**''गोग, मागोग''**-यहेज ३९:२ से तुलना करें। यहेज में गोग, मागोग का प्रधान राजकुमार है । मागोग और दूसरे देश जो इस्राएल के खिलाफ आते हैं, इस्राएल के उत्तर से हैं (यहे. ३८:६,१५;३९:२)। ऐसा लगता है इस युग के खत्म होने से थोड़ा पहले वे इस्राएल पर हमला करेंगे । यह १००० साल का राज्य शुरू होने से पहले होगा (यहे.३८:१,८ पर नोट्स देखें । यहाँ गोग और मागोग वे देश हैं जो पृथ्वी के चार कोनों से हैं - यहेज ३८:६,१५;३९:२ अध्याय में हैं ।

२०:९ **''पृथ्वी की सभी दिशाओं''** - यह यहेजकेल ३८/३९ अध्याय के आक्रमकों के बारे में नहीं है (३८:६,१; ३९:२)।

**''प्रिय शहर''** - भजन ८७:२ ।

के बराबर होगी। **और** उन्होंने पृथ्वी की सभी दिशाओं से निकलकर प्रिय शहर और सन्तों के डेरे को चारों तरफ
१० से घेर लिया। तब स्वर्ग में से परमेश्वर की तरफ से आग निकली और उन्हें भस्म कर डाला। **और** शैतान जो
उन्हें धोखे में रखता था आग और गंधक की झील में डाला गया, जहाँ वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता थे। वे वहाँ
११ पर हमेशा हमेशा के लिए दिन और रात पीड़ित किए जाएँगे। **फिर** मैंने एक बड़ा सफेद सिंहासन और उस पर बैठे
१२ हुए को देखा। उसके सामने से पृथ्वी और स्वर्ग भाग खड़े हुए और उनके लिए कोई जगह नहीं मिली। **और** मैंने
उन मरे हुओं को जो छोटे या बड़े थे, परमेश्वर के सामने खड़े देखा और किताबें खोली गयीं। और जीवन की किताब
१३ खोली गयी। मरे हुओं का इन्साफ उन कामों के आधार पर हुआ जिनका बयान इन किताबों में था। **समुद्र** ने उन
मरे हुओं को उगल दिया जो उसमें थे। मौत और अधोलोक ने अपने में समाए मृतकों को उगल दिया और प्रत्येक का
१४,१५ इन्साफ उसके कामों के अनुसार हुआ। **मौत** तथा अधोलोक आग की झील मे डाल दिए गए। यह दूसरी मौत है।
**जिस** किसी का नाम जीवन की किताब में लिखा हुआ नहीं पाया गया, वह आग की झील में डाल दिया गया।
**२१**,१ **फिर** मैंने एक नए स्वर्ग और नयी पृथ्वी को देखा। पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी खत्म हो चुके थे। और समुद्र
२,३ भी दिखायी नहीं दिया। **मैं** यूहन्ना ने पवित्र शहर नए यरूशलेम को दूल्हे के लिए तैयार दुल्हन के रूप में स्वर्ग

---

**"परमेश्वर की तरफ से आग"** - यहेज ३८:३३; ३९:६; भजन ११:६,७ ।

२०:१० **"वे"** मतलब तीनों सताए जाएँगे । इनमें से दो वहाँ १००० साल से रहते होंगे (१९:२०) । आग में डाले जाने का मतलब नष्ट (लोप) हो जाना नहीं है ।

२०:११-१५ लोगों का आखिरी इन्साफ और आसमान ज़मीन का खत्म होना । अभी परमेश्वर का सिहांसन दया है । क्या यह इन्साफ तब होगा जब १००० साल खत्म हो जाएँगे ? यह पहले शब्दों से कुछ मालूम नहीं होता है । यह मुमकिन है कि यहाँ जो कुछ दिखता है वह इन्सान का सिद्धान्त है । हम यह कह सकते हैं कि जो कुछ भी होगा वह १००० साल के बाद होगा । इसका मतलब यह नहीं कि ऐसा ही एक इन्सान १००० साल से पहले होगा ।

**"उस पर बैठे हुए"** - मसीह; यूहन्ना ५:२२; प्रेरित १७:२१ को देखें ।

**"कोई जगह नहीं मिली"** - दूसरे जी उठाए जाने के समय (५) वे जी उठाए तो जाएँगे, लेकिन मरे हुए कहलाएँगे, क्योंकि उनके आत्मिक जीवन नहीं होगा । तुलना करें इफि २:१; १ तिमो.५:६ ।

**"किताबें"**- यह जीवन की किताब नहीं है । इसमें उनके वे काम लिखे हैं जो उन्होंने इस पृथ्वी पर रहते हुए किए थे ।

**"इन्साफ"** - भजन ६:७,८; ८२:८; ६४:२; ६६:१०-१३; दानि ७:६,१० ।

२०:१३ **"समुद्र"** - शायद इसके बारे में इसलिए लिखा है क्योंकि कुछ लोग सोच सकते हैं कि जो लाशें समुद्र की गहराई में चली गयीं या किसी मछली द्वारा खायी गयी, वापस मिल नहीं पाएँगी । लेकिन समुद्र में मरे लोग भी नयी देह के साथ इन्साफ के लिए खड़े किए जाएँगे ।

**"मौत"** वह ताकत जिसने लोगों की देह को उनकी आत्मा से अलग किया । लेकिन मौत आत्मा और देह को अलग नहीं रख पाएगी ।

**"अधोलोक"**- लूका १६:२३ आदि देखें । वहाँ आखिरी न्याय तक अविश्वासी रखे जाएँगे ।

२०:१४ मौत देह को आत्मा से अलग नहीं रख पाएगी लेकिन, परमेश्वर से दुष्ट के अन्तिम ।

२०:१५ जिनके नाम जीवन की किताब में नहीं होगें उनके पास आत्मिक जीवन नहीं होगा (यूहन्ना १:१२,१३; इफि २:५) । वे २१:८ की सूची के बुरे कामों में लगे रहेंगे । उन्हें वही मिलेगा जो उन्हें मिलना चाहिए । हम फिर याद रखें कि इस न्याय और दण्ड से बचने के लिए रास्ता एक है - यूहन्ना ५:२४; रोमि ८:१ ।

२१:१ **"नए"** -यशा ६५:१७; ६६:२२; २ पत ३:१३;

**"खत्म हो चुके थे"**- २०:११, मत्ती २४:२६, २पत ३:१० ।

**"समुद्र भी दिखायी नहीं दिया"** आज की तुलना में उस समय बिल्कुल फर्क होंगे ।

२१:२ **"नए यरूशलेम"** - गल ४:२६; इब्रा ११:१०,१२:२२,१३:१४, यिर्म ३:२०; यूहन्ना १४:२ ।

**"स्वर्ग से नीचे उतरते देखा"**- आज़ाद किए हुए लोग स्वर्ग में नहीं, पृथ्वी पर होंगे । या हम यह कहें कि स्वर्ग पृथ्वी बन जाती है और पृथ्वी स्वर्ग ।

**"दुल्हन"** - पद ९,१० ।

२१:३ **"स्वर्ग से"** -४:२; १६:१७,१९:५-सारी सृष्टि में अधिकार का केन्द्र ।

"परमेश्वर लोगों के बीच" या नयी पृथ्वी पर /नयी पृथ्वी स्वर्ग बन जाएगी, क्योंकि वहाँ लोगों के परमेश्वर रहा करेंगे ।

३ से नीचे उतरते देखा। **मैंने** स्वर्ग से आती हुयी एक बुलन्द आवाज़ को सुना, "देखो, परमेश्वर लोगों के
४ बीच में हैं, और वे उनके लोग होंगे। परमेश्वर उनके साथ रहेंगे और उनके परमेश्वर होंगे।" **परमेश्वर**
उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेंगे। आगे से मौत, दुख और रोना नहीं रहेगा। दर्द भी खत्म हो जाएगा,
५ क्योंकि पुरानी बातें बीत गयी हैं। **सिंहासन** पर बैठे हुए ने कहा, "देखो, मैं सभी बातों को नया कर देता हूँ।"
६ **उसने** मुझसे कहा, "यह लिख लो, क्योंकि ये बातें सच्ची और मानने लायक हैं।" उसने मुझ से कहा,
"पूरा हुआ। मैं अल्फा और ओमेगा, शुरुआत और आखिर हूँ। जो प्यासा है, उसे मैं जीवन के सोते में से
७ मुफ्त दूँगा। **जो** जीत पाए वह सब कुछ पाएगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा बेटा होगा।
८ **कायर**, अविश्वासी, दुष्ट, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्तिपूजकों और झूठों का हिस्सा उस झील में होगा,

---

यह प्रभु की हमेशा की योजना का पूरा होना है जो इन्सान के लिए थी । निर्गमन २५:८ में नोट्स और पद देखें ।
**"वे उनके लोग परमेश्वर उनके साथ"** - २ कुरि ६:१६, लैव्य २६:११,१२; यहेज ३७:२७; २ कुरि. ६:१६; १ पत २:६।

२१:४ **"आखों"** -७:१७ ।
**"मौत दुख"** - २०:१४ फिर शारीरिक मौत नहीं, न ही सृजनहार से अलगाव ।
**"खत्म हो जाएगा"**- मौत का कारण, रोनाधोना और पीड़ा सबकुछ इन्सान के आज्ञा न मानने से है (रोमि ५:१२)।जब दुनिया से बुराई निकाली जाएगी, तभी दूसरी बातें भी नष्ट हो जाएगी ।

२१:५ **"नया"**-उन्होंने यह काम शुरू कर दिया है देखें २ कुरि ५:१७; इफि २:१० । एक बार जब वर्तमान की पृथ्वी और सब कुछ के द्वारा परमेश्वर के बनाए जाने का मकसद पूरा हो जाएगा, वह उन सब को अलग रखकर सब कुछ नया बना देगें ।
**"सच्ची और मानने के लायक"** - १६:६; २२:६ । ये सब काल्पनिक नहीं हमेशा की सच्चाईयाँ हैं ।

२१:६ **"उसने"** - सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने ।
**"पूरा हुआ"**-जब परमेश्वर कहते हैं कि ऐसा हो चुका है, इसका मतलब है, ऐसा होगा, हालाँकि कहे जाते समय कुछ होता नहीं दिखाई देता है । देखे यशा. ४६:१०; रोमि ४:१७ ।
**"अल्फा और ओमेगा"** - १:८; २१२:१३ ।
**"जीवन के सोते"** - यहाँ प्रभु जीवन का पानी देते हैं । यूहन्ना ४:१०,१४ यीशु इसे देते हैं । यह बिना कीमत के मिलना है । देखें २२:१७; यहज ५५:१; रोमि ६:२३ ।

२१:७ **"जीत पाए"** - २:७ के नोट्स देखें ।
**"पाएगा"**-१ यूहन्ना ३:१-३; रोमि ८:१५,१६,१७,१६,२३,२६ । इस प्रतिज्ञा के सामने कोई और दौलत महत्व नहीं रखती । ऐसा न सोचें कि सन्तान बनना जीत जाने का ईनाम है। यह प्रभु की कृपा से है-यूहन्ना १:१,१३,१४; गल ४:४-७; इफि २:८-१०; १पत १:३-५ । जीत हासिल करना औलाद बनने की वजह से है । यह हमारे नया जीवन पाने का निशान है (१ यूहन्ना ५:४,५) । लेकिन जीत पाना बिना हमारे सहयोग के संभव नहीं है। जीतना, विश्वास में बने रहना, आत्मिक प्रयास है जो प्रभु की ताकत से है ।

२१:८ दो तरह के लोग होंगे - बचे हुए और खोए हुए; ऐसे प्रभु के लोग जिनके साथ प्रभु हैं (पद ३) और जिन्होंने प्रभु के बनने से इन्कार किया ।
**"कायर"**-इस संदर्भ में इसका मतलब यह है कि जो लोग दूसरों से डर कर मसीह पर भरोसा नहीं करते हैं ।
**"अविश्वासी"** -जिन्होंने रोशनी के बजाए अन्धेरा पसन्द किया । अविश्वास हल्की फुल्की बात नहीं है जिसे हम यो ही जाने दे । पाप की वजह से लोग नरक में रहेंगे ।
**"व्याभिचारियों"** -हर तरह के यौन बुराइयों की तरफ इशारा है । इससे बचने के लिए कहा गया । १ कुरि. ६:६,१०; इफि ५:५,६, कुल ३:५,६।
**"जादूगरों"** - ६:२१; १८:२३; २२:१५, प्रेरित ८:११; व्यवस्था १८:६-१४ ।
**"मूर्तिपूजकों"**-ऐसी दुष्टता जिसे बुरा ठहराया गया है निर्गमन २०:४-६ । प्रभु के लोगों में मूर्तिपूजक नहीं होंगे - जब तक मन बदल के सब मूर्तियों और ईश्वरों को छोड़ न दें ।
**"झूठों"** - देखें पद २७;२२:१५ झूठों को कुत्तों और हत्यारों के साथ गिना गया है । झूठ हल्की बात नहीं है । हर जगह इसे खराब बताया गया है - निर्ग २०:१६; भजन ५:६,१५:२;३१:५, नीति ६:१६-१६; १२:२२;१६५,६,२२; मत्ती १६:१८;

६ जो आग और गंधक से जलती रहती है। यही दूसरी मौत है"। **सात** स्वर्गदूतों में से एक, जिसके पास आखिरी
सात मुसीबतों से भरे सात कटोरे थे, उसने मेरे पास आकर मुझ से कहा, "यहाँ आओ, मैं तुम्हें मेम्ने की पत्नी, दुल्हन
१० को दिखाऊँगा"। **तब** वह मुझे पवित्र आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया और मैंने एक बड़े शहर
११ पवित्र यरूशलेम को स्वर्ग में से परमेश्वर की तरफ से परमेश्वर की शान से भरे हुए उतरते देखा। **परमेश्वर**
की शान उसमें थी और उसकी रोशनी बहुत ही कीमती पत्थर अर्थात बिल्लौर की तरह, यशब के समान साफ
१२ थी। **इस** शहर की बड़ी और ऊँची दीवारों में बारह दरवाज़े थे। इन बारह दरवाज़ों पर बारह स्वर्गदूत
१३ थे। इन दरवाज़ों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे हुए थे। **पूर्व** दिशा के तरफ तीन दरवाज़े, उत्तर दिशा
१४ की तरफ तीन दरवाज़ें, दक्षिण दिशा की तरफ तीन दरवाज़ें और पश्चिम दिशा की तरफ तीन दरवाज़ें थे। **इस**
१५ शहर की दीवार की बारह नींवें थीं। इनके ऊपर मेम्ने के बारह प्रेरितों के नाम थे। **जो** मुझसे बातचीत कर रहा
१६ था, उसके पास शहर, दरवाज़ों और दीवार को नापने के लिए सोने की छड़ थी। **शहर** चौकोर आकार का था।
इसकी लम्बाई, चौड़ाई एक ही थी। उसने उस छड़ से शहर को नापा जो कि बारह हज़ार फर्लांग थी। इसकी
१७ लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई बराबर थी। **तब** उसने दीवारों को नापा और उन्हें छः फुट मोटा पाया (यह उस
१८ इन्सानी पैमाने के मुताबिक था, जिसे स्वर्गदूत ने इस्तेमाल किया)। दीवार यशब की बनी थी और शहर साफ
१८ काँच के समान शुद्ध सोने का था। **उस** शहर की नींव के पत्थर सब तरह के कीमती पत्थरों से सजे थे। नीव
२० का पहला पत्थर यशब, दूसरा नीलम, तीसरा स्फटिक, चौथा मरकत, **पाँचवाँ** गोमेद, छठवाँ माणिक्य, सातवाँ

---

इफि ४:१५,२५; कुलु ३:६ । झूठे लोग शैतान के बच्चे हैं और नरक जाएँगे ।
**"झील"** - १६:२०;२०:६,१६,१०,१४,१५ ।

२१:६ **"आखिरी मुसीबतें"** - १५:१ ।
**"दुल्हन"** - १६:७ ।

२१:१० पद ६ में स्वर्गदूत ने कहा कि वह यूहन्ना को "मेम्ने की पत्नी (दुल्हन)" दिखाएगा । लेकिन परमेश्वर के लोगों को दिखाने के बजाए दूत परमेश्वर के शहर को दिखाता है । यह शहर परमेश्वर के लोगों का घर होगा (पद २७) । अध्याय १७ की व्यभिचारिन को देखें, उसे भी शहर कहा गया है (१७:१८) । शहर में सड़कों और इमारतों से बढ़कर होता है। इसमें वहाँ के लोग भी आते हैं । यह एक धर्म व्यवस्था को भी दिखाता है। मत्ती २३:३७-३६ से तुलना करें । इमारतों और सड़कों ने नहीं, वहाँ के लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं को मारा था । जैसा पुराना यरूशलेम यहूदी लोगों की तरफ संकेत है, नया यरूशलेम, परमेश्वर के छुड़ाए लोग हैं । वे सर्वशक्तिमान प्रभु की शान, पवित्रता और जलवे के हिस्सेदार होंगे ।

२१:११ **"परमेश्वर की शान"** - पद २३ । यूहन्ना १७:२२,२४; रोम २:१०; ५:२;८:१७,१८,३० से तुलना करें ।
**"मोती"** -४:३ ।

२१:१२ **"बारह गोत्र"**-७:५-८ । यह शहर न्यूटेस्टामेन्ट में इस्राएल देश और चर्च दोनों को दिखाता है (पद १४) । ये दोनों हमेशा के लिए एक हैं । तुलना करें, इफि २ १४:२२,रोमि ११:१७-२४ । क्योंकि शहर मसीह की दुल्हन को दिखाता है (पद ६)। ऐसा लगता है कि छुड़ाया हुआ इस्राएल दुल्हन का एक हिस्सा है ।

२१:१४ **"बाहर प्रेरित"** -मत्ती १०:२-४ । यहूदा इस्करियेति ने अपना प्रेरित पद खो दिया था - प्रेरित २:१५-२० । क्या हम अनुमान लगा सकते हैं कि ग्यारहों के साथ और कौन सा नाम होगा ? रोम १:१; १ कुरि. १५:७-१०; गल २:८,६ ।

२१:१६ **"बारह हज़ार फर्लांग"**- लगभग २,२०० किमी । यह शहर बहुत बड़ होगा । साफ ज़ाहिर है कि तमाम छुड़ाए हुओं की संख्या बड़ी होगी । ७:६ से तुलना करें ।

२१:१७ **"छियासठ मीटर"** - दीवार की क्या ज़रूरत है ? शायद उन्हें अलग करने के लिए जो इसमें भागीदार नहीं हैं पद २७; २२:१५ ।

२१:१८ शीशे का सा सोना इन्सान ने नहीं देखा है, (न ही ऐसे मोती जो शहर के दरवाज़ों के बराबर हों पद २१)। परमेश्वर इन कठोर और ठोस पदार्थो तक सीमित नहीं है ।

२१:१६,२०आज हमें मालूम नहीं है कि इन पत्थरों के यूनानी नामों का मतलब क्या है ।

२१:२१ किसी सीपी ने इन मोतियों को नहीं बनाया, लेकिन उसी प्रभु ने जो सब कुछ नया कर देते हैं ।-पद ५ ।

२१:२२ चीज़ो से बने भवन की ज़रूरत नहीं होगी । भवन और तम्बू ओल्ड टेस्टामेन्ट में वह जगह थी जहाँ परमेश्वर का निवास था । (निर्गमन २५:८) । महायाजक के अलावा और कोई वहाँ जा नहीं सकता था । (इब्रा ६:७) । बाकी किसी को इज़ाज़त

२१ पीतमणि, आठवाँ पेरोज़, नवाँ पुखराज, दसवाँ लहसनिया, ग्यारहवाँ धूम्रकान्त और बारहवाँ चंद्रकान्त था। **बारह**
फाटक बारह मोती के थे। प्रत्येक फाटक एक ही मोती से बना था। शहर की सड़क पारदर्शी शीशे की तरह शुद्ध
२२ सोने की थी। **मैंने** शहर में कोई मन्दिर नहीं देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना ही मंदिर हैं।
२३ **उस** शहर को सूरज और चाँद की रोशनी की ज़रूरत नही, क्योंकि परमेश्वर की शान ने उसे रोशनीमय कर
२४ दिया है और मेम्ना उसका दीया है। सब देश के लोग उनकी रोशनी में चलेंगे और दुनिया के राजा अपने प्रताप
२५,२६ को उसमें लाएँगे। **उसके** फाटक दिन के समय कभी बन्द नहीं होंगे, क्योंकि वहाँ रात नहीं होगी। **वे** देशों की
२७ शान और इज्ज़त को उसमें लाएँगे। **किसी** भी तरह की कोई गंदी चीज़ इसमें आ नहीं पाएगी। अशुद्ध या झूठ
**२२**,१ बोलनेवाले भी नहीं, सिर्फ वही जिनके नाम जीवन की किताब में लिखे हैं। **फिर** उसने मुझे ज़िन्दगी के पानी की
एक शुद्ध नदी दिखायी। यह नदी उस नगर के सड़क के बीचों बीच बहती थी। यह बिल्कुल साफ पानी की नदी
२ परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलती थी। **सड़क** के बीचों बीच और नदी की दोनों तरफ जीवन के पेड़
थे। हर महीने इन पेड़ों में बारह तरह के फल निकलते थे। इन पेड़ों की पत्तियाँ देशों के स्वास्थ्य के लिए थीं।
३ **अब** और कोई शाप नहीं रहेगा, लेकिन शहर में मेम्ने और परमेश्वर का सिंहासन होगा और उनके सेवक उनकी
४,५ सेवा करेंगें। **वे** उनकी उपस्थिति में रहेंगे और उनके माथों पर उनका (यीशु का) नाम लिखा होगा। **वहाँ** कभी

---

नहीं थी । नए यरूशलेम में परमेश्वर और मसीह दोनों और उनके लोग भी वहीं साथ में होंगे । पद ३; ३:१३; यूहन्ना १७:२०-२३ ।

२१:२३ **"सूरज और चाँद"** -हमें नहीं मालूम कि हमारे वर्तमान के सूरज चाँद की तरह कुछ होगा - २०:११ ।

**"मेम्ना उसका दिया है"** -यूहन्ना ८:१२, २ कुरि ४:६; १यूहन्ना १:५,६ से तुलना कीजिए । सिर्फ वे लोग जो इस दुनिया में उनकी रोशनी (सच्चाई) में जीएँगे, वही अगली दुनिया में भी ।

२१:२४-२६ यह तस्वीर दिखाती है कि नयी पृथ्वी में छुड़ाए (बचाए) हुए लोग अपने शासकों के साथ अलग अलग ज़मीन के अधिकारी होंगे, शहर में जाएँगे या वहाँ से बाहर आएँगे । लेकिन यह स्पष्ट नहीं है ।

२१:२७ इससे साफ यह दिखता है कि देश और राजा (पद २४:२६) वे होंगे जिन्होंने नया जन्म पाया होगा ।

**"कोई गंदी चीज़"**-इस पृथ्वी पर जहाँ हम रह रहे हैं, बुराई ने इसे गंदा कर दिया है । दूसरी पृथ्वी को ऐसा कोई नहीं कर पाएगा । हमेशा की पवित्रता, बिना किसी दाग के होगी ।

**"झूठ बोलने वाले नहीं"** - हाँ यहाँ किसी तरह का झूठ नहीं होगा ।

२२:१ **"जिन्दगी के पानी की नदी"** - २१:६, भजन ४६:४; यहेज ४६:४ से तुलना करें । हमेशा की ज़िन्दगी का बहाव विश्वासी लोग अनुभव करेंगे ।

**"मेम्ने के सिंहासन"** - परमेश्वर और मेम्ना दोनों ही सिंहासन पर बैठते हैं । नयी पृथ्वी पर शहर में वह सिंहासन होगा नयी पृथ्वी ही वह स्थान होगी जहाँ से परमेश्वर सब जगह शासन करेंगे ।

२२:२ **"जीवन के पेड़"** -२:७ हम मानव जीवन के इतिहास की शुरूआत ही में ज़िन्दगी के पेड़ के बारे में सुनते हैं (उत्पत्ति २:६)। इन्सान इस से दूर रखा गया क्योंकि उसने आज्ञा न मानी (३:२२-२४) । आखिरी नज़ारा (दृश्य) यह है कि मुक्ति पाया हुआ व्यक्ति पेड़ के पास आ सकता है ।

**"बारह तरह के फल"** - उस फल के एक बार के स्वाद से युगों से जो कुछ प्रभु के लोगों को पीड़ित करता रहा है, वह सब खत्म हो जाएगा ।

२२:३ **"शाप"** - उत्पत्ति ३:१७, यशा २४:६ । ओल्ड टेस्टामेन्ट बुरे परिणाम की चेतावनी के साथ खत्म होता है । मलाकी ४:६। बाईबल का अन्त शाप के खत्म होने के वायदे के साथ होता है ।

**"सेवा करेंगे"** ७:१५ देखें । विश्वासियों की सेवा अनन्त समय (युगों) में दाखिल होते ही खत्म नहीं हो जाएगी । हमेशा के लिए प्रभु की सेवा की खुशी में शामिल होने का मौका उन्हें मिलेगा । यह सेवा बिना बुराई, खोट, विरोध और बिना थकान की होगी ।

२२:४ **"उनकी उपस्थिति में रहेंगे"** - मत्ती ५:८, १कुरि १३:१२; इब्रा १२:१४, यशा ३३:१७ ।

**"उनका (यीशु) नाम ...."** - १४:१ वे उन्हीं के होंगे और उनके समान होंगे - रोमि ८:२६; १ यूहन्ना ३:१,२ ।

२२:५ **"रात नहीं"** - २१:२५

**"रोशनी"** -२१:२

रात नहीं होगी। वहाँ किसी तरह की रोशनी, दीपक या सूरज की ज़रूरत भी नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर
६ उन्हें रोशनी देगें। और वे हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेंगे। **और** उसने कहा, ''ये बातें भरोसेमन्द और
सच्ची हैं। पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के प्रभु परमेश्वर ने अपने सेवक के पास स्वर्गदूत को इसलिए भेजा है, कि जल्द ही
७ होनेवाली बातों को बताए। **देखो,** मैं अचानक आनेवाला हूँ। आशीषित व्यक्ति वह है जो इस किताब की भविष्यद्वाणी
८ की बातों को करता है''। **और** मुझ यूहन्ना ने ये सब बातें देखीं और सुनी। इन सब बातों को सुनने और देखने
के बाद जिस स्वर्गदूत ने मुझे ये सब बातें दिखायीं, उसकी उपासना करते हुए मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा।
९ **लेकिन** उसने मुझसे कहा, "देखो, ऐसा मत करो। मैं भी तुम्हारे साथ सेवक और भविष्यद्वक्ता भाइयों का साथी
१० हूँ; सिर्फ परमेश्वर ही को दण्डवत् करो।" **फिर** उस ने मुझ से कहा, "इस किताब की बातों पर मुहर मत
११ लगाओ, क्योंकि समय पास आ चुका है। **जो** बेइन्साफी करने वाला है वह वैसा ही बना रहे, जो दुष्ट है वह दुष्ट, जो धर्मी
१२ है वह धर्मी बना रहे और जो निर्दोष है वह निर्दोष बना रहे। **देखो,** मैं अचानक ही आनेवाला हूँ और लोगों के कामों
१३ के अनुसार उनको दिया जानेवाला प्रतिफल मेरे पास है। **मैं** अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, शुरुआत और अन्त हूँ,

---

**''हमेशा-हमेशा के लिए शासन''**-यह उनकी सेवा का एक हिस्सा होगा । उनका शासन मसीह के १००० साल के शासन के खत्म होने पर खत्म नहीं होगा -२०:४। मसीह के शासन की तरह उन लोगों का शासन दो चरणों में होगा। यहाँ उनके याजक होने के बारे में कुछ नहीं है (जैसा २०:६ में है) ।

२२:६ **''सच्ची''** - १९:९;२१:५ ।

**''पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के प्रभु''** -जिन बातों को याजक सृजनहार पिता ही ने नबियों के मन में डाला (२ पत १:२१), उन्हीं ने बाईबल के लिखे जाने की प्रेरणा दी ।

**''अचानक''** -१:१ पर नोट्स देखें ।

२२:७ ये यीशु मसीह के शब्द है - पद १२,२०, ३:११ । शायद यहाँ यीशु के शब्दों को इफिरिरता (देवदूत) कहता है या स्वयं यीशु ने ये कहे । ''जल्दी ही'' - १:१ के नोट्स देखें ।

**''आशीषित वह व्यक्ति है...''**- १:३ देखें कि यह आशीष किस के लिए है - यह उनके लिए नहीं जो इसका अनुवाद करते हैं या इसके संकेतों का मतलब लगाते हैं । लेकिन उनके लिए जो यह प्रगट की सच्चाई को मानते हैं ।

२२:८ **''मुझ यूहन्ना ने''** -१:९ ।

**''उसके पैरों पर गिर पड़ा''** - देखें १९:१० ।

२२:९ **''ऐसा मत करो''** - ताकि हम स्वर्गदूतों और गंदी आत्माओं का स्वभाव जान सकें । सृष्टिकर्ता के स्वर्गदूत अपनी उपासना पसन्द नहीं करते हैं । शैतान और उसके संदेश वाहक इसे पसन्द करते हैं ।

**''परमेश्वर ही को दण्डवत करो''** - ऐसा व्यक्ति जो किसी स्वर्गदूत, आत्मा, इन्सान, या किसी चीज़ की उपासना सिखाता है, उससे दूर भागें । ऐसी तालीम शैतानी है ।

२२:१० **''मुहर मत लगाओ''** - १०:४ से तुलना करें । किताब को मोहरबन्द न करने का मतलब है कि यह सबके पढ़ने के लिए है । दानि. १२:४ से तुलना करें । दानिय्येल की भविष्यद्वाणी तुरंत समझी नहीं जा सकती थी । लेकिन यूहन्ना द्वारा दी गयी यह भविष्यद्वाणी परमेश्वर के सेवकों को इस समय को समझने के लिए दी गयी थी । (१:१-३) ।

२२:११ मतलब यह लगता है: इस बिना मोहर की किताब में महान महिमा की प्रतिज्ञाएँ, भयंकर दण्ड की चेतावनी की रोशनी में अगर कोई बुराई से लिपटा रहना चाहता है, तो लिपटा रहे । ऐसे इन्सान पर इस बात का ज़ोर नहीं डाला जाएगा कि वह अपना रास्ता बदले । उसकी सज़ा का यह हिस्सा होगा कि उसे मनमानी और गलत करने के लिए छोड़ दिया जाए । इसका उल्टा भी सही है । इस किताब की रोशनी में पवित्र और खरे लोगों को अपने रास्ते पर चलते रहना चाहिए ।

२२:१२ **''अचानक''** - जल्दी के बजाए यह शब्द ज़्यादा सही है । देखें १:१ ।

**''प्रतिफल''** - मत्ती १६:२७; १कुरि. ३:१२-१५, कुलु ३:२४ ।

२२:१३ **''अल्फा और ओमेगा''**-१:८ और २१:६ से तुलना करें । यीशु मसीह इससे ज़्यादा और दूसरे शब्दों में नहीं कह सकते थे कि वह सृजनहार हैं । वह सृष्टिकर्ता के किसी नाम को नहीं अपना सकते थे, जो उनका खुद का नहीं था । फिलि २:६; लूका. २:११ ।

**''शुरूआत और अंत''** -२१:६ ।

**''पहला और आखिरी''** -१:१७ ।

२२:१४ **''आशीषित''** - इस किताब में ये शब्द आठ बार आते हैं- यहाँ पद ७,१:३ (दोबारा); १४:३; १६:१५;१९:९, २०:६।

१४ पहला और आखिरी हूँ। **आशीषित** वे हैं, जो अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाते हैं, ताकि उन्हें जीवन के पेड
१५ के पास और शहर में जाने के लिए द्वार में से जाने का हक मिले। **कुत्ते**, जादूगर, व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्ति पूजनेवाले और
१६ जो झूठ से प्यार करते और झूठी बातें बनाते हैं, वे बाहर हैं। **मुझ** यीशु ने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा है ताकि
१७ कलीसियाओं में वह गवाही दे सके। मैं दाऊद का मूल और चमकता हुआ सुबह का तारा हूँ। **और** पवित्र आत्मा
और दुल्हन कहती है, ''आओ! जो सुनता है वह कहता है, 'आओ', और जो प्यासा है वह भी आए। जो ऐसा
१८ करेगा, वह जीवन का पानी मुफ्त में पीए। **हर** एक जो इस किताब की भविष्यद्वाणी को सुनता है उसके लिए
मेरी यह गवाही है: अगर कोई इन बातों में जोड़ेगा, तो परमेश्वर इस किताब में लिखी विपत्तियों को उसके लिए
१९ बढ़ाएगा। **जो** इस किताब की भविष्यद्वाणी में से कुछ निकाले, परमेश्वर जीवन की किताब, पवित्र शहर और
२० इस किताब में लिखी बातों में से भी उसका नाम निकाल देंगे। **जो** इन बातों की गवाही देते हैं, कहते हैं, ''मै
२१ ज़रूर जल्दी आनेवाला हूँ।'' ऐसा ही हो। हाँ, प्रभु यीशु जल्दी आईए। **प्रभु** यीशु मसीह की शर्तहीन असीमित कृपा
तुम सबके साथ बनी रहे। ऐसा ही हो।

---

**''जो हुकूम (आज्ञा) मानते ही''**-१ यूहन्ना २:३-६, याकूब २:१४-२६ से तुलना करें । प्रेरित २२:१० के नोट्स देखें ।

२२:१५ **''जो हुकुम (आज्ञा मानते हैं)''**-इसका मतलब यह नहीं है कि फाटक से बाहर.... और मौका मिलने पर भीतर सरक जाना। हमें पहले ही से बताया गया है कि ऐसे लोग कहाँ होंगे -२१:८ ।

**''व्यभिचारी''** -२१:८ के नोट्स देखें ।

२२:१६ **''मेरा दूत (संदेशवाहक)''** - १:१ ।

**''दाऊद का मूल''** - ५:५; मत्ती १:१; रोमि १:३; यशा ११:१०; भजन ११०:१ ।

**''सुबह का तारा''** - २:२८; गिनती २४:१७ से तुलना करें ।

२२:१७ बाईबल का यह आखिरी निमंत्रण बड़ा है । यह बाईबल में दिए गए तमाम वायदों में से एक है । प्रभु का आत्मा सभी को निमंत्रण देता है । गिरजा (चर्च) भी यही निमंत्रण दे रहा है। सुननेवाले हर व्यक्ति ने दूसरों के सामने इसे दोहराना चाहिए।

**''प्यासा''** - यशा ५५:१; मत्ती ५:६ ।

**''जो कोई''** - यूहन्ना ३:१६,३६; ७:३७; १ तिमो २:४; २ पत ३:६; यशा ५५:७ यहेज १८:३२ ।

**''ज़िन्दगी का पानी''**- पद १; २१:२६, यूहन्ना ४:१४ । यह जल स्वयं सृजनहार परमेश्वर हैं (यिर्म २:१३; १७:१३) । वह सभी को नेवता देते हैं कि लोग आकर उनसे पीएँ और हमेशा की ज़िन्दगी पाएँ ।

**''मुफ्त में''** रोमि ५:१६,१७,६:२३; इफि २:८,९ ।

२२:१८,१९ बाईबल की आखिरी चेतावनी बड़ी गंभीर है । देखें कि यह किताब कितनी आवश्यक है । यहाँ शब्दों पर ज़ोर है । जानबूझकर कुछ जोड़ना या निकालना प्रभु की दी गयी सच्चाई में फेरबदल करना है । व्यवस्था १२:३२; नीति ३०:६। बेशक यह जानबूझकर की जानेवाली गलतियाँ । शब्दों के जरिए ही से सच्चाई को हम तक पहुँचाया गया है । ये शब्द बहुत मायने रखते हैं । तुलना करें व्यवस्था ४:२; १२:३२, भजन १२:६; १९:१६०; नीति ३०:६, यिर्म १:६; १५:१९ । तमाम नयी भाषाओं में सच्चाई का संदेश छपना चाहिए, लेकिन यूनानी और इब्रानी भाषाओं के सही शब्दों में ही । यह आत्मा प्रेरित चेतावनी हमें गलती करने से बचा सकती है ।

२२:२० यह बाईबल का आखिरी सिद्धांत है । न्यू टेस्टामेन्ट की हर २५ आयतों (पदों) में इसकी तरफ इशारा है । यीशु अचानक एक विजेता के रूप में आएंगे । इसी आखिरी अध्याय में यह बात तीन बार आयी है ।

**''यीशु जी आइए''**- शुरू से आखिर तक यह यीशु के लोगों की कामना है और यहाँ आखिरी प्रार्थना के रूप में है । हमारी सारी आशा उन्हीं में है । हम उन्हीं की शान देखना माँगते हैं ।

२२:२१ यीशु मसीह की शर्तहीन कृपा दुष्टता और मौत पर जीत दिलाती है । यह संभव करती है कि लोग जग के स्वामी के बनें और उन्हें जो वायदे मिले हैं उनको हासिल करें ।

**''आमेन''**- १:६ । हम सभी को मुँह से कहना चाहिए कि ऐसा हो -सभी बातें शब्द-ब-शब्द पूरी हो । आशीषित हैं वे लोग जो पूरे मन से प्रभु की सभी कही हुयी बातों से सहमत हो ।